

रोटरी समाचार

July 2018



मिलिए रोई के नए
अध्यक्ष बेरी रेसिन और
उनकी पत्नी एस्थर से।

अगले वर्ष की तैयारी



चेन्नई में, रोटरी न्यूज ट्रस्ट की एक बैठक में आरआईडी सी भास्कर के साथ नए गवर्नर गण।

चक्र के विश्वनाथन

विषयसूची

12 मुझे बेरी बुलाएँ

नए रोई अध्यक्ष बेरी रेसिन की एक प्रोफाइल।

22 जहाँ महिलाओं को पंख दिए जाते हैं

जज स्वाति चव्हाण के साथ एक साक्षात्कार,
जो महिलाओं के आर्थिक उद्धार के लिए
प्रभावी रूप से कार्य कर रही है।

30 रोटरी संपादकों की बैठक इवेंसटन

रोटरी वर्ल्ड मैगज़ीन प्रेस की इवेंसटन में
आयोजित हुई द्विवार्षिक बैठक का सारांश।

36 स्कूल छोड़ देने वाली

लड़कियों के लिए दूसरा मौका

रोटरी क्लब अंकलेश्वर ऐसी लड़कियों और युवा
महिलाओं की तलाश के एक अभियान पर है
जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया था और वे सुनिश्चित करते
हैं कि वे उनकी बोर्ड परीक्षाओं में शामिल हों।

44 90 दशक के सुखद

अहसास वाले अतीत की स्मृति

मद्रास के रोटरी क्लब के सदस्यों ने जब
अपने क्लब की 90वीं सालगिरह मनाई
तो वे सब अतीत की यादों में पहुँच गए।

56 मोमबत्तियों से सौर लैंप की

ओर आया एक जनजाती गांव

बेंगलुरु के रोटेरियन बिजली से विहीन एक
गाँव को सौर लैंपों से रोशन करते हैं।

64 भरतनाट्यम शरीर, मन

एवं आत्मा का मिलन

दक्षिण के प्राचीन, जीवंत शास्त्रीय
नृत्य शैली की आंतरिक सुन्दरता।

70 कार्यस्थल में तंदरुस्ती

काम करने वाले पेशेवरों के लिए एक फिटनेस रूटीन
और उचित भोजन करने के बारे में एक गाइड।



कवर पर: नासाउ में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय
अध्यक्ष बेरी रेसिन और उनकी पत्नी एस्थर।

चित्र : एलिस हेन्सन, द रोटेरियन।

पत्रकारिता इसके सर्वोत्तम स्तर पर

रोटरी समाचार में महीने दर महीने वह पत्रकारिता ही है जो अपने सर्वोत्तम स्तर पर है। अप्रैल में रेणुताई, मई में गरिमा के साथ शिक्षा और जून अंक में RIPE बेरी रेसिन थे कवर पेज पर, भारत को लेकर उत्साही विभिन्न विषयों और कार्यक्रमों पर शानदार फोटोग्राफी और रिपोर्टिंग मैगजीन को पठनीय बनाती है। दो लेख वास्तव में प्रभावशाली थे - चक एक संपूर्ण व्यक्तित्व और छोटा शहर, बड़ी परियोजनाएं।

सौमित्रा चक्रवर्ती

रोटरी क्लब टोलीगुंगे

मंडल 3291

बनाने के लिए मैं उन मंडलों से और अधिक खबरें देखना चाहूंगा।

जून अंक में, ऑड्री तुश्क की किताब औरंगजेब: द मेन एंड द मिथ की समीक्षा देखकर मैं सुखद रूप से चकित था। संध्या राव ने इस अध्ययनशील किताब के साथ न्याय किया है। उन्हें मेरी शुभकामनाएं। मुझे टीसीए श्रीनिवास राघवन के नियमित लेख पढ़ना पसंद है और पिछला लेख भी हमेशा की तरह शानदार था। अच्छा कार्य जारी रखिये।

पीडीजी ललित

सुरजन - मंडल 3261

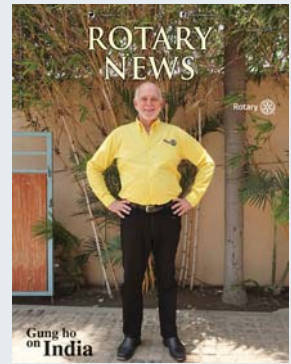
के साथ सम्पादकीय और रोटरी की गतिविधियों पर अनेक लेख लिखती है जिससे हम सभी प्रेरित होते हैं। यह देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि क्या उन्होंने पत्रकारिता में पीएचडी की है! वह सम्पादकीय दल को अच्छी तरह संभालती है; उन्हें और उनकी टीम को सलाम, विशेषकर जयश्री को।

दीपक अग्रवाल

रोटरी क्लब सिलिगुरी मिडटाउन

मंडल 3240

समय के साथ-साथ रोटरी समाचार अति उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा की जाने वाली पत्रिका बन गई है, जिसमें अनेक रोचक और उपयोगी लेख शामिल होते हैं और जून अंक एक और 'भेदी बाण' है। पूर्व रो ई अध्यक्ष चार्ल्स सी केल्लर ने इसकी सादी भाषाशैली और उचित रिपोर्टिंग के लिए इसकी प्रशंसा की। यह बहुत ही सराहनीय है कि हमारे वरिष्ठ नेतृत्वकर्ता उचित को



उचित ही बताते हैं। उनके सन्देश में, रो ई निदेशक सी भास्कर ने टिप्पणी की, "किसी उत्सव को आडम्बरपूर्ण नहीं होना चाहिए" जो हमारे लिए अनावश्यक खर्चों से बचने की सलाह है। RIPE बेरी रेसिन के साथ साक्षात्कार वास्तव में आकर्षक है; उनका दृष्टिकोण वास्तव में व्यावहारिक है। क्लब अध्यक्षों के साथ उनका मासिक जुड़ाव सदस्यता और संस्थान को बड़ा प्रोत्साहन देगा।

के के धीर

पीडीजी - मंडल 3070

छोटे शहरों में रोटरी

जून अंक में, रोटरी क्लब रतलाम, मंडल 3040, के समर्पित और असाधारण प्रयासों पर किये गए कवरेज को पढ़कर मुझे बहुत अधिक प्रसन्नता हुई। मैं इस क्लब से अगस्त, 1973 में जुड़ा और रोटेरियनों के उस प्रतिबद्ध दल के कारण मुझे एक सदस्य से एक रोटेरियन बनने में अधिक समय नहीं लगा। जो 22 वर्ष मैंने इसके सदस्य के रूप में बिताए हैं

वो मेरी जिंदगी के कुछ सबसे अच्छे वर्षों में से एक थे। फेलोशिप और सेवा ने हमें बेहतर इंसान बनाया। मैं 20 वर्ष की आयु में क्लब से जुड़ा और मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूँ।

1995 से, जब मैं दिल्ली गया और रोटरी क्लब दिल्ली मिडटाउन से जुड़ा, मैंने हमेशा रोटेरियनों को सदस्यता, सेवा परियोजनाओं या सार्वजनिक छवि के लिए संबोधित

करते वक्त अपने गृह क्लब के बारे में बात की। रोटरी क्लब रतलाम एक शानदार क्लब है और उसका पूर्व अध्यक्ष (1983-84) और पीडीजी (1993-94) होने के नाते, समर्पित रोटेरियनों (विशेषरूप से पिता-पुत्र अंकलेसरिया की जोड़ी) के नेतृत्व में क्लब को बढ़ता देखकर मुझे गर्व महसूस होता है।

इस शानदार लेख - छोटा शहर, बड़ी परियोजनाएं - के लिए धन्यवाद

जो यह साबित करता है कि भारत में रोटरी छोटे शहरों में बहुत तेजी से बढ़ रही है क्योंकि वे शांतिपूर्ण ढंग से सुविधाओं से वंचित लोगों की सेवा करके रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करने में उसकी मदद कर रही है। यह वास्तव में स्वयं से ऊपर सेवा का मूर्त रूप है।

पीडीजी रमन भाटिया

रोटरी क्लब दिल्ली मिडटाउन

मंडल 3011

‘धुलाई’ सर्वश्रेष्ठ है

मैं रमेश भाटिया (मार्च अंक) के लेख *धोना या पोछना?* में व्यक्त किये गए विचारों से सहमत हूँ। यह वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध हो चुका है कि धोना पोछने से बेहतर होता है। भारतीय लम्बे समय से धोने के तरीके का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश, हम यूरोपीय संस्कृति से प्रभावित हैं। भारत में कई 5-सितारा होटलों के शौचालयों में धोने की व्यवस्था नहीं मिलती, इसके बावजूद भी कि वहाँ विदेशी अतिथियों के मुकाबले भारतीय अतिथि अधिक होते हैं।

चूँकि हम धुलाई प्रणाली के आदी हैं और उसके बिना स्वच्छ और सुखद महसूस नहीं करते, हमें जुगाड़ करनी पड़ती है, जैसे कि धोने के लिए उपयोग की गई मिनरल वाटर की बोतलों का इस्तेमाल करना!

प्रियदर्शिनी कनोरिया, रोई मंडल 3011

मई अंक में अच्छी तरह से संतुलित सामग्री है जो संपूर्ण रोटरी जगत और हमारी मानवीय परियोजनाओं को प्रस्तुत करती है। इसके अलावा, अंक में सामान्य रूप से शानदार लेख हैं जैसे *जीवन का नृत्य, एक आयुर्वेदिक विरोधक गोली जिसे व्यायाम कहते हैं*, और *फ्रेयरी चिमनियों के ऊपर हॉट एयर बलूनों में*। रोटरी के प्रमुख अधिकारियों के दौरे और उनके द्वारा सभी रोटेरियनों को दिए गए मार्गदर्शन को अच्छा कवरेज दिया जा रहा है। आपको सलाम और भविष्य में भी ऐसे ही और अंकों की आशा करता हूँ।

मेजर डी के ज़रेकर

रोटरी क्लब नासिक-अम्बाद - मंडल 3030

दिल का पुनर्जीवन

रोटरी क्लब कोचीन वेस्ट, मंडल 3201, वीपीएस लेकशोर हॉस्पिटल और कोची सिटी पुलिस द्वारा संचालित समेरिटन परियोजना (*अच्छे समेरिटनों का निर्माण*) दिलचस्प थी। हृदय फुफुसीय चिकित्सा के लिए बच्चों और युवाओं का प्रशिक्षण सराहनीय है। लेकिन सभी संदिग्ध हृदय गति के रुकने में, मुँह से मुँह लगाकर पुनर्जीवित करना आवश्यक नहीं होता

और यह उचित छाती संपीड़न में हस्तक्षेप कर सकता है। 3 महत्वपूर्ण कदम हैं मदद के लिए पुकार; पीड़ित को सही तरीके से लिटाकर लगातार, उचित छाती संपीड़न -100 प्रति मिनट-जब तक कि बिजली के झटके देने वाली AED (ऑटोमेटेड एक्सटर्नल डीफ़िब्रिलेटर) स्थल पर ना पहुंचे। केवल डूबने या दम घुटने से रुकने वाली हृदय गति के लिए मुँह से मुँह लगाकर सांस दी जाना आवश्यक होता है। मुंबई में, हम होली फॅमिली हॉस्पिटल की उनके ‘आई केयर प्रोजेक्ट’ में बड़ी संख्या में AED के साथ मदद कर रहे हैं और लोगों को हृदय फुफुसीय चिकित्सा के बारे में शिक्षित कर रहे हैं। इस पहल के लिए रोटरी क्लब कोचीन वेस्ट को सलाम।

डॉक्टर अक्षय मेहता

रोटरी क्लब ऑफ़ बॉम्बे एअरपोर्ट - मंडल 3141

रोई अध्यक्ष इयन रायसली का सन्देश रोचक था लेकिन यह जानना दुखद था कि दो देशों से पोलियो के 22 मामले सामने आये। रोई निदेशक और न्यासी प्रमुख के संदेश के साथ-साथ संपादकीय विचार उत्तेजक थी, साथ ही राजेंद्र के साबू द्वारा *चक - एक संपूर्ण व्यक्तित्व, आइये हम नंबरों के पीछे ना भागे: रोई निदेशक* और रोटरी गतिविधियों पर अन्य विस्तृत रिपोर्टें पढ़ने योग्य थी। सम्पादकीय दल को सलाम।

एम टी फिलिप

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

अंकों का खेल

रोटरी में सदस्यता बहुत महत्वपूर्ण है और प्रत्येक जुलाई में सभी रोटरी क्लबों में नए पदाधिकारियों की नियुक्ति और नए सदस्यों को शामिल करने की चहल-पहल भरी गतिविधि शुरू होती है।

लेकिन अक्सर नए सदस्यों को अंधाधुंध भर्ती करने में, क्लब के अधिकारी रोई द्वारा निर्धारित प्रवेश प्रक्रिया को भूल जाते हैं। रोई अध्यक्ष इयन रायसली ने व्याख्यात्मक रूप से इस प्रक्रिया को ‘सदस्यता की चोरी’ नाम दिया है बिल्कुल रोई निदेशक सी भास्कर के कथन के समान जिन्होंने रोटरी के वरिष्ठ जनों से

आंकड़ों के पीछे ना भागने का आग्रह किया है। हमें ईमानदार रोटेरियनों की आवश्यकता है जिन्हें मानवता की परवाह है और क्लब के अधिकारियों को यह समझने की आवश्यकता है।

डॉ सुदाम बासा, रोटरी क्लब भुवनेश्वर - मंडल 3262

ईमानदार रिपोर्टिंग पर संपादक के लेख में PRIP केलर को उद्धृत किये जाने के संदर्भ में, अक्सर, कार्यक्रमों की अध्यक्षता करने वाले रोटेरियन लोकप्रियता हासिल करने के लिए बढ़ा-चढ़ाकर बोलते हैं। लेकिन रशीदा भगत के संपादन में, *रोटरी समाचार* की टीम प्रकाशन से पहले तथ्यों की दो बार जाँच करती है। पिछले साल संजीत बुनकर रॉय को *चार मार्ग परीक्षण पुरस्कार* के लिए रिपोर्ट करते समय, मुझे उन्होंने तथ्यों को सत्यापित करने के लिए कई फ़ोन लगाए।

पियूष दोषी, रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

युवा खून

मैं रोई निदेशक सी भास्कर से पूर्णतः सहमत हूँ जब वह कहते हैं “सदस्यों के पीछे मत भागो।” प्रभावशाली आंकड़े दिखाने के लिए सदस्यता में की गई बढ़ोतरी के कारण पिछले कुछ वर्षों में रोटेरियनों की गुणवत्ता में कमी आई है। मेरे क्लब, 58 वर्ष पुराने रोटरी क्लब मद्रास, में 1990 के दशक के मध्य में, नए अध्यक्ष के अधिष्ठापन के दिन आठ नए सदस्यों को बिना सावधानी बरते भर्ती किया गया था; वर्ष के अंत तक उनमें से 7 छोड़कर चले गए। युवा सदस्यों को आकर्षित करने में नाकाम रहा हमारा क्लब बुरे दौर से गुजरा, और परियोजना *ऑपरेशन न्यू ब्लड* के आरंभ होने से पहले तक, क्लब में औसत आयु 65 के आसपास थी।

40-50 की आयु के सावधानी पूर्वक चुने गए सदस्य भर्ती किये गए; उन्होंने चीज़ें जल्दी सीखीं। आज हमारे क्लब की औसत आयु 45 है और इसे रोई मंडल 3232 में सबसे जीवंत क्लबों में से एक माना जाता है।

आर वी राजन

रोटरी क्लब मद्रास साउथ - मंडल 3232

Governors Council

RI Dist 2981	DG	S Piraiyon
RI Dist 2982	DG	Nirmal Prakash A
RI Dist 3000	DG	RVN Kannan
RI Dist 3011	DG	Vinay Bhatia
RI Dist 3012	DG	Subhash Jain
RI Dist 3020	DG	Guddati Viswanadh
RI Dist 3030	DG	Rajiv Sharma
RI Dist 3040	DG	Gustad Anklesaria
RI Dist 3053	DG	Priyesh Bhandari
RI Dist 3054	DG	Neeraj Sogani
RI Dist 3060	DG	Pinky Patel
RI Dist 3070	DG	Barjesh Singhal
RI Dist 3080	DG	Praveen Chander Goyal
RI Dist 3090	DG	Dr Vishwa Bandhu Dixit
RI Dist 3100	DG	Deepak Jain
RI Dist 3110	DG	Arun Kumar Jain
RI Dist 3120	DG	Stuti Agrawal
RI Dist 3131	DG	Dr Shailesh Palekar
RI Dist 3132	DG	Vishnu S Mondhe
RI Dist 3141	DG	Shashi Sharma
RI Dist 3142	DG	Dr Ashes Ganguly
RI Dist 3150	DG	Ramesh Vangala
RI Dist 3160	DG	Konidala Muni Girish
RI Dist 3170	DG	Ravikiran Janradan Kulkarni
RI Dist 3181	DG	Rohinath P
RI Dist 3182	DG	Abhinandan A Shetty
RI Dist 3190	DG	Suresh Hari S
RI Dist 3201	DG	A Venkatachalapathy
RI Dist 3202	DG	Dr EK Ummer
RI Dist 3211	DG	EK Luke
RI Dist 3212	DG	K Raja Gopalan
RI Dist 3231	DG	CR Chandra Bob
RI Dist 3232	DG	Babu Peram
RI Dist 3240	DG	Dr Sayantan Gupta
RI Dist 3250	DG	Kumar Prasad Sinha
RI Dist 3261	DG	Nikhilesh M Trivedi
RI Dist 3262	DG	Bhabani Prasad Chowdhury
RI Dist 3291	DG	Mukul Sinha

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee	Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RIDE	Dr. Bharat Pandya	RI Dist 3141
RIDE	Kamal Sanghvi	RI Dist 3250

Executive Committee Members (2018–19)

DG Rajiv Sharma	RI Dist 3030
Chair – Governors Council	
DG Pinky Patel	RI Dist 3060
Secretary – Governors Council	
DG Subhash Jain	RI Dist 3012
Secretary – Executive Committee	
DG A Venkatachalapathy	RI Dist 3201
Treasurer – Executive Committee	
DG Shashi Sharma	RI Dist 3141
Member – Advisory Committee	

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor	Senior Assistant Editor
Rasheeda Bhagat	Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
 3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road, Egmore
 Chennai 600 008, India. Phone : 044 42145666
 e-mail: rotarynews@rosaonline.org
 Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd,
 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014,
 India, and published by PT Prabhakar on behalf
 of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr,
 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008.
 Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the
 Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International
 (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or
 advertisement content. Contributions – original content – is welcome
 but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content
 can be reproduced, but with permission from RNT.



महिलाओं को समानता रोटरी के भीतर और बाहर

जयश्री और मेरे पास पहले से ही संग्रहित समाचारों की टोकरी में संकलित नए मंडल अध्यक्षों के साक्षात्कार का चयन बिना किसी क्रम के किया गया है जिन्हें हमने इस अंक में *आपके गवर्नरों से मिलिए* शीर्षक से प्रकाशित किया है। यह उल्लेखनीय है कि इन अनौपचारिक वक्तव्यों में, पांच में से चार मंडल अध्यक्षों ने अपने साक्षात्कारों में अपने क्लबों में वार्षिक कार्यकाल के दौरान सबसे अधिक जोर महिला सदस्यता बढ़ाने पर देने का निर्णय किया है। उनमें से एक - रोटरी क्लब इलाहाबाद, रो ई मंडल 3120 से स्तुति अग्रवाल - एक महिला है और दो महिला गवर्नरों में से एक है, दूसरी रोटरी क्लब बड़ौदा, रो ई मंडल 3060 से पिकी पटेल है। संयोग से, यह पहली बार है कि भारत में एक ही बैच से दो महिलाएं गवर्नर हैं। अब देखिये, स्तुति, भारत के किसी महानगर या बड़े शहर से नहीं बल्कि एक छोटे शहर से है जो भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश में स्थित है जिसे आम तौर पर महिला सशक्तिकरण के लिए नहीं जाना जाता है, और यह तो तब है जबकि, यूपी ने सबसे ज्यादा-13 महिला सांसदों को वर्तमान लोकसभा में भेजा है। उसके बाद एक और महिला, राष्ट्रीय लोक दल की, तब्बसुम हसन ने खैराना में हुए हालिया उपचुनाव के रास्ते लोकसभा में दस्तक दी है। रोटरी में, अपने मंडल में महिलाओं को आगे लाने के लिए, स्तुति के संकल्प को साधुवाद है, केवल महिलाओं की संख्या में इजाफ़ा करने के लिए ही नहीं बल्कि “यह सुनिश्चित करने के लिये भी कि महिलाएं वहां काम करती हैं, पूरी तरह से जुड़ी हुई हैं, और हमारी सेवा परियोजनाओं में बढ़ कर भाग लेती हैं।” और वह चतुराई से इवानस्टन और भारत दोनों के रोटरी के शीर्ष नेतृत्व से प्राप्त हुए निर्देशों - फ़िज़ूलखर्ची कम करने और सामुदायिक परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने, का हवाला देते हुए चट से जोड़ती है: “इसीलिये महिलाएं; क्योंकि कीमत के प्रति वे हमेशा जागरूक रहती हैं।”

रोटरी समाचार में, ऐसी परियोजनाओं को प्रधानता से छापने में सदैव प्रसन्नता हुई है जो महिलाओं के शिक्षा, कल्याण और उससे भी ऊपर, उनके रोजगार बढ़ाने के प्रशिक्षण से सम्बंधित हो। इस अंक में भी, हम लीक से हट कर

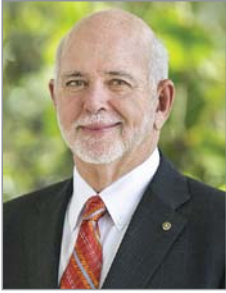
की गई एक ऐसी ही पहल की रिपोर्ट ले कर आये हैं; पुणे में फैमिली कोर्ट की न्यायाधीश, स्वाती चवाण ने, जो संयोग से रोटरी पीस स्कॉलर भी हैं, खुद को आत्मनिर्भर बनाने की परियोजना, ‘स्वयं सिद्ध’ की शुरुआत की है जो पुरुषों द्वारा परित्यक्त या तलाकशुदा महिलाओं को प्रशिक्षण दे रही है जिन्हें अदालतों द्वारा निर्धारित गुजारा भत्ता नहीं मिलने से उनकी स्थिति दयनीय हो गई है।

पारिवारिक न्यायालय और कुछ एनजीओ के साथ मिल कर रो ई मण्डल 3131 ने, ऐसी कई महिलाओं को प्रवीण किया है, जिन्होंने अपना खुद का उद्यम शुरू कर दिया है और अच्छी आय कमा रही हैं। इस पहल के लिए रोटेरियन वैशाली भागवत को धन्यवाद है। गुजरात में, पीडीजी अशोक पंजवानी और रोटरी क्लब अंकलेश्वर की पूर्व अध्यक्ष उनकी पत्नी मीरा को इस पहल के लिए धन्यवाद, इस औद्योगिक शहर में, जहां लड़कियों और युवा महिलाओं को विभिन्न कारणों से स्कूल छोड़ना पड़ा, बोर्ड परीक्षा देने और यदि वे चाहें तो उच्च शिक्षा जारी रखने के लिए, उन्हें ‘प्रथम’ शिक्षकों द्वारा विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिसका खर्च क्लब द्वारा वहन किया जाता है। एक नए आत्मविश्वास से भरी कुछ लड़कियों ने कंप्यूटर कक्षा का भी चयन किया है, और क्लब इस परियोजना को जारी रखेगा। एक अन्य लेख में, हम आपको रो ई मंडल 3070 के, रोटरी क्लब मंडी द्वारा चलाई जा रही एक परियोजना के बारे में बता रहे हैं, जो बायोडिग्रेडेबल प्लेटों के उपयोग पर जागरूकता फैला रही है, जिसका उद्देश्य हिमाचल प्रदेश में मण्डी के निकट घड़वासा गांव की महिलाओं की मदद करना है, ताकि वे सभ्य जीवन यापन कर सकें, इसके लिए गांव में पत्तों से प्लेट बनाने का एक सयंत्र लगाया जा रहा है।

जैसा कहा गया है, ‘जल संरक्षण में महर बूँद से मदद मिलती है’, हर एक परियोजना चाहे कितनी भी छोटी क्यों ना हो, वो महिलाओं की शैक्षिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक रूप से मदद करने और उनमें आत्मविश्वास और आत्म सम्मान की भावना को बढ़ावा देने के साथ - साथ न केवल आपके समुदाय और देश की सहायता करेगी, बल्कि रोटरी को भी एक समृद्ध और सम्मानीय संगठन बनाएगी।

Rashida Bhagat

रशीदा भगत



दृष्टि को प्रेरित करें एक बेहतर दुनिया के लिए

प्रिय साथी रोटेरियनों,

एक वर्ष पूर्व, आपके रोटरी अंतर्राष्ट्रीय निदेशक मंडल ने एक नए परिकल्पना कथन को अपनाया, जो हमारे संस्थान के लिए हमारी महत्वाकांक्षाओं और इसके भविष्य को प्रतिबिंबित करता है। वह कथन है, एक साथ, हम ऐसी दुनिया देखते हैं जहाँ लोग दुनिया भर में, हमारे समुदायों में, और स्वयं में स्थायी परिवर्तन लाने के लिए एक होकर कार्य करते हैं।

इस सरल से वाक्य में उन अधिकांश चीज़ों का सार है जो रोटरी के लिए आवश्यक है। हम एक साथ हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि एक साथ हम बहुत मजबूत हैं जो हम अकेले रहकर कभी नहीं हो सकते। हम कार्य करते हैं, क्योंकि हम सपने देखने वाले नहीं हैं बल्कि कार्य करने वाले हैं। हम दुनियाभर में और हमारे समुदायों में ऐसा स्थायी परिवर्तन लाने के लिए कार्य करते हैं जो हमारे शामिल ना होने पर भी टिके रहे। और शायद इन सबसे भी जरूरी, हम स्वयं में परिवर्तन लाने के लिए कार्य करते हैं - केवल हमारे आसपास एक बेहतर दुनिया का निर्माण करने के लिए ही नहीं, बल्कि स्वयं में एक बेहतर इन्सान बनने के लिए।

फ्रेंच लेखक एंटोइन डी सैंट-एक्जुपरी ने कहा था: “यदि आप एक नाव बनाना चाहते हैं, तो शुरुआत लकड़ी इकट्ठा करने, तख्त काटने, या काम बांटने से मत कीजिये। अपने कर्मचारियों के अंदर विशाल एवं अनंत समुद्र की लालसा को जगाकर शुरुआत कीजिये।” हम में से हर एक रोटरी में है क्योंकि हमारे अंदर एक लालसा है - एक प्रभाव लाने की, एक परिवर्तन लाने की, स्वयं से ऊपर किसी

चीज़ का हिस्सा बनने की। वो इच्छा, एक बेहतर दुनिया की परिकल्पना और उसे बनाने में हमारी भूमिका ही है जो हमें रोटरी में ले आती है। यही चीज़ हमें सदस्य बनाती है, यही हमें सेवा करने के लिए प्रेरित करती है, और इसके कारण ही मैंने इस वर्ष की रोटरी थीम - *प्रेरणा बनिए* - का चुनाव किया।

मैं चाहता हूँ कि परिवर्तनकारी प्रभावों के साथ काम करके रोटरी हमारे समुदायों के लिए *प्रेरणा बने*। यह समय उन अवरोधों को हटाकर आगे बढ़ने का है जो हमें पीछे खींच रहे हैं। चलिए हमारे क्लबों में समायोजन को या विभिन्न जरूरतों की पूर्ती करने वाले नए क्लबों की शुरुआत को आसान बनाएं। चलिए रोटारेक्ट को मजबूत बनाने एवं रोटारेक्ट क्लबों के रोटरी में पारगमन को सुगम बनाने के लिए कार्य करें। चलिए सभी रोटेरियनों को उन तरीकों में काम करने की आजादी दें जो उन्हें सर्वश्रेष्ठ लगते हों, ताकि सभी रोटेरियनों को रोटरी सदस्यता में स्थायी महत्व मिल जाएं।

सही अर्थों में संवहनीय सेवा, जिस प्रकार की सेवा का हम रोटरी में प्रयास करते हैं, का मतलब है जो भी हम करते हैं उसे एक बड़ी वैश्विक पारिस्थितिकी के हिस्से के रूप में देखना। इस वर्ष, मैं आप सभी से हमारे काम को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करके संवहनीय सेवा हेतु *प्रेरणा बनने* के लिए कहता हूँ। हमारे सभी छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में पर्यावरण अहम् भूमिका निभाता है, और वह भूमिका सिर्फ बड़ी होती जा रही है क्योंकि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव फैल रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम पर्यावरण को उन छह क्षेत्रों से किसी प्रकार से अलग ना देखें। साफ़ हवा, पानी, और ज़मीन स्वस्थ समुदायों के लिए आवश्यक है - और उस बेहतर, निरोगी भविष्य के लिए आवश्यक है जिसके लिए हम प्रयत्न करते हैं।

प्रेरणा बनिए - और एक साथ मिलकर हम दुनिया को प्रेरित कर सकते हैं, और हम करेंगे।

बेरी रेसिन

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल



प्रेरणा बनिए

प्रिय रोटेरियनों,

मैं आप सभी को एक बहुत ही खुशहाल और सार्थक रोटेरी वर्ष 2018-19 के लिए शुभकामनाएं देकर और आपका अभिनन्दन करने के साथ शुरुआत करता हूँ।

हमें इस उत्साह से भरे नव वर्ष का आगाज़ करना चाहिए और स्वयं से ऊपर सेवा के हमारे आदर्श वाक्य द्वारा साथी रोटेरियनों एवं समुदाय के नेतृत्वकर्ताओं को प्रेरित करना चाहिए। हमारे अध्यक्ष बैरी रेसिन ने रोटेरी नेतृत्वकर्ताओं से क्लब अध्यक्षों, और अपने मंडलों के रोटेरियनों को परिवर्तन लाने; अधिक कार्य करने; और उनके स्वयं के सामर्थ्य तक पहुँचने हेतु प्रेरित करने के लिए कहा। “यह हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें प्रेरित करें और उनकी मदद करें ताकि वे आगे का रास्ता स्वयं ढूँढ़ सकें।” हम में से प्रत्येक को यह पता है कि हम अपने दोस्तों, व्यापारिक सहयोगियों एवं पड़ोसियों को रोटेरी में शामिल करके सदस्यता वृद्धि के लिए कार्य करते हैं। रोटेरी की शक्ति इसके समर्पित सदस्य है। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमें हमारे सदस्यों को और अधिक करने हेतु प्रेरित करना होगा। यह हम सभी रोटेरियनों का कर्तव्य है कि हम हमारे क्लबों की महत्वपूर्ण परियोजनाओं में शामिल हो और समुदाय के लिए की जाने वाली सेवाओं पर गर्व करें।

महान नेतृत्वकर्ता कैसे दूसरों को उनके लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध होने के लिए प्रेरित करते हैं? उनका केवल आकर्षक व्यक्तित्व ही नहीं होता, या वे केवल शक्तिशाली प्रेरक वार्ता ही नहीं करते। बल्कि वे अपनी परिकल्पना को इतने ज़ोरदार तरीके से प्रकट करते हैं कि दूसरे व्यक्ति उसे स्वयं की परिकल्पना के रूप में अपना लेते हैं।

साठ के दशक की शुरुआत में, जब यूएस अंतरिक्ष कार्यक्रम इसकी प्रारंभिक अवस्था में था, राष्ट्रपति कैनेडी ने चाँद पर एक व्यक्ति को भेजने को लेकर अपनी परिकल्पना निर्धारित की थी, और अमेरिकी लोगों से कहा था “हम इसे कर सकते हैं!” उन्होंने इसे इतने दृढ़ विश्वास के साथ कहा था कि अमेरिकियों ने इस पर भरोसा कर लिया, और स्वयं को इस कार्य को पूर्ण करने

हेतु समर्पित कर दिया। एक दशक से भी कम समय में, पहला इन्सान - नील आर्मस्ट्रांग - चन्द्रमा पर गया।

महात्मा गाँधी ने कहा था, “वो परिवर्तन बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।” महात्मा गाँधी के जीवन के हर क्षण प्रेरणादायक हैं। उनके बचपन में - ‘हरिश्चंद्र’ पर आधारित नाट्य सत्य बोलने के लिए उनकी प्रेरणा बना।

ली ईकोक्का ने डूबती हुई क्राइस्लर कारपोरेशन के सीईओ का पदभार संभाला और कहा, “हम इस कंपनी को सफल बनाने जा रहे हैं!” अपने स्पष्ट उद्देश्य, एक कार्य योजना और उनके दृढ़ निश्चय की ताकत के साथ, उन्होंने अमेरिकी सरकार को पर्याप्त समर्थन प्रदान करने हेतु इस तरह प्रेरित किया कि उन्हें किसी भी निजी कंपनी को मिलने वाला अब तक का सबसे बड़ा ऋण प्राप्त हुआ। उसके बाद उन्होंने क्राइस्लर के हजारों कर्मचारियों को पर्याप्त तरीके से प्रेरित करके कंपनी को समय से पहले ही ऋण चुकाने के सक्षम बनाया। किसी भी नेतृत्वकर्ता के लिए यही सूत्र है - स्पष्ट उद्देश्य, एक व्यावहारिक कार्य योजना, और मजबूत दृढ़ निश्चय।

आप जिस चीज़ पर भी भरोसा करते हैं उससे प्रेरित करें।

नेतृत्व करके प्रेरित करें।

सुनकर प्रेरित करें।

मार्ग बदलने के साहस द्वारा प्रेरित करें।

अपनी अखंडता और ईमानदारी से प्रेरित करें।

श्रेय साझा करके प्रेरित करें।

सामूहिक कार्य द्वारा प्रेरित करें।

रोटेरी की सफलता की गाथाओं को चिन्हांकित करके प्रेरित करें।

अच्छे कार्य का उल्लेख करके प्रेरित करें।

प्रेरणा बनिए - और एक साथ मिलकर हम दुनिया को प्रेरित कर सकते हैं, और करेंगे।

C. Banerjee

सी भास्कर

निदेशक, रोटेरी इंटरनेशनल

District Wise TRF Contributions as on May 2018

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	61,156	5,053	0	0	66,209	473	10.9%
2982	89,391	7,758	2,725	0	99,873	528	19.5%
3000	126,435	25,252	402,227	72,677	626,590	2198	43.5%
3011	189,214	1,982	216,298	22,977	430,470	558	18.4%
3012	59,448	6,923	112,590	3,016	181,977	299	8.5%
3020	100,322	25,118	49,950	52,478	227,869	330	7.7%
3030	12,331	22,924	1,050	0	36,305	59	1.2%
3040	16,097	93	54,117	77	70,383	73	3.4%
3053	43,652	78	22,129	25,000	90,859	69	2.4%
3054	109,168	203	315,368	26,000	450,739	70	1.2%
3060	210,031	1,749	263,544	59,538	534,861	1425	37.4%
3070	63,908	198	25,794	1,084	90,985	377	12.7%
3080	158,816	19,351	21,178	92	199,437	240	7.4%
3090	608	0	2,500	0	3,108	3	0.1%
3100*	14,929	0	30	0	14,960	56	3.5%
3110	88,657	3,801	66,931	0	159,388	221	5.8%
3120	98,238	508	50,231	0	148,977	156	5.3%
3131	513,549	11,711	436,773	91,399	1,053,431	1796	35.3%
3132	111,665	1,606	7,875	16,000	137,145	339	7.8%
3141	732,738	28,743	813,300	138,001	1,712,782	1497	29.4%
3142	409,488	18,843	788	(1,000)	428,118	940	34.8%
3150	58,308	12,557	44,750	63,000	178,615	357	10.0%
3160	147,221	1,000	0	16,673	164,894	224	9.6%
3170	84,052	8,300	26,802	0	119,154	440	8.2%
3181	94,449	1,091	0	78	95,618	718	23.7%
3182	82,688	205	40,126	0	123,019	752	23.9%
3190	171,928	59,447	293,717	24,335	549,428	110	2.2%
3201	359,142	18,063	218,827	5,323	601,356	375	7.3%
3202	55,632	16,934	0	2,773	75,339	128	2.6%
3211	200,543	1,100	0	150,392	352,035	223	5.2%
3212	294,123	64,324	32,500	2,000	392,947	656	17.7%
3231	133,393	28,113	188,553	80,914	430,972	96	3.8%
3232	484,681	36,202	163,330	20,300	704,513	545	14.8%
3240	107,706	5,257	0	8,367	121,330	549	18.8%
3250	151,565	214	21,143	11,000	183,922	239	6.8%
3261	64,412	115	46,593	1,000	112,121	174	7.4%
3262	79,521	1,757	28,903	24,864	135,045	298	9.1%
3291	74,282	26,790	109,739	120,794	331,606	123	3.2%
India Total	5,853,486	463,362	4,080,381	1,039,152	11,436,380	17714	13.0%
3220 Sri Lanka	126,428	10,452	12,038	1,217	150,135	601	31.5%
3271 Pakistan	39,401	70,957	11,752	0	122,110	83	5.8%
3272 Pakistan	34,009	3,201	0	3,000	40,210	64	2.3%
3281 Bangladesh	421,353	15,206	385,966	87,037	909,562	742	13.2%
3282 Bangladesh	133,039	12,233	0	3,000	148,273	613	16.3%
3292 Nepal	160,267	27,814	704,104	0	892,185	665	15.2%
South Asia Total	6,767,983	603,225	5,194,240	1,133,406	13,698,854	20482	13.0%
World Total	109,910,268	31,359,856	17,150,234	23,050,514	181,470,871		

* Non-districted

Source: RI South Asia Office



TRADITIONAL CRAFT

The german kitchen.
Since 1898.

Head Office and Showroom:

A- 248, Mahipalpur Extension, NH-8,
Delhi-Gurgaon Road, New Delhi-110037

[T] +91-11-46102000 [E] info@hacker-kitchens.com

Häcker
kitchen.germanMade.

www.haecker-india.com
www.haecker-kuechen.com

AHMEDABAD BANGALURU CHENNAI COIMBATORE DELHI
9879538977 9740999350 9442081111 9500210555 9313134488

HYDERABAD INDORE JAIPUR KOCHI LUDHIANA MUMBAI MANGALURU THRISSUR
9700058285 9425803599 9414058718 9895058285 9815048222 9322987229 7899119955 7025991000

मुझे बेरी बुलाएँ

डयाना शॉकबर्ग



रोटरी के नए अध्यक्ष, बेरी रेसिन, बहामियन सौम्यता और दृढ़ नेतृत्व दोनों के बीच पूर्ण संतुलन रखते हैं।



नासौ की तटीय रेखा से मीलौ दूर, रोटरी इंटरनेशनल के 2018-19 के अध्यक्ष, बेरी रेसिन, ऊपर नीचे डोलते बेड़े

रैट बैट की कमान को संतुलित रखते हैं। यहां विशाल जहाजों की भीड़ नहीं हैं, ना ही शोर करते जेट स्की, केवल कभी-कभार गुजरती छोटी नाव की और पानी पर चापू के पड़ने की आवाज सुनाई देती है। नीचे फ़िरोज़ी समुद्र में, विशाल कछुए समुद्र तल पर इधर उधर फिसल रहे हैं।

रेसिन कहते हैं, “मेरे लिए समुद्र आजादी है, यानी इसकी शांति। जब मैं समुद्र पर निकलता हूँ, तो सब कुछ विलुप्त होता जाता है। लगता है कि आप और यह संसार एक हैं, और अब गलत कुछ नहीं हो सकता।”

थोड़ी देर पहले बूँदा-बांदी हो रही थी, लेकिन अब दिसंबर का मद्धिम सूरज बाहर निकलने के लिए बेचैन है। अचानक रैट बैट के बगल से गुजरने वाले जहाज की लहरों से हिचकोले खाता है। लेकिन निर्भीक रेसिन पूरी तरह से संतुलित, क्षितिज की ओर तैरते हुए नीले आकाश को एकटक देख रहे हैं।

बात 12 जनवरी 2010 दोपहर की है, रेसिन और उनकी पत्नी एस्थर बहामास की राजधानी नासौ में अपने घर पर थे, जब 550 मील दूर स्थित हेटी को 7.0 तीव्रता के भूकंप ने झकझोर दिया था। इसके कुछ ही देर बाद, रेसिन को जमैका से एरोल अल्बर्गा ने फोन किया। उस समय, अल्बर्गा मण्डल 7020 के गवर्नर थे, जिसमें बहामा, जमैका और हेटी के साथ वेस्टइंडीज के अन्य कई द्वीप राष्ट्र शामिल थे।

मंडल के पूर्व गवर्नर और नासौ के प्रसिद्ध डॉक्टर्स अस्पताल के अध्यक्ष अल्बर्गा ने रेसिन को भूकंप के बारे में बताया और उन्हें रोटरी के राहत प्रयासों का नेतृत्व करने के लिए कहा। रेसिन ने इस क्षेत्र के अन्य रोटरी नेताओं को बुलाया था और बाकी शाम उन्होंने अपने कमरे में चहलकदमी करते हुए बिताई। कमरे के कोने में रखे टेलीविजन पर खंडहर में तब्दील हुए हेटी की तस्वीरें प्रसारित हो रही थीं - और तभी, स्क्रीन के नीचे स्कॉलिंग में, आपातकालीन चेतावनी आई जिस पर रेसिन की नज़र पड़ी : सुनामी बहामास की ओर बढ़ सकती है, यह भूकंपीय समुद्री लहर इतनी भयानक थी कि इसमें पूरे देश को साफ़ करने की क्षमता थी।



रेसिन को कुत्तों और बागबानी से प्यार है। अपने परिवार की संपत्ति पर वह आम, एवोकैडो, गुवावा और विविध फूलों को उगाते हैं।

रेसिन और उनकी पत्नी अपनी दूसरी मंजिल की बालकनी में जा कर और इंतजार करने लगे। रात में, जब आप समुद्र की ओर देखते हैं, तो रोशनी समुद्र के किनारे तक फैली हुई नज़र आती है, और उसके बाद सब कुछ स्याह दिखता है। रेसिन को सैन डिएगो में अंतर्राष्ट्रीय असेंबली में जनवरी में दिए गए अपने एक प्रभावशाली भाषण में कहा याद आया। “मैंने उधर देखा जहां रोशनी खत्म हो गई थी और कालिमा शुरू हो गई, और मैंने अंधेरे

को अपनी ओर बढ़ने और प्रकाश को निगलने का इंतजार किया।”

सौभाग्य से, सुनामी नहीं आई, और रेसिन काम पर लौट गए। अगले कुछ दिनों और हफ्तों में, रिचर्ड मॅकबे, एक अन्य पूर्व मण्डलाध्यक्ष, रोटरी की दैनिक गतिविधियों का नेतृत्व करते थे, रेसिन ने उनके साथ दुनिया भर के रोटेरियनों से दान द्वारा वित्त पोषित रोटरी फाउंडेशन में दीर्घकालीन वसूली के प्रयासों का समन्वय किया। उन्होंने प्रत्येक विवरण की जानकारी

मेरे लिए समुद्र आजादी है, यानी इसकी शांति। जब मैं समुद्र पर निकलता हूँ, तो सब कुछ विलुप्त होता जाता है। लगता है कि आप और यह संसार एक हैं, और अब गलत कुछ नहीं हो सकता।

के लिए 132-पेज की एक स्प्रेडशीट बनाई: कितना पैसा उपलब्ध था, कितना खर्च किया गया था, कौन सा रोटरी क्लब किस पहल का प्रभारी था। भूकंप के एक साल बाद हुए “मंडल सम्मेलन में, बेरी ने प्रत्येक परियोजना में खर्च किये गए डॉलर का हिसाब बताया। रोटरी क्लब ऑफ़ ईस्ट नासौ, रेसिन के क्लब के पूर्व अध्यक्ष, लिंडसे कैनसीनो कहते हैं, उन्होंने इस आपदा वसूली खाते की एक-एक पाई का हिसाब मिला दिया। मैं मंत्रमुग्ध हो गया।”

भूकंप के तुरंत बाद, रेसिन ने, एक हेटीयन डॉक्टर और रोटेरियन, क्लॉड सुरेना के साथ काम किया, जिन्होंने पोर्ट-औ-प्रिंस के बाहर स्थित अपने घर को एक अस्थायी आश्रय और अस्पताल में तब्दील कर दिया था। वहां, सुरेना ने 100 से अधिक विस्थापितों की देखभाल की। द्वीप पर कई जगहों पर हजारों लोग मारे गए थे और हजारों ही घायल हुए थे। हेटी के तत्कालीन अध्यक्ष, रेने प्रेवल के आदेश पर, जिन्होंने बाद में देश के निजी और सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्रों की वसूली को देखा, हर रात, सुरेना फोन पर रेसिन और उनकी टीम को दवा और अन्य सामान की जानकारी देती जिसकी उन्हें तत्काल आवश्यकता थी। फिर, हर सुबह, एक निजी विमान आवश्यक वस्तुओं के साथ नासौ से रवाना हो जाता था।

एक उड़ान पर रेसिन ने साथ जाने का फैसला किया। चार घंटों की यात्रा पर, समुद्र पर नीचे उड़ते हुए, उन्होंने बाहर फैली हुई आकाश की अनन्त नीलिमा के साथ समुद्र में छितराये हुए उष्णदेशीय हरे द्वीपों को निहार। “यह बिल्कुल स्वर्ग जैसा लग रहा था।” रेसिन ने अपने भाषण में कहा, “फिर हम हेटी के ऊपर आ गए।”

नीचे जमीन पर, उन्होंने उधड़ी हुई सड़कों को देखा, टूटकर गिर चुके घर, जहां बस्ती-मोहल्ले सब मलबे में बदल चुके थे। पोर्ट-औ-प्रिंस में उतरने में असमर्थ, राजधानी के बाहर विमान घास की पट्टी पर उतरा। सामान उतारने के बाद, विमान घर की ओर उड़ चला। रेसिन ने अपने भाषण में बताया, कुछ ही मिनट में, “हम सागर के उपर थे, उसी भव्य छटा को निहारते हुए। हेटी पीछे रह गया था, बहामा हमारे सामने की ओर था और हम वहां बीच में थे।”

“ऊपर क्षितिज को और नीचे उस समुद्र को देखकर, मुझे एहसास हुआ कि यहां और वहां के बीच कोई सीमा नहीं थी, ना ही उनके और हमारे बीच कोई रेखा, उस यंत्रणा के बीच में से हम तो बच कर निकल आए थे पर और कोई नहीं। आसानी से यह बहामा भी हो सकता था। आसानी से उन की जगह हम भी हो सकते थे।”

बेरी रेसिन हमेशा महसूस करते थे कि उन्हें चिकित्सा क्षेत्र में जाना चाहिए था। यही उनकी विरासत थी। उनके पिता, मेयर, रूखे स्वभाव वाले हड्डियों के सर्जन, इंग्लैंड से बहामा में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रॉयल एयर फोर्स सैनिकों की चिकित्सा देखभाल व निगरानी के लिए आए थे। पनडुब्बी की छुटपुट गतिविधियों को छोड़ दें, तो एक तरह से बहामास युद्ध से बाहर था। नासौ के ओक्स और विंडसर क्षेत्रों में भावी आरएफ पायलटों को उड़ान का प्रशिक्षण दिया जाता था जिसके बाद वो यूरोप में युद्ध पर लौट जाते थे।

सैनिकों का इलाज करने के उपरान्त बचा समय, डॉ रेसिन ने स्थानीय निवासियों की सेवा करने में बिताया, जिसमें समाज से निर्वासित कुछ रोगियों का इलाज भी शामिल था। इस काम ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया। युद्ध के बाद, वह वापस इंग्लैंड आ गए, लेकिन 1947 में, अपने बेटे बेरी के जन्म के कुछ ही

मैं कभी भी उच्च श्रेणी का विद्यार्थी नहीं था। शिक्षक हमेशा कहते थे कि मैंने खुद की मर्जी से दाखिला नहीं लिया था।



बाएं से : अपनी पत्नी एस्टर के साथ रेसिन रोटरी क्लब ट्रस्ट नासाऊ के एक साथी सदस्य से बातचीत करते हुए।

सप्ताह बाद, रेसिन परे अपने परिवार के साथ, नासौ के सरकारी अस्पताल में काम करने के लिए लौट आये। 1955 में, उन्होंने और उनकी पत्नी रोसेटा, एक सर्जिकल नर्स, ने अपने मरीजों की बेहतर सेवा के लिए ‘रेसिन अस्पताल’ खोला।

बेरी 10 साल के थे जब उनके पिता ने उन्हें पहला सीज़ेरियन सेक्शन देखने की इजाज़त दी थी। (आज वो कहते हैं, “मुझ पर उसका काफी असर पड़ा।”) पारिवारिक पेशे से उनका परिचय ऐसे हुआ। उनके बड़े भाई, डेविड ने फार्माकोलॉजी में विशेषज्ञता के साथ पीएचडी की, और स्वयं को स्तन दूध के गुणों की खोज में समर्पित कर दिया।

जहां तक बेरी की बात है, उन्होंने न्यूयॉर्क शहर के बाहर स्थित लॉग आइलैंड विश्वविद्यालय में प्री-मेड छात्र के रूप में दाखिला लिया - और दो साल बाद विफल हो कर बाहर आ गए। वह बताते हैं “मुझे नहीं पता कि मेरे लिए यह मुश्किल था या इसमें मेरी रूचि नहीं थी। मैं कभी भी उच्च श्रेणी का

विद्यार्थी नहीं था। शिक्षक हमेशा कहते थे कि मैंने खुद की मर्जी से दाखिला नहीं लिया था।”

रेसिन नासौ लौट आए और ब्रिटिश औपनिवेशिक होटल में छोटी मोटी नौकरी करने लगे। उन्होंने फ्रंट डेस्क से शुरुआत की - “पर वो मैं नहीं था” - लेकिन जल्द ही माइक्रोफिल्मिंग और कार्यालय की सामग्री सप्लाई करने वाले के रूप में उनकी पदावनति हो गई। एक साल बाद, रेसिन को एहसास हुआ कि उन्हें निर्णय करना था: या तो वह अपना बाकी जीवन होटल में काम करते हुए, अपने माता-पिता के साथ घर पर रह सकते थे, या वापस स्कूल जा सकते थे।

1967 में, वह मियामी चले गए, सामुदायिक कॉलेज में दाखिला लिया, और उन सभी कक्षाओं में पढ़ाई की जो उन्हें अच्छी लगीं। वे जानना यह चाहते थे कि उनके लिए सबसे उचित क्या है। “लेखांकन में दो दिन गुजारे और मुझे लगा, *यही हूँ मैं*,” वह याद करते हैं। “यह बहुत ही आसान था। खुद चल कर आया था मेरे पास।”

वहां उन्होंने व्यापार कार्यक्रम में प्रवेश लिया, अपने ग्रेड में सुधार किया, और मियामी विश्वविद्यालय में स्थानांतरित हो गए, जहां से उन्होंने लेखांकन में डिग्री हासिल की - सम्मान के साथ। बाद में, उन्होंने फ्लोरिडा विश्वविद्यालय से स्वास्थ्य और अस्पताल प्रशासन में एमबीए किया।

उधर बहामा में, कई समृद्ध दशक देखने के बाद, रेसिन अस्पताल की स्थिति बिगड़ गई थी। 1973 में बहामा को आजादी मिलने के बाद, अस्पताल के कई मरीजों सहित ब्रिटिश मूल के कई लोगों ने देश छोड़ दिया था। यही वो समय था जब रेसिन, अपने कई वर्षों के स्वास्थ्य प्रशासन के अनुभव के साथ (मुख्य रूप से मियामी के माउंट सिनाई मेडिकल सेंटर में), अपनी पहली पत्नी और उनके बच्चों, पार्कल, मिशेल और एंथनी के साथ एक बार फिर नासौ लौट आए। उनका लक्ष्य था देश में सर्वश्रेष्ठ आधुनिक चिकित्सा उपलब्ध करवाना - और उन्होंने यह करने की योजना बनाई रूपांतरित रेसिन अस्पताल में।

1980 के दशक के अंत में, डॉक्टर अस्पताल (पुनर्निर्माण के बाद इसी नाम से प्रसिद्ध) के वर्तमान अध्यक्ष चार्ल्स डिगिस, जब वह सार्वजनिक अस्पताल में शल्य चिकित्सा के रेजिडेंट थे, उनकी ड्यूटी आपातकालीन कक्ष में होती थी। “बेरी एक ऐसा अस्पताल चला रहे थे जो सार्वजनिक अस्पताल से सिर्फ एक ब्लॉक दूर था” डिगिस कहते हैं, “उनमें ये जोखिम उठाने का साहस था। सफलता की कोई आशा नहीं थी, लेकिन इस की संभावना पूरी थी कि यह प्रयास व्यर्थ होने जा रहा था, चिकित्सक भी संशय में थे।”

पीछे मुड़ कर देखते हैं, रेसिन ने उन के सामने आई चुनौतियों का जिक्र किया: मुझे माता-पिता का विरोध झेलना पड़ा था। डॉक्टरों के साथ संघर्ष किया। मेरी पत्नी के साथ मतभेद हुआ। वो कहते हैं, इन्हीं दबावों के चलते पहली शादी टूट गई। लेकिन

रोटरी के ज़रिये बने दोस्तों ने उनको संकल्प पर डटे रहने के लिए मजबूती प्रदान की। “मुझे बहामा के नागरिकों के एक समूह से समर्थन मिला जिन्होंने कहा कि ऐसा करना वास्तव में ज़रूरी था।”

कई साल पहले, रेसिन हॉलीवुड, फ्लोरिडा में अमेरिकन मेडिकॉर्प के लिए काम कर रहे थे, जब एक डॉक्टर ने उन्हें रोटरी में शामिल होने के लिए कहा। रेसिन ने साफ़ मना कर दिया, वे कहते हैं “मेरे खयाल से, वह कम से कम 70 वर्ष का रहा होगा। मैं 30 वर्ष का था। लोग कहते हैं कि नए सदस्य इसलिए शामिल नहीं हो रहे क्योंकि हम पूछते नहीं हैं। सिर्फ पूछना ही काफी नहीं होता। मुझसे तो पूछा भी गया था। लेकिन मैं शामिल ही नहीं होना चाहता था।”

रोटरी के बारे में उनका हृदय परिवर्तन नासौ आने के बाद, जॉन रॉबर्टसन से भेंट के दौरान ईस्ट नासौ क्लब के लिए चन्दा एकत्रित करने वाले एक कार्यक्रम में हुआ। रॉबर्टसन मदद कर रहे थे, साथ ही रेसिन की बेटियां पार्कल और मिशेल भी इसमें सम्मिलित थीं। दोनों में बातचीत हुई, और वार्तालाप के अंत में, रेसिन ने रॉबर्टसन का रोटरी में लंच का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। ठीक सात साल बाद, 1987 में, वह क्लब के अध्यक्ष बने। मिशेल, क्लब की पहली महिला सदस्य, 2009 में क्लब संचालन कर रही थी।

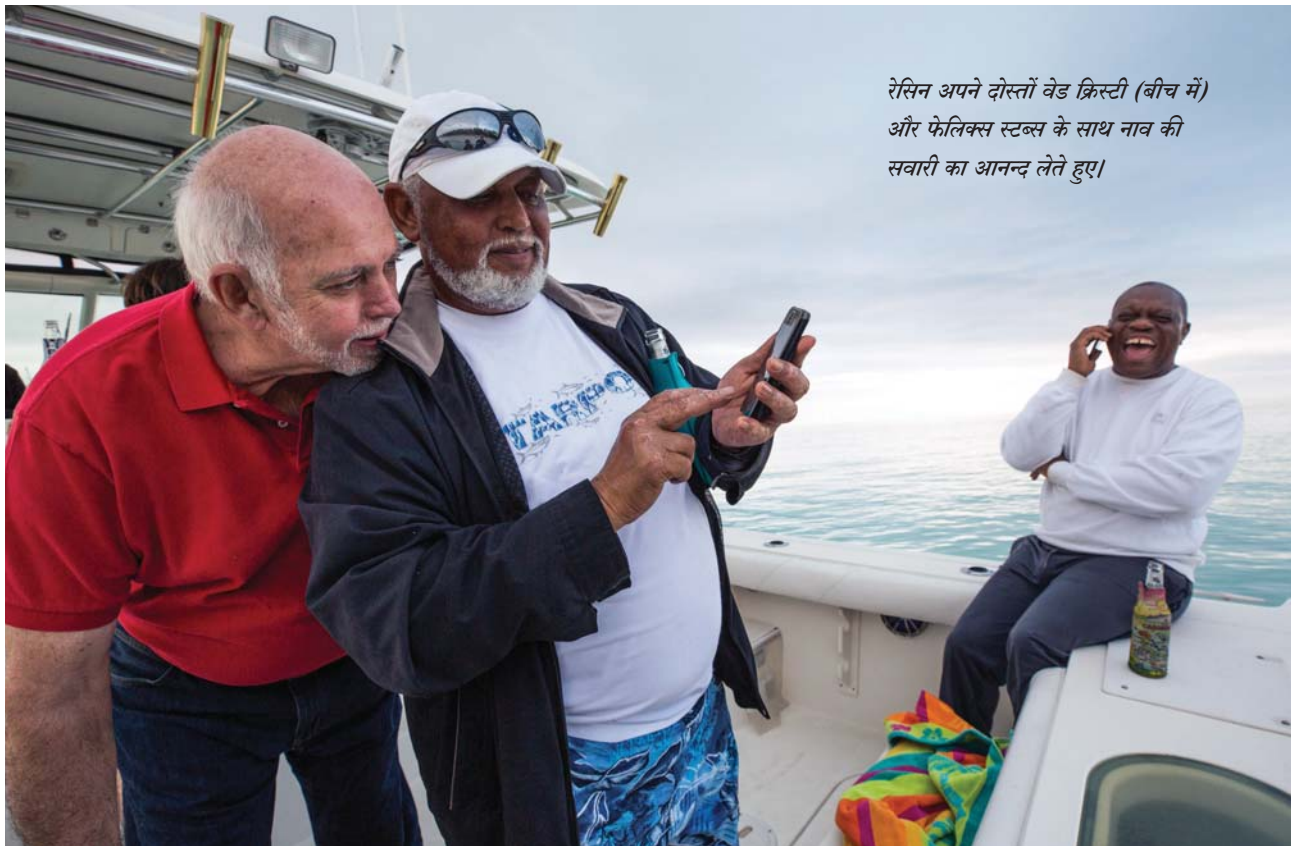
रोटरी के विभिन्न पदों से होते हुए रेसिन की उन्नति संयोग से उनकी रेसिन अस्पताल को रूपांतरित करने की योजना की परिणति के साथ हुई। 1986 में, उन्होंने डॉक्टरों का संघ बना कर मेयर रेसिन से अस्पताल खरीदा और नया अस्पताल बनाने में जुट गए। 1993 में, रेसिन के दिशा निर्देशन के तहत, अस्पताल के विस्तार कार्य में 8.5 मिलियन डॉलर खर्च किया गया, और ‘डॉक्टर अस्पताल’ आज प्रमुख कैरीबियाई अस्पतालों में से एक माना जाता है।

लेकिन रोटरी के ज़रिये बने दोस्तों ने उनको संकल्प पर डटे रहने के लिए मजबूती प्रदान की। मुझे बहामा के नागरिकों के एक समूह से समर्थन मिला जिन्होंने कहा कि ऐसा करना वास्तव में ज़रूरी था।





1970 के दशक में गुलामों द्वारा ठोस चट्टान को नक्काशीदार कर सीढ़ियों में पुनःनिर्मित किए गए
कीनस स्टेर्कस के नीचे खड़े एस्थर और बेरी।



रेसिन अपने दोस्तों वेड क्रिस्टी (बीच में)
और फेलिक्स स्टब्स के साथ नाव की
सवारी का आनन्द लेते हुए।

इस सब के साथ, रेसिन के निजी जीवन में भी परिवर्तन हुआ, जब 1990 में एस्थर नोल्स से उनकी मुलाकात हुई और उस के बाद विवाह। एक सफल बैंकर, एस्थर अपने पति की रोटरी जीवन में आराम से घुल मिल गई। 1991-92 में जब वह मंडलाध्यक्ष थे, तो वह छह महीने की लम्बी यात्रा के दौरान मंडल के अंतर्गत आने वाले सभी राष्ट्रों के प्रत्येक क्लब में उनके साथ कंधे से कंधा मिला कर खड़ी रहती थीं। जब आप उन्हें एक साथ देखते हैं तो उनका आपसी सम्मान और सहभागिता सहज ही नज़र आती है। रेसिन कहते हैं, “एस्थर ने मुझे हमेशा जमीन पर रखा है। जैसे ही उसे लगता है कि मेरा अहंकार जग रहा है, वह तुरन्त इसे शांत कर देती है। किसी भी भाषण के बाद, अगर एस्थर वहां होती है, तो मैं हमेशा उससे पूछता हूँ कैसा रहा। मैं जानता हूँ अकेली वही है जो मुझे सच बताएगी।”

रेसिन 2016 में अस्पताल के अध्यक्ष रहते हुए सेवानिवृत्त हुए, हालांकि निदेशक मंडल में उनका सेवा देना जारी है। सिंहावलोकन में, अपने सपने को हकीकत में बदलने के लिए किया गया लंबा

संघर्ष सही था। “आपको जीवन में जोखिम उठाना ही पड़ेगा। उन्होंने जोर देकर कहा, यही करने के लिए हम यहां हैं: वही उसी पुराने ढों पर न चलें, बल्कि अपने हथियार निकालें, झाड़ियों को काट कर नया रास्ता बनाएं। यहां पर लोगों के स्वास्थ्य की सही देखभाल नहीं हो रही थी। उन्हें इसकी सख्त जरूरत थी।”

उनकी यात्रा के सबसे प्रशंसनीय पहलू में से एक, यह देखना रहा है कि रोटरी में सक्रिय रहने के बावजूद वे डॉक्टर अस्पताल के प्रति पूर्णतया प्रतिबद्ध कैसे रहे, कहना है चार्ल्स सेली का, जो रोटरी के ज़रिये रेसिन से मिले और उनके बाद अस्पताल के सीईओ बने। “यह देखने के लिए कि दोनों को कोई कैसे संतुलित कर सकता है - सिवा शब्द ‘संतुलन’ के, क्योंकि वह प्रत्येक के लिए पूरी तरह से समर्पित थे।”

अस्पताल की तरह ही रोटरी में भी, लोग रेसिन को, दूरदर्शी और गहराई से जांच पड़ताल करने वाले प्रशासक के रूप में जानते हैं। वे उनका सम्मान एक बहुमूल्य सलाहकार के रूप में भी करते हैं। “नेतृत्व प्रतिभा की पहचान करने में उनकी

ज़बरदस्त पकड़ हैं।” कहते हैं डॉक्टर अस्पताल के बोर्ड के एक सदस्य फेलिक्स स्टब्स, जो रेसिन को उन अवसरों को प्रदान करने का श्रेय देते हैं, जिसकी वजह से स्टब्स मंडल 7020 के मंडलाध्यक्ष बने। जब उन्हें किसी के भीतर कोई योग्यता दिखाई देती है जो रोटरी के लिए फायदेमंद हो, “तो वह उस व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार अपने साथ जोड़ लेते हैं। ‘डॉक्टर अस्पताल’ में भी बिलकुल यही किया था। उन्होंने योग्य युवा नेताओं की पहचान की और उन्हें अपने साथ जोड़ लिया - तब वो रिटायर हो सके और अपना समय रोटरी को समर्पित कर पाए।”

जैसा कि द्वीप की संस्थाओं में होता है, रोटरी क्लब ईस्ट नासौ के सदस्य एक याट क्लब में लकड़ी के पैनल लगे कमरे में मिलते हैं। सेलबोट की तस्वीरें दीवारों को सुशोभित करती हैं। सर डूवर्ड नोल्स, एक सक्रिय सदस्य रहे, जिन्होंने फरवरी में अपनी मृत्यु तक, दुनिया के सबसे पुराने जीवित ओलंपियन के रूप में राज किया (नौकायन में 1956 में कांस्य और 1964 में स्वर्ण पदक)।

कई मायनों में, 21 वीं शताब्दी रोटररी क्लब के लिए आदर्श शताब्दी है: इसके साठ प्रतिशत सदस्य 50 साल से छोटे हैं, और एक सदस्य रोटरियन और रोटरैक्टर दोनों हैं। अक्टूबर में एक बैठक में, नेतृत्व पदों पर इतनी अधिक महिलाएं थीं कि पहले 30 मिनट तक एक भी पुरुष का भाषण देने का अवसर नहीं आया था। कामकाज का एक नियम है : उपस्थिति का पुरस्कार देना। 30 साल तक पूर्ण उपस्थिति के लिए रेसिन ने पुरस्कार ग्रहण किया। 1980 से रोटररी में शामिल होने के बाद, वे केवल एक बैठक में अनुपस्थित रहे।

हालांकि रोटररी लगभग 40 वर्षों तक रेसिन के जीवन का केंद्र रही, पर उनका लक्ष्य रोटररी इंटरनेशनल का अध्यक्ष बनना कभी भी नहीं था। वह अपने नाम तक पर विचार करने के अनिच्छुक थे। लेकिन, वह बताते हैं, “बहामास और कैरीबियाई देशों से कभी कोई अध्यक्ष नहीं बना था, और रोटरियन्स को लगा कि मुझे अपना नाम आगे प्रस्तावित कर उनका प्रतिनिधित्व करना चाहिए। मुझे लगा कि वे रोटररी को करीब से महसूस करना चाहते हैं, और मैं उस स्थिति में था जहां यह मुमकिन हो सकता था। तो मैंने सोचा, कि मुझे उनके लिए यह अवश्य करना चाहिए।”

एस्थर ने मुझे हमेशा जमीन पर रखा है। जैसे ही उसे लगता है कि मेरा अहंकार जग रहा है, वह तुरन्त इसे शांत कर देती है। किसी भी भाषण के बाद, अगर एस्थर वहां होती है, तो मैं हमेशा उससे पूछता हूँ कैसा रहा। मैं जानता हूँ अकेली वही है जो मुझे सच बताएगी।



गोल्फ रेसिन का पसंदीदा शौक हैं।

युगांडा में रोटररी क्लब कंपाला के सदस्य सेम एफ ओवरी को, 2016 में रोटररी के 2018-19 के अध्यक्ष के रूप में सेवाएं देने के लिए नामित किया गया था। जुलाई 2017 में सर्जरी के दौरान उपजी जटिलताओं की वजह से अचानक उनकी मृत्यु हो गई, रेसिन को उनका स्थान ग्रहण करने के लिए चुना गया।

रेसिन द्वारा सबसे पहले आमंत्रित लोगों में से एक, फ्लोरिडा के भूतपूर्व रो ई निदेशक जॉन स्मार्ज थे, जो पहले ओवरी के सहयोगी रह चुके थे। रेसिन ने स्मार्ज को उन्हें भी सहयोग के रूप में अपनी सेवाएं देने का अनुरोध किया। “उनके पहले वाक्यों में से एक था, ‘मैं चाहता हूँ कि सैम की स्मृति बनी रहे, और मेरी इच्छा है कि इसमें आप मेरी मदद करें’। इस समय अध्यक्ष बनने के लिए बेरी विशिष्ट योग्य थे।” मस्मार्ज ने कहा, वह सैम की स्मृति को और यादगार बनाएंगे

स्मार्ज और रेसिन एक दूसरे को करीब बीस साल से जानते हैं। दोनों रोटररी के एक ही अंचल से हैं और लगभग एक ही समय मण्डल अध्यक्ष रहे। उन्होंने हेटी में भूकंप आने के बाद साथ साथ काम किया है और हेटी भूकंप राहत निधि के खाता धारक रहे हैं, एक दानी ने सलाह दी कि फाउंडेशन के माध्यम से फंड स्थापित किया जाए जो कि 6.5 मिलियन डॉलर की परियोजनाओं का समर्थन करता था। स्मार्ज का कहना है, “बेरी रेसिन हेटी में एक रॉक स्टार है - इसे और किसी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता। वह रॉक स्टार हैं क्योंकि लोग जानते हैं कि उन्होंने देश के लिए क्या किया है।”



बहामियन रोटेरियनों द्वारा अपने और अपनी पत्नी के सम्मान में रखे एक पार्टी में रेसिन अपनी बेटी मिशेल और पोती बेल्ला को गले लगाते हुए।

माना कि रेसिन, रोटेरी रॉक स्टार हैं और कैरेबियन का गौरव भी, उनके दोस्त फेलिक्स स्टब्स कहते हैं, लेकिन वह अपने आप को एक सामान्य व्यक्ति मानते हैं, और प्रसिद्धि से दूर रहते हैं। डॉक्टर अस्पताल में वह अक्सर शॉर्ट्स और चप्पल में नज़र आ जाते थे। हाल ही में उन्होंने अस्पताल का दौरा किया, इस बार वो ढंग से तैयार हो कर आये थे, फ्रंट डेस्क पर कर्मचारियों से डॉक्टरों और नर्सों तक - हर कोई उनसे हेलो करने के लिए रूक गया था। एक महिला ने तो आगे बढ़ कर उन्हें गले लगा लिया। एक अन्य ने मुस्कुराते हुए चिल्ला कर कहा “अच्छे लग रहे हो, बेरी!”

इस उद्बोधन में कोई अनादर भाव नहीं था - उसने बस कंपनी की नीति का अनुसरण किया था। 1990 के दशक की शुरुआत में, रेसिन (यानी, बेरी)

ने अस्पताल में सभी से अपने सहयोगियों को उनके पहले नाम से संबोधित करने के लिए कहा था। उन्हें याद है “जब एक हाउसकीपर मेरे पास आई और सहजता से पूछा, ‘क्या वास्तव में मैं आपको बेरी बुला सकती हूँ?’ मैंने कहा हाँ। ‘ठीक है,’ उसने जवाब दिया, ‘मैं बस इसे फुसफुसा दूंगी क्योंकि मुझे झिझक होती है।’ ”

“हम सब समान स्तर पर हैं, रेसिन ने आगे जारी रखा। हम सिर्फ अलग अलग हैट पहनते हैं। इस साल मैं अध्यक्ष की हैट पहनूंगा, लेकिन रोटेरियन्स, सभी रोटेरियन हैट पहनते हैं, और मेरे पास भी वो हैट है। इस खेल में हम सब एक साथ हैं। हम सभी मिलकर काम करते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम ने कौन सी हैट पहनी है।”

हम सिर्फ अलग अलग हैट पहनते हैं। इस साल मैं अध्यक्ष की हैट पहनूंगा, लेकिन रोटेरियन्स, सभी रोटेरियन हैट पहनते हैं, और मेरे पास भी वो हैट है।

बहामा अपने तैरने वाले सूअरों के लिए प्रसिद्ध है (गूगल करें, यह सच है), लेकिन बेरी और एस्थर रेसिन की इच्छा है कि एक अन्य प्राणी पर भी अधिक ध्यान देना चाहिए। यह देश, दुनिया में कैरेबियन फ्लेमिंगो की प्रजनन आबादी का सबसे बड़ा स्थान है, ये प्रजाति 20 वीं शताब्दी के मध्य में शिकार की वजह से विलुप्त होने के कगार पर थीं। नासौ के चिड़ियाघर और संरक्षण केंद्र, ऑर्देंस गार्डन में, दिन में कई बार पक्षी एक बड़ी रिंग के चारों ओर परेड करते हैं, प्रसन्न पर्यटकों के साथ फोटो खिंचवाने के लिए रूक जाते हैं जो एक पैर पर खड़े हो कर अपने नए मित्रों की नकल करते हैं। रेसिन जब बच्चे थे तब यहां आए थे, उसके बाद तो वह अपने बच्चों और पोते-पोतियों के साथ कई बार आ चुके हैं।

यह आज का आखिरी कार्यक्रम है, फिर बेरी और एस्थर फ्लेमिंगो के साथ फोटो शूट के लिए रूक जाते हैं। शूट के बाद, वे पक्षियों के “ट्रिल सार्जेंट” से हाथ मिला रहे हैं - गार्डन्स के प्रबंध संचालक, जो खुद एक रोटेरियन भी हैं - तभी अचानक एस्थर को याद आता है: सब लोगों की तरह वे एक पैर पर तो खड़े ही नहीं हुए।

वह और उनके पति, रोटेरी के प्रतिष्ठित अध्यक्ष, फुर्ती से दौड़ कर घेरे (रिंग) में चले जाते हैं। दरकदार आवाज़ निकालते, मूंगिया पक्षी उनके चारों तरफ इकट्ठे हो जाते हैं। बेरी और एस्थर ने अपनी बाहों बाहें फैला कर एक टांग ज़मीन से उठा लेते हैं। उनकी आंखें चार होती हैं पर उनकी हंसी नहीं रुकती, और ऐसा लगता है कि वे सदैव यहां रह सकते हैं, पूर्णतः संतुलित, हमेशा के लिए।

चित्र : एलिस हेन्सन
द रोटेरियन से पुनः प्रकाशित



रोटरी की विरासत पर ध्यान

फाउंडेशन समिति की अध्यक्षता करने के लिए कहा। वह मेरे लिए निर्णायक मोड़ था, और फिर जो हुआ आप जानते ही हैं। मैं चाहता हूँ कि आप सभी उन सदस्यों को व्यस्त रखने के बारे में सोचें जिन्हें रोटरी को लेकर कुछ संदेह है। 2018-19 में, मुझे आपकी मदद चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आप सभी संस्थान के चार मुख्य लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित करने में मेरे साथ जुड़ें।

पहला, हमारे पूरे संगठन की प्रथम प्राथमिकता (और इसमें आश्चर्य नहीं होगा) पोलियो खत्म करने की है। हमें दुनिया को पोलियो मुक्त करने का हर बच्चे से किया गया अपना वादा पूरा करना ही होगा।

दूसरा, छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों के अंदर हमें हमारे सेवा प्रयासों की संवहनीयता को बढ़ाना होगा। इसका मतलब है आवश्यकताओं का विस्तृत मूल्यांकन करना। इसका मतलब है समुदायों के साथ यह जानने के लिए काम करना कि उन्हें वास्तव में किस चीज की आवश्यकता है, और उन्हें - परियोजना का स्वामी बनने एवं समय-समय पर उसका आंकलन करने हेतु - उसका हिस्सेदार बनने के लिए मनाना।

हमारी तीसरी प्राथमिकता है मंडल को उनके मंडल नामित धन का पूर्ण इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करना। चाहे मंडल अनुदानों

के माध्यम से हो, वैश्विक अनुदानों के माध्यम से हो, या पोलियोप्लस के माध्यम से, परिवर्तनकारी साझेदारियों को बनाने एवं उस धन को काम में लाने के बहुत से तरीके हैं।

अंत में, हमने वर्ष 2025 तक रोटरी फाउंडेशन एंडोमेंट को 2.025 बिलियन डॉलर तक ले जाने का चुनाव किया है। इस वर्ष का हमारा व्यापक अनुदान संचयन लक्ष्य 380 मिलियन डॉलर का है। यह धन रोटरी सदस्यों द्वारा प्रतिदिन किये जाने वाले जीवन-परिवर्तक कार्यक्रमों को जारी रखने में हमारी मदद करेगा। लेकिन हम में से प्रत्येक को हमारी रोटरी विरासत के बारे में सोचने की आवश्यकता है। अक्षय निधि ही हमारा भविष्य है।

तो कृपया मेरे साथ जुड़ें, और चलिए इस वर्ष को रोटरी के लिए विरासत-निर्माण का वर्ष बनायें। आपकी विरासत, रोटरी का वादा।

रॉन डी बर्टन
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

मेरे रोटरी क्लब से जुड़ने के डेढ़ साल बाद, मेरी सदस्यता निलंबित कर दी गई क्योंकि मैं लगातार चार बैठकों में शामिल नहीं हुआ था। उस समय ऐसा नियम था। मैं इस बात को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करूंगा कि मैंने कभी भी खाने या साप्ताहिक बैठकों की अधिक परवाह नहीं की। मुझे नहीं लगा कि ये मेरे समय का सबसे अच्छा उपयोग है। लेकिन असल मुद्दा यह था कि मैं व्यस्त नहीं था। मुझे कोई भूमिका नहीं दी गई थी, मेरे पास सदस्य बने रहने का कोई कारण नहीं था, और मुझे हर सप्ताह लंच पर होने वाली ऐसी बैठकों में जाने की कोई जरूरत नहीं थी जो मुझे मेरे किसी काम की नहीं लगती थी।

लेकिन फिर मेरे नवनिराचित क्लब अध्यक्ष ने अगले रोटरी वर्ष के लिए मुझसे क्लब की रोटरी

ऐप ने अंग्रेजी बोलना आसान बनाया

टीम रोटरी न्यूज

अब कोई भी व्यक्ति मोबाइल ऐप के माध्यम से अंग्रेजी में बातचीत करना सीख सकता है, जिसे रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट, मंडल 3141, ने ब्रिटिश काउंसिल और इंग्लैंड स्ट्रोक के पूर्व भारत क्रिकेट खिलाड़ी क्रिस श्रीकांत के साथ साझेदारी में लांच किया है।

इंग्लिश स्ट्रोक के सीएसआर कार्यक्रम के कारण, ₹1,275 के एमआरपी की तुलना में ₹550 की कीमत पर, ऐप बेसिक और शुरुआती स्तर के चार मॉड्यूल में से दो

मॉड्यूल तक पहुंच प्रदान करता है। प्रत्येक मॉड्यूल तीन महीने के लिए वैध है। प्रत्येक मॉड्यूल के अंत में ऑनलाइन परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद शिक्षार्थियों को ब्रिटिश काउंसिल से ऑनलाइन प्रमाणपत्र प्राप्त होता है।

ऐप पूरे भारत में उपयोग के लिए तैयार है। मंडल के गवर्नर अपने मोबाइल - 98204 45542 पर कौशल विकास के लिए एवेन्यू अध्यक्ष राजेश अग्रवाल से संपर्क कर सकते हैं। ■

स्वयं सिद्ध के विचार की कल्पना कैसी की गई?

जब मैं मुंबई के परिवार न्यायालय की न्यायाधीश थी, तो एक महिला उच्च न्यायालय की न्यायाधीश ने मुझे एक महिला को तलाशने के लिए कहा जो भरण-पोषण की राशी मिलने के इंतेजारे में परिवार न्यायालय के गलियारों में फंसी हुई थी, और उनके लिए एक बाई का कार्य कर सकती थी। उन्हें मुंबई में एक आरामदायक

निवास मिला था और उन्हें घरेलू काम करने के लिए एक बाई की आवश्यकता थी।

मैंने कुछ महिलाओं को साक्षात्कार के लिए भेजा था और उनमें से एक को नौकरी मिल गई थी, ₹15,000 के आसपास का वेतन और साथ में मुफ्त आवास। यह चीज तब मेरे दिमाग में आई थी। जब मैं पुणे के परिवार न्यायालय में पदस्थ हुई, मैंने देखा कि न्यायाधीश परित्यक्त या तलाकशुदा

महिलाओं को जल्द राहत प्रदान करते हैं, ताकि उन्हें पैसों के लिए यहाँ-वहाँ भटकना ना पड़े या कोई खतरनाक कार्य ना करना पड़े। कम से कम उनकी बुनियादी जरूरतें उनके पतियों द्वारा पूरी की जानी चाहिए।

लेकिन यद्यपि हम त्वरित आदेश देते हैं, फिर भी पति के अदालत में मौजूद ना होने के कारण अक्सर फैसला एकपक्षीय हो जाता है, और इससे महिला की कुंठा दोगुनी हो

जाती है क्योंकि उसे आदेश तो प्राप्त हो जाता है लेकिन पैसा नहीं। फिर एक अन्य दुष्चक्र शुरू होता है... मामला पेश होता है, समन जारी किये जाते हैं, और यह चलता रहता है। सच्चाई यह है कि महिला को आदेश तो मिल जाता है परन्तु पैसे नहीं। तो फिर मुझे लगा कि न्यायालय को इस तरह के आदेश का निष्पादन सुनिश्चित करने हेतु शामिल होने की आवश्यकता है, और इस बीच महिलाओं के पास स्वयं

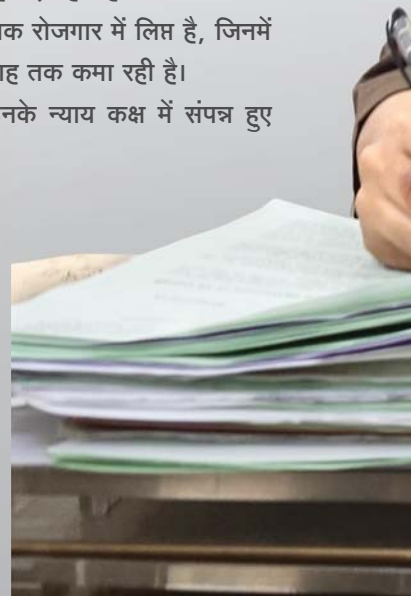
जहाँ महिलाओं को पंख दिए जाते हैं

रशीदा भगत

एक रोटरी शांति निर्माता, और पुणे के एक परिवार न्यायालय की न्यायाधीश स्वाति चवाण, उन महिलाओं को आर्थिक परेशानियों से मुक्ति दिलाने हेतु सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं जिन्हें उनके पतियों द्वारा छोड़ दिया गया है या जो तलाक होने की प्रतीक्षा में हैं, हालाँकि उन महिलाओं के हाथों में न्यायालय द्वारा दिया गया भरण-पोषण मिले जाने का आदेश तो होता है, लेकिन फिर भी उनके पास पैसे नहीं होते क्योंकि पुरुष पैसे देने से मना कर देते हैं और मुकदमे को आगे लेकर जाते हैं। लम्बे समय से “अदालत के गलियारों में फंसी” इन महिलाओं के लिए उन्होंने स्वयं सिद्ध, एक स्वयं सहायता कार्यक्रम जिसके द्वारा महिलाओं को विभिन्न व्यवसायों के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि वे स्वयं की आर्थिक रूप से मदद कर सकें, की शुरुआत की।

रोई मंडल 3131 द्वारा न्यायालय के साथ साझेदारी करने, और रोटरी क्लब पुणे यूनिवर्सिटी द्वारा इस कार्यक्रम का समर्थन किये जाने से यह कार्यक्रम वास्तव में लोकप्रिय हो गया है और 50 से अधिक महिलाएँ पहले ही अपना प्रशिक्षण पूर्ण कर चुकी हैं और लाभदायक रोजगार में लिप्त हैं, जिनमें से कुछ तो ₹20,000 प्रति माह तक कमा रही हैं।

जज स्वाति से पुणे में उनके न्याय कक्ष में संपन्न हुए साक्षात्कार के उद्धरण।



किये गए कार्य द्वारा कुछ कमाई भी होना चाहिए। तो फिर मुझे एक ऐसी व्यवस्था का विचार आया जिसमें न्यायालय गैर सरकारी संगठनों, विवाह सलाहकारों, प्रशिक्षकों, आदि के साथ साझेदारी करें।

महिलाओं की क्या प्रतिक्रिया थी?

शुरूआत में महिलाएं अनिच्छुक थी, यह कहती थी कि हमें क्यों प्रशिक्षण लेना चाहिए और कार्य करना चाहिए;

अगर हम ऐसा करते हैं तो, पति द्वारा ₹2,000 के भरण-पोषण दिए जाने के आदेश का पालन भी नहीं किया जाएगा। मैं उससे वह पैसा चाहती हूँ। तो यह एक मानसिक अवरोध था और हमें उन्हें इससे बाहर निकालना था, इसलिए उन्हें परामर्श दिया गया कि जब आपको काम करने पर ₹20,000 मिल सकते हैं तो ₹2,000 जैसी तुच्छ सी राशी, जो आपको ₹500 की किरतों में भी मिल सकती है, के लिए

अपनी जिंदगी खराब ना करें। अपनी जिंदगी को कचहरी के गलियारों के बाहर जिएं। यहाँ कई दिनों तक बैठकर अपनी जिंदगी बर्बाद मत कीजिये। इसके लिए अनुस्थापन आवश्यक था, तो वह किया गया और उन्हें समझाया गया कि उनके पास सभी मौलिक और संवैधानिक अधिकार हैं लेकिन उनकी खुद की और उनके बच्चों की जिंदगियाँ और भविष्य महत्वपूर्ण हैं। ऐसे ही एक अनुस्थापन कार्यक्रम में, एक महिला

उन्हें परामर्श दिया कि अपनी जिंदगी खराब ना करें। अपनी जिंदगी को कचहरी के गलियारों के बाहर जिएं।

ने पूछा: ओह, मुझे काम करना चाहिए और वो बैठ के खायेगा?

ओह, क्या यह भी संभव है?

हिन्दू विधि के अनुसार, प्रावधान यह है कि पति/पत्नी में से जो भी आर्थिक रूप से मजबूत होगा उसे लिंग आधारित भेदभाव किये बिना दूसरे को भरण-पोषण देना होता है। इसलिए मैंने एक निर्णय दिया जिसके अनुसार अगर कोई महिला जो अपने पति द्वारा छोड़ दी गई हो, अगर जीने के लिए काम कर रही है, तो वह पति उससे भरण-पोषण प्राप्त करने का दावा नहीं कर सकता। मैंने अपने निर्णय में इन उद्धरणों का हवाला दिया और उन महिलाओं को समझाया कि आपकी कमाई आपके पास ही रहेगी। अंततः वे प्रेरित हुईं। दूसरी चुनौती यह थी कि उनकी संख्या अधिक थी तो उन्हें प्रशिक्षित कौन करेगा। हमारे सलाहकारों ने गैर सरकारी संगठनों को एक बैठक के लिए बुलाया

न्यायाधीश
स्वाती चवाण



और प्रशिक्षण शुरू हुआ, लेकिन वह व्यवस्थित या मानकीकृत नहीं थी... न्यायालय के पास धन नहीं होता, हम केवल आदेश पारित कर सकते हैं।

इसी बीच स्वयं सिद्ध पर एक लेख प्रकाशित होने के बाद, अधिवक्ता वैशाली भागवत हमारे पास आई और कहा कि रोटरी प्रशिक्षण हेतु आर्थिक प्रबंध करेगी और यह सबसे अच्छी बात थी; आप उस बैठक का परिणाम आज देख सकते हैं।

तो आपने इन महिलाओं में किस तरह का परिवर्तन देखा?

ओह, जबर्दस्त! आपको देखना चाहिए था कि जब वे अदालत के गलियारों में बैठती थी तो कैसी नज़र आती थी... अब उन्होंने बहुत सारी शक्ति और आत्मविश्वास हासिल कर लिया है, अब उन्होंने बहुत अच्छे से तैयार होना शुरू कर दिया है, और जब कोई हताश होता है, तो दूसरे मिलकर उसे दिलासा देते हैं। उन्होंने स्वयं को ऊपर उठा लिया है। केवल पैसा ही नहीं बल्कि उनकी ताकत भी उन्हें सशक्त बनाती है। इन 50 महिलाओं के पास अब हर परेशानी से निपटने की कुंजी है।

आप एक न्यायाधीश कैसे बनीं? क्या पहले से ही कुछ योजना थी?

नहीं, मैंने कभी भी कानून के तरफ जाने का या न्यायाधीश बनने का विचार नहीं किया था लेकिन स्कूली दिनों से ही, दूसरों की समस्या सुलझाने में उनकी मदद करने में मेरा रुझान रहा और मुझे अच्छे परिणाम मिले।

मैंने महाराष्ट्र के नांदेड़ विधि कॉलेज (1989-90) से अपनी एलएलबी की, उसके बाद एलएलएम और एम फिल किया, जहाँ पर विषय था झनारी और कानूनफ। इसके बाद मैंने ब्रेडफोर्ड यूनिवर्सिटी से एक रोटरी शांति निर्माता (2013-14) के रूप में अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं संघर्ष समाधान में मास्टर्स किया।

आपको रोटरी के इस पाठ्यक्रम के बारे में कैसे पता चला?

मेरी अदालत में एक पुलिस ऑफिसर जो एक बहुत ही संवेदनशील अवैध व्यापार के मामले की जाँच कर रहे थे और उन्हें इस तरह की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई थी, ने मुझे इसके बारे में बताया। लेकिन तब मैंने इसके

लिए आवेदन नहीं दिया था। बाद में, 2011 में मुंबई की विशेष अदालत में अवैध व्यापार के विरोध में मेरे द्वारा किये गए कार्य के लिए यूएस स्टेट डिपार्टमेंट से मुझे एक पुरस्कार मिला, और एक रोटरी क्लब ने मुझे एक वक्ता के रूप में आमंत्रित किया और फिर मैंने उस क्लब के माध्यम से आवेदन किया।

उस पाठ्यक्रम ने कैसे आपको प्रभावित किया या किसी तरह से आपकी सोच को परिवर्तित किया या उसे नया आकार दिया?

बुनियाद तो पहले से ही थी लेकिन अब मैं चीज़ों को अलग ढंग से देख सकती हूँ, गहराई से सोच सकती हूँ और अधिक बेहतर एवं अलग ढंग से विश्लेषण कर सकती हूँ।

क्या आपने पारिवारिक न्यायालय का चुनाव किया था; यदि हाँ, तो क्यों?

(हँसती है) मैंने किया था; कहना मुश्किल क्यों है! मैंने नागरिक और आपराधिक न्यायिक प्रणालियों के लिए, और एक विशेष अदालत में मानव तस्करी में भी कार्य किया था,

एवं राज्य उपभोक्ता आयोग में एक रजिस्ट्रार के रूप में एक कार्यभार संभाला था। हम अंतर्राष्ट्रीय शांति की बात करते हैं, लेकिन शांति की सबसे छोटी इकाई घर और फिर समाज में संबंधों से शुरू होती है। अगर आपका रिश्ता शान्तिपूर्ण है तो परिवार शान्तिपूर्ण होता है, समुदाय शान्तिपूर्ण होता है, शहर और फिर संपूर्ण देश शान्तिपूर्ण होता है।

आप 2011 में परिवार न्यायालय में आईं; 2011 और 2018 के बीच परिवार न्यायालय में आने वाले मसलों में क्या अंतर आया है?

यह प्रतिदिन बदल रहा है; लिव-इन रिलेशनशिप्स का उदाहरण लें। पहले जब वे अस्तित्व में आए, तो लोग इसे किसी खराब चीज़ के रूप में देखते थे



लेकिन अब कोई भी अपनी भौंह नहीं चढ़ाता, बल्कि इसे स्वीकार किया जाता है। लोग विकसित हो रहे हैं; उनकी आवश्यकताएं, मांगें और दृष्टिकोण बदल रहा है। रिश्तों की परिभाषा बदल रही है और अब यह एक महिला और एक पुरुष के बीच रिश्ते तक ही सीमित नहीं है। तो, संपूर्ण दृष्टिकोण ही परिवर्तित हो रहा है।

शादियों या रिश्तों के टूटने की मुख्य वजह क्या है?

महिला हमेशा से ही सहनशील रही है बल्कि वह आज भी सहनशील बनी हुई है। लेकिन आज उसे अपने अधिकारों की जानकारी है। वह अब भी सामंजस्य बैठकर चलती है, लेकिन एक समय ऐसा भी था जब उसके पास सामंजस्य बैठकर चलने या सहन करने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था। मैं कहूँगी कि आज भी वह कुछ हद तक सहन करती है लेकिन जब यह असहनशील या हद से पार हो जाता है, तो वह (उस शादी के बंधन से) मुक्त होना चाहती है। पहले महिलाओं के लिए प्रश्न पूछने और विवाह जैसे रिश्ते से बाहर निकलने की कोई गुंजाइश नहीं होती थी। आज महिलाएं पुरुषों के बराबर हैं, यह स्वीकार करने में बेशक दूसरे लिंग को कुछ और समय लेगा।

क्या यह महिलाओं के मध्य बेहतर शिक्षा और जागरूकता का परिणाम है?

बिल्कुल। शिक्षा उन बड़ी वजहों में से एक है जिनके कारण आज उसके पास आत्मविश्वास है, वह जानती है कि सही क्या है और गलत क्या है एवं सही फैसले ले सकती है। अभी तक पुरुष उसके लिए फैसले लिया करते थे।

उन्होंने बहुत सारी शक्ति और आत्मविश्वास हासिल कर लिया है, अब उन्होंने बहुत अच्छे से तैयार होना शुरू कर दिया है, और जब कोई हताश होता है, तो दूसरे मिलकर उसे दिलासा देते हैं। उन्होंने स्वयं को ऊपर उठा लिया है।

क्या तलाक को कलंक समझना बंद हो गया है; जब एक महिला तलाक लेती है तो क्या परिवार के लोग अधिक समझदारी दिखाते हैं?

हाँ, बड़े शहरों से तलाक को कलंक समझने वाली भावना खत्म हो गई है लेकिन ग्रामीण इलाकों में आज भी तलाक एक अमान्य बात है। शहरों में एवं कुलीनों के मध्य, यह बहुत ही स्वाभाविक और स्वीकार्य है। जैसे कि परिवार में किसी की मृत्यु होना, जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण होता है लेकिन हमारे पास उसे स्वीकार करने के सिवा कोई अन्य विकल्प नहीं होता। हम यह भी स्वीकार करते हैं कि कोई व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार था और यह बेहतर है कि उसका जीवन समाप्त हो गया। रिश्ते भी इसी तरह होते हैं.... रोज के झगड़े, और उन झगड़ों से पीड़ित और प्रभावित होने वाले बच्चे।

टूटते घरों के बच्चों का क्या होता है?

आपने देखा कि अभी क्या हुआ (उनके न्याय कक्ष में); पुरुष बच्चे से मिलने में दिलचस्पी नहीं रखते। बेशक, सभी पुरुष ऐसे नहीं होते, लेकिन बहुत से पुरुष जिम्मेदारी लेना नहीं चाहते।

एक टूटी हुई शादी में बेवफ़ाई क्या भूमिका निभाती है?

सामाजिक मीडिया के धावा बोलने के बाद, इसकी भूमिका बढ़ रही है।

और वे पकड़े जाने के बाद तलाक के लिए आते हैं?

(हँसती है) कभी-कभी, जब वे आपसी सहमति से तलाक के लिए आते हैं तो दोनों के किसी अन्य से प्रेम संबंध होते हैं और दोनों को एक दूसरे के प्रेम संबंधों के बारे में पता होता है और उनमें से कोई भी अपने निजी मसले को सार्वजनिक नहीं करना चाहता और इसलिए वह निश्चय करते हैं 'तुम अपने रास्ते जाओ और मैं मेरे रास्ते जाता हूँ। मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ और तुम मुझे माफ़ कर दो।' नए जोड़ों के लिए संबंध तोड़ना आसान होता है; लेकिन ऐसे जोड़े जिनकी उम्र 40-50 की है, या जिनकी शादी को 10 से 20 साल हो चुके हैं, उनके लिए रिश्ता तोड़ना कठिन होता है। वे अब भी पारंपरिक हैं और यह सोचते हैं कि शादी जीवनभर निभाने के लिए होती है। लेकिन युवा पीढ़ी इस तरह से नहीं सोचती।

अगर अन्य रोटरी क्लब इस तरह की साझेदारी के लिए आगे आ सके तो यह पहल देशभर में फैल सकती है। आपको जरूरतमंद और अधिकारहीन महिलाओं की तलाश करने की जरूरत नहीं है, आपको वे हर जगह मिल सकती हैं।

शादियों के टूटने में घरेलु हिंसा क्या भूमिका निभाती है? क्या आपने ऐसा होते हुए बहुत देखा है?

हाँ। इसके बारे में सबसे बड़ी गलतफहमी यह है कि लोगों को लगता है कि घरेलु हिंसा कानून का मकसद शादियों को तोड़ना है। लेकिन इसका उद्देश्य घर की दीवारों के पीछे हो रही हिंसा को रोककर रिश्ते को बचाने का है। और हमेशा की तरह पीड़ित पक्ष में महिला होती है, तो वह अदालत में बस यह कहने जाती है कि मुझे यह आदमी मेरे पति के रूप में चाहिए लेकिन इसे मुझसे मारपीट या दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए। लेकिन जब एक महिला घरेलु हिंसा अधिनियम के तहत आवेदन करती है, तो पति सोचता है: 'ठीक है तो अब वह तलाक लेने जा रही है।' यह नकारात्मक पहलू है। वह रिश्ता चाहती है लेकिन वह कहती है कि हिंसा मत करो। पति कहता है: 'तुम अदालत गई तो अब तलाक के लिए तैयार हो जाओ।'

क्या आपका परिवार न्यायालय देश का पहला और एकमात्र न्यायालय है जो इन महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए यह कौशल कार्यक्रम चला रहा है?

हाँ, मुझे यह कहते हुए गर्व होता है। और अगर अन्य रोटरी क्लब इस तरह की साझेदारी के लिए आगे आ सके तो यह पहल देशभर में फैल सकती है। आपको जरूरतमंद और अधिकारहीन महिलाओं की तलाश करने की जरूरत नहीं है, आपको वे हर जगह मिल सकती हैं। आपको बस एक योजनाबद्ध तरीके से उनकी मदद करने के लिए हाथ बढ़ाना होगा।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा



तलाकशुदा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक अभिनव परियोजना

रशीदा भगत

डी जी अभय गाडगिल और मंडल साक्षरता समिति की अध्यक्ष और पेशे से वकील, वैशाली भागवत के नेतृत्व में, मंडल 3131 ने पुणे के परिवार न्यायालय के साथ साझेदारी की है ताकि परित्यक्त पत्नियों और तलाकशुदा महिलाओं को कुशल और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने वाली एक अभिनव परियोजना को कार्यान्वित किया जा सके।

यह योजना परिवार न्यायालय की न्यायाधीश स्वाति चवाण के दिमाग की उपज है, जो संयोग से एक रोटरी शांति निर्माता है, जिन्होंने वर्ष 2013-14 में ब्रेडफोर्ड यूनिवर्सिटी से अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं संघर्ष समाधान में मास्टर्स किया है। उन्होंने समझाया कि अक्सर अदालत परित्यक्त महिलाओं या तलाकशुदा महिलाओं को जल्द राहत देने के लिए भरण-पोषण

प्रदान किये जाने का आदेश देती है, लेकिन पुरुष पैसा देने से साफ तौर पर मना कर देते हैं। जिसके परिणामस्वरूप वे निराश महिलाएं न्यायिक रूप से उन्हें मिले पैसे को प्राप्त करने के लिए अदालत के गलियारों में लम्बा समय बिता देती हैं।

वैशाली ने समझाया कि अदालतों ने लगातार एक महिला या एक बच्चे को उसी स्तर की

सुविधा या जीवनशैली के अनुरूप भरण-पोषण मिलने के अधिकार का समर्थन किया है जो वैवाहिक संबंध के अस्तित्व में बने रहने के दौरान उन्हें प्राप्त होती है, “परन्तु पति की कमाई को साबित करने का जिम्मा औरत पर आता है, और पुरुष अपनी आमदनी को छिपाने के लिए कई तरह की युक्तियां अपनाते हैं ताकि उन्हें जितना संभव हो सके उतना कम भुगतान करना पड़े।”



और एक बार जब अदालत भरण-पोषण की राशी तय कर देती है, तो पुरुष हमेशा की तरह उसको लेकर विवाद करते हैं और उच्चतर न्यायालय जाते हैं और महिला, जिसके पास अक्सर पालने के लिए एक या दो बच्चे होते हैं, संकटपूर्ण स्थिति में रह जाती है और पूरी तरह अपने भाई-बहन या माता-पिता पर आश्रित हो जाती है। 'ऐसे मामलों में एक महिला को मुकदमा जीतने के लिए तीन साल से लेकर 20 साल तक का समय भी समय खर्च करना पड़ सकता है,' वैशाली कहती है।

ऐसी महिलाओं द्वारा झेली गई कठिनाइयों को देखने के बाद, योग्य महिलाओं को

प्रमाण पत्र प्रदान करने के लिए आयोजित किये गए कार्यक्रम के उद्घाटन में न्यायाधीश स्वाति ने समझाया कि उन्होंने न्यायालय की बकील स्मिता जोशी के साथ मिलकर ऐसी महिलाओं को कुशल बनाने का एक कार्यक्रम 'स्वयं सिद्ध' शुरू करने का निश्चय किया था, ताकि वे महिलाएं भरण-पोषण की राशी, जो हो सकता है मिले या ना भी मिले, के पीछे भागने के बजाए आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें।

"अन्यथा उनका जीवन लम्बे समय के लिए अदालतों के गलियारों में फंस कर रह जाता है।" कई NGO इस पहल में महिलाओं को सिलाई, फैशन डिजाइनिंग, पैकिंग, सौन्दर्य



अदालतों के लिए भरण-पोषण राशी को लेकर निर्णय देना आसान होता है लेकिन उसे लागू करवाना मुश्किल होता है। पुरुष जेल जाने के लिए भी तैयार होते हैं, लेकिन वे पैसे नहीं देना चाहते।

प्रधान न्यायाधीश शैलजा सावंत



देखभाल, आभूषण निर्माण आदि में प्रशिक्षित करने हेतु शामिल हुए।

लेकिन जब तक वैशाली ने इस पहल के बारे में एक स्थानीय अखबार में नहीं पढ़ा था, यह कार्यक्रम एक "अनौपचारिक जगह" पर चल रहा था। "चूंकि कौशल विकास हमारे TEACH कार्यक्रम का एक अतिरिक्त लंब है, इसलिए मंडल 3131 के डीजी अभय गाडगिल के साथ हमने परिवार न्यायालय के साथ साझेदारी करने का निश्चय किया ताकि इस कार्यक्रम को मजबूती प्रदान कर सकें, और अधिक महिलाओं को लाभान्वित कर सकें," वह कहती है।

लाभार्थियों का चयन उनकी आर्थिक स्थिति, शैक्षिक योग्यता और कुछ अन्य मापदंडों के आधार पर किया गया।

अदालत में वे महिलाएं जिन्होंने सफलतापूर्वक विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को पूर्ण किया, उच्चाधिकारियों

से अपने प्रमाणपत्र लेने हेतु सामने आईं। चमकीली बोर्डर और पल्लू वाली रंगबिरंगी साड़ी पहने हुए, वे उम्दा और परिष्कृत ढंग से तैयार हुई थीं। लेकिन पोशाक से अधिक, उनकी आत्मविश्वास से भरी मुस्कान ने बढ़िया ढंग से स्वच्छ अदालत के उस कक्ष को एक विशिष्ट सिहरन और उत्सव की लहर से भर दिया। पूर्व रोई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी, जिन्होंने कार्यक्रम की अध्यक्षता की, ने न्यायाधीशों की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने "कभी भी भारत में इस न्याय कक्ष से अधिक स्वच्छ न्याय कक्ष कहीं नहीं देखा।"

प्रशिक्षण के बाद महिलाओं के आत्मविश्वास के स्तर में आए गहन परिवर्तन पर एक से अधिक बार टिप्पणियाँ की गईं।

वैशाली ने न्यायाधीश स्वाति चवाण द्वारा "परियोजना को पूर्ण रूप से समर्थन प्रदान करने और कैसे इसे संपादित



बाएँ से : DLCC चेयर वेंशाली भागवत, डीजी अभय गाडगिल, न्यायाधीश स्वाती चवाण, PRIP कल्याण बेनर्जी और पुणे परिवार न्यायालय की प्रधान न्यायाधीश शैलेजा सावंत।

एक पूर्व TRF न्यासी होने के नाते, शांति कार्यक्रम उन योजनाओं में से एक था जिनमें मैंने वर्षों पहले भाग लिया था। जब भी मैं आप के जैसे किसी शांति निर्माता को देखता हूँ जो हमारे विचारों को व्यवहार में लाकर वास्तव में जिंदगियाँ बदल रहे हैं, तो यह सच में मुझे उत्साहित करता है।

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी

किया जाए पर मार्गदर्शन करने के लिए उनका धन्यवाद किया। हमने उन महिलाओं को परामर्श देने और उन्हें प्रेरित करने में भाग लिया जो शुरू में इस तरह के पाठ्यक्रम के लिए आवेदन करने हेतु थोड़ी अनिच्छुक थीं लेकिन जब हमने उन्हें आश्चर्य किया कि समस्याओं को सुलझाने में हम प्रत्येक प्रतिभागी की मदद करेंगे तो वे मान गईं।”

परिवार न्यायालय की प्रधान न्यायाधीश शैलेजा सावंत ने इन महिलाओं की मदद करने

हेतु अदालत के साथ साझेदारी करने के लिए रोटरी का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष उनकी साथी (स्वाति चवाण) ने उनके सामने यह विचार रखा, “शुरू में मुझे थोड़ा संदेह था लेकिन बाद में जब उन्होंने इस परियोजना को लागू करने हेतु योजना तैयार कर ली तब मैंने अपना मन बदल लिया। किसी भी परियोजना के लिए पैसे की आवश्यकता हमेशा होती है नहीं तो योजना केवल कल्पना ही रह जाती है। लेकिन जब रोटरी मदद के लिए आगे आई, तो यह परियोजना एक हकीकत बन गई।”

उन्होंने कहा कि अदालतों के लिए भरण-पोषण राशी को लेकर निर्णय देना आसान होता है “लेकिन उसे लागू करवाना मुश्किल होता है। पुरुष जेल जाने के लिए भी तैयार होते हैं, लेकिन वे पैसे नहीं देना चाहते। इसलिए विचार इन महिलाओं की मदद करके इन्हें अपनी आजीविका कमाने हेतु सशक्त बनाने का था और 50 महिलाएं लाभान्वित हुईं। मैं आशा करती हूँ कि यह परियोजना संपूर्ण महाराष्ट्र में लागू होगी।”

बैठक को संबोधित करते हुए PRIP बेनर्जी ने मंडल 3131 को इस परियोजना को संपादित करने हेतु पुणे के परिवार न्यायालय के साथ साझेदारी करने के लिए बधाई दी। “लाभार्थियों के चेहरों पर

आत्मविश्वास और मुस्कान को देखकर मैं प्रसन्न हूँ और आशा करता हूँ कि समस्त भारत के रोटरी क्लब इस शानदार परियोजना को लागू करेंगे।”

उन्होंने आगे कहा कि वह न्यायाधीश स्वाति जैसी एक रोटरी शांति निर्माता से मिलकर विशेषरूप से प्रसन्न है, “क्योंकि एक पूर्व TRF न्यासी होने के नाते, शांति कार्यक्रम उन योजनाओं में से एक था जिनमें मैंने वर्षों पहले भाग लिया था। जब भी मैं आप के जैसे किसी शांति निर्माता को देखता हूँ जो हमारे विचारों को व्यवहार में लाकर वास्तव में जिंदगियाँ बदल रहे हैं, तो यह सच में मुझे उत्साहित करता है।”

कुछ लाभार्थियों ने बताया कि कैसे इस कार्यक्रम ने उन्हें एक गृणिता अनिश्चितता और निर्भरता वाले जीवन से बाहर निकालकर एक ऐसी जिंदगी दी जिसमें वे एक अच्छी आमदनी अर्जित करती हैं और अब उनके बच्चों की मदद कर सकती हैं। डीजी अभय गाडगिल ने न्यायाधीशों द्वारा रोटरी को एक साझेदार के रूप में चुनने के लिए उनका धन्यवाद किया और पल्लवी देशपांडे, रोटरी क्लब पुणे यूनिवर्सिटी की अध्यक्ष, जिन्होंने परियोजना का समर्थन किया, ने सभा का अभिनन्दन किया।

चित्र : रशीदा भगत

Ergo Bed

Smart. Adjustable. Technology.



EQUIPPED WITH
5
ZONE
5 ZONE
PIN CORE
LATEX
MATTRESS



feast



surf the net



read a book



watch TV



massage

With advanced and improved technology, the sleek European design Ergo bed will let you choose your own style of comfort. With an easy push of a button, this bed will freely adjust to any position of activity you desire: you can dine on your bed, use your laptop, read comfortably, lie down while watching TV, or simply relax and enjoy different intensities of noiseless vibration massages. The mattress is made of superior 100% natural pin core latex with high-grade specifications for optimal body support and comfort. Further, it also provides health benefits with the use of the Zero G position which optimizes blood circulation.



Company Showrooms: Mumbai – 022-49739066, Bangalore – 080-41654425, Chennai – 044-48516188

Authorised Franchisees: Décor World – Hyderabad – 040-66746622, Adinath Furnitures – Surat – 0261-2634567, Impex United – Cochin – 9746471257, Dimensions Furniture & Lifestyle – Indore – 0731-2552855, Foam Home – Mumbai – 022-23514135, Galaxy Impex – Pune – 9823815169, ND Enterprises – Navi Mumbai – 022-65111155, Diya Enterprises – Coimbatore – 9500806444, Naaz Mattress Gallery – Gurgaon – 9871170247/8700309691

Authorised Dealers: Shangar Furnishing – Vadodara – 0265-2321775, The Handloom Emporium – New Delhi – 011-22443311, Jain Foam Palace – New Delhi – 011-41554162, Rajwada Décor – New Delhi – 011-45508926, Luxe Furnishing – Hyderabad – 040-23002977, Trisul Foams – Vijayawada – 0866-2489122/2579122

Manufactured & Marketed by: Emirates Sleep Systems Pvt. Ltd. (Under license from Serta Inc, USA.)



Sales & Marketing Office: Office No # 0955 L-9, Raheja Towers, East Wing, No.26/27 MG Road, Bangalore 560001, India. Email: admin@sleepsystems.in

f /sertaindia @sertaindia /sertaindia



WE MAKE THE WORLD'S
BEST MATTRESS.™

www.sertaindia.com



इर्वेस्टन में संपादक।

वर्ल्ड मैगज़ीन प्रेस एडिटर्स की द्विवार्षिक बैठक का स्पष्ट निष्कर्ष यह था कि सभी 33 क्षेत्रीय पत्रिकाओं को एक समान रूप और स्पर्श को अपनाने की आवश्यकता है, विशेषरूप से पत्रिका के कवर के लिए।

इर्वेस्टन स्थित रोटरी अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय में विभिन्न क्षेत्रीय पत्रिकाओं के संपादक और सम्पादकीय बोर्ड के सदस्य बैठक हेतु एकत्रित हुए जहाँ उन्होंने विचारों का आदान प्रदान किया, सर्वोत्तम कार्य प्रणालियों को साझा किया और आगे की कार्यप्रणाली के ऊपर विचार-विमर्श किया।

उनके वीडियोग्राफिक सन्देश में, रो ई अध्यक्ष इयन रायसली ने कहा, “दुनियाभर में हमारे 1.2 मिलियन से भी अधिक सदस्यों के लिए रोटरी के मुद्दों पर एक नियमित पत्रिका का होना महत्वपूर्ण

है। चूँकि हमने रोटेरियनों द्वारा रोटरी पत्रिका के लिए भुगतान करना अनिवार्य कर दिया है, तो एक उच्च स्तर-मान को बनाए रखना और उनके पैसों के बदले गुणवत्ता प्रदान करना आवश्यक है।”

क्षेत्रीय संपादकों को “आपके द्वारा प्रकाशित की गई गुणवत्तापूर्ण पत्रिकाओं” के लिए बधाई देते हुए, उन्होंने कहा कि वह हर माह अधिकांश क्षेत्रीय पत्रिकाओं की समीक्षा करते हैं “और अधिकतर रोटेरियनों की तरह मेरा भी मानना है, कि पिछले कुछ वर्षों में पत्रिकाओं के स्तर-मान में उल्लेखनीय ढंग से सुधार आया है।” बेशक जो पत्रिकाएँ अंग्रेजी भाषा के अलावा अन्य भाषाओं में प्रकाशित थी,

उनमें उन्होंने केवल तस्वीरें देखी लेकिन वे “तस्वीरें भी उच्च गुणवत्ता वाली हैं।”

रायसली ने कहा कि गुणवान पत्रिकाएँ रोटरी को गैर रोटरी जगत में प्रस्तुत करने और “हमारी एक उत्कृष्ट सार्वजनिक छवि और एक अच्छी सम्मानित ब्रांड सुनिश्चित करने के उद्देश्य को भी पूर्ण करती हैं।”

पिछले कुछ वर्षों में, पत्रिकाओं की संख्याओं में बढ़ोतरी हुई है “और मैं समझता हूँ कि आधे से ज्यादा सदस्यों को अब एक ऐसी पत्रिका प्राप्त होती है जो उनके क्षेत्र विशेष की है। यह हमारी पत्रिका को हमारी सदस्यता के लिए और अधिक प्रासंगिक बनाता है।”



में रोटरी संपादकों की बैठक इवेंसटन

रशीदा भगत

सम्मेलन में अधिकांश चर्चा आगामी वर्षों में प्रिंट पर डिजिटल का कब्ज़ा होने की सम्भावना पर हुई, लेकिन प्रिंट के समर्थन में अधिक मत थे, जिनमें रोई संचार समिति के उपाध्यक्ष, और इस सम्मेलन के संयोजक, जॉन बर्नाडिन का मत भी शामिल था, जिन्होंने कहा कि पिछले वर्ष अकेले उत्तरी अमेरीका में 700 नई प्रिंट पत्रिकाएं शुरू हुई। उनके एक दोस्त ने दो साल पहले शिकागो के बाहर एक पत्रिका शुरू की थी; “यह लाखों डॉलर की सम्पत्ति वाले अमीरों के घरों में जाती है, लेकिन उसने मुझसे कहा कि उसे नहीं लगता लोग इसे पढ़ते होंगे। यह एक कॉफी टेबल पत्रिका है और एक प्रतिष्ठा-प्रतीक भी क्योंकि अगर आपके पास यह पत्रिका है तो लोग सोचते हैं कि आप अमीर लोगों में गिने जाते हैं।”

संपादकों को संबोधित करते हुए, रोई महासचिव जॉन ह्यूको ने कहा कि 130 देशों में 22 भाषाओं में 33 रोटरी पत्रिकाएँ छपती हैं

और 700,000 रोटेरियनों तक पहुँचती है। उन्होंने संपादकों से पत्रिका की विषय वस्तु या सामग्री को “इतना नवीन, सम्मोहक और उच्च गुणवत्ता वाला बनाने के लिए कहा ताकि भले ही इसका शुल्क अनिवार्य हो, फिर भी सदस्य इसे अपनी इच्छा और खुशी से खरीदें।”

क्लब की बैठकों में लचीलापन उन महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है जिसे पत्रिकाओं को संबोधित करना चाहिए। हालाँकि विधान परिषद ने इस तरह के लचीलेपन की अनुमति दी थी, फिर भी अधिकांश रोटरी क्लब लचीलेपन की अवधारणा या इसे व्यवहार में कैसे लाएं, को समझ नहीं पाए थे। रोई अध्यक्ष के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने ऐसी कई जगहों का दौरा किया जहाँ क्लबों ने सोचा कि लचीलेपन का अर्थ बैठकों की संख्या में कमी करके पैसे बचाना है! दूसरों को यह नहीं पता था की लचीलेपन को अपनाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए।

लेकिन दूसरी तरफ, बहुत से क्लब लचीलेपन को अपनाने के लिए अभिनव पद्धतियाँ अपना रहे थे लेकिन इसके बारे में वास्तव में सभी को पता नहीं था इसलिए पत्रिकाओं को ऐसे क्लबों के बारे में लिखना चाहिए जिन्होंने वास्तव में उनकी क्लब की बैठकों में लचीलेपन के घटक की शुरुआत की।

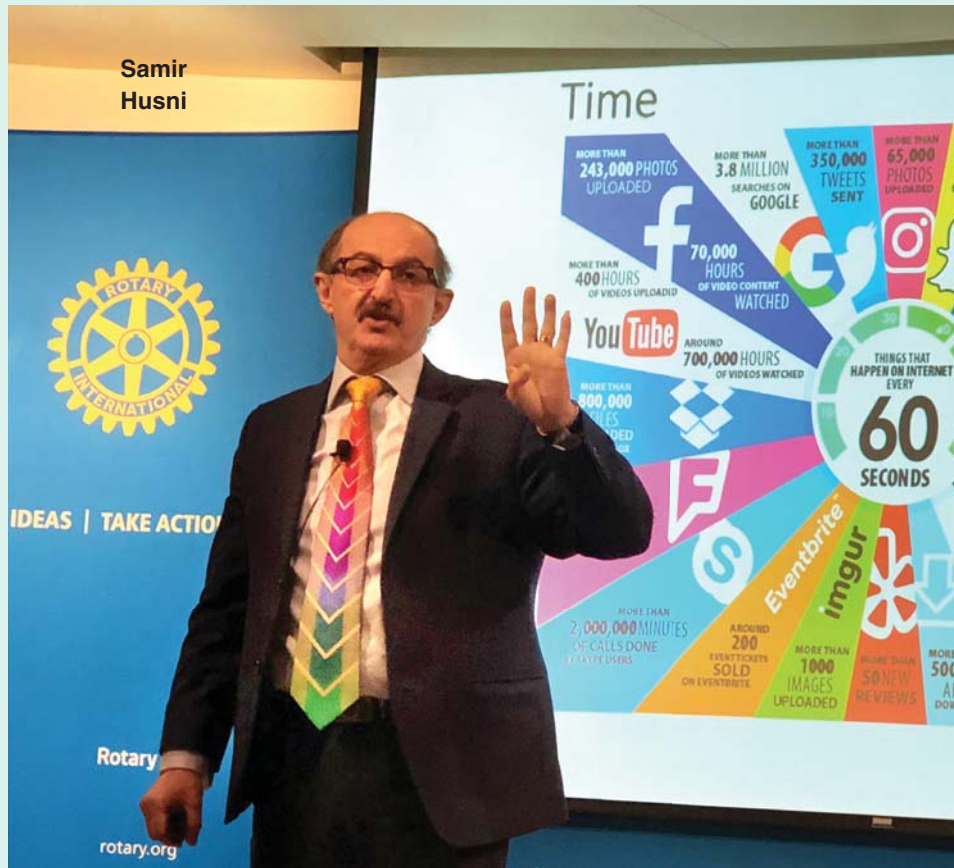
रोटेरियनों को यह बात सिखाने की जिम्मेदारी पत्रिकाओं की है कि उनकी निगरानी करने के लिए कोई “रोटरी पुलिस” नहीं है जो देखे कि वे अपनी क्लब की बैठकों में क्या करते हैं और कैसे करते हैं, जब तक क्लब विकसित होते रहते हैं और अपने समुदायों में परिवर्तन लाते रहते हैं। विभिन्न देशों में ऐसे आदर्श क्लबों का चुनाव करना जो लचीलेपन की अवधारणा को उत्तम ढंग से प्रदर्शित करते हैं और उनके बारे में लिखना एक अच्छा विचार होगा।

कहानियाँ कहने में माहिर बनिए बक्सा

एक रोचक सत्र में, पत्रिका उद्योग की एक अग्रणी पत्रिका के विशेषज्ञ और विश्लेषक, समीर हुस्नी, जो 'मिस्टर मैगज़ीन' उपनाम से लोकप्रिय है, ने प्रिंट की खासियतें बताई और कहा कि हम एक ऐसे सम्मोहक समय में रहते हैं जहाँ सामाजिक मीडिया, नकली खबरों और एक राष्ट्रपति जो एक ट्विटर अकाउंट के माध्यम से खबरों के साथ व्यस्त है, की भरमार है। 'तो जब एक राष्ट्रपति ट्वीट कर रहा है और लोगों से सीधे जुड़ रहा है, तो इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? आप कैसे पत्रकारों और संपादकों के रूप में सामाजिक मीडिया का इस्तेमाल करने जा रहे हैं?'

आज के समय में एक पत्रकार और एक संपादक होना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि एक ही खबर के इतने विभिन्न रूप होते हैं कि 'उसी घटना के बारे में CNN और *फॉक्स न्यूज़* की रिपोर्टिंग देखने के बाद, कभी-कभी मुझे हैरानी होती है कि कहीं मैं ही तो कुछ गलत नहीं समझ रहा!'

प्रिंट मीडिया के खत्म होने को लेकर पेश किये गए परिदृश्य की उपेक्षा करते हुए, उन्होंने कहा एक समय आईपैड को सामग्रियों का निस्तार समझा जाता था। उसके बाद स्मार्ट फ़ोन के अधिक से अधिक परिष्कृत प्रारूप सामने आए और सबने कहा प्रिंट जल्द ही खत्म हो जाएगा। 'लेकिन सोचिये क्या हुआ? हर्स्ट और मेरेडिथ (जिसने हाल ही में Time Inc खरीदी है), दो प्रकाशन दिग्गज, की 90 प्रतिशत से भी अधिक आय अब भी प्रिंट से आती है। पत्रिका *बेटर होम्स एंड गार्डन्स* की



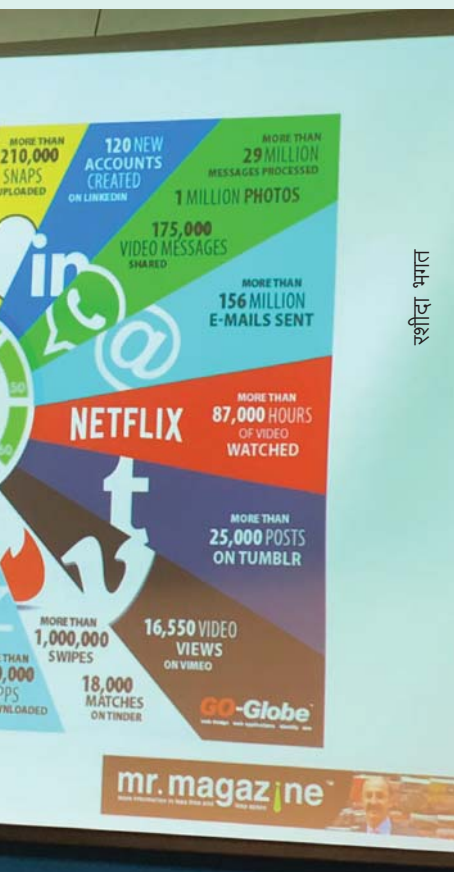
बिक्री प्रतियों की संख्या 7.6 मिलियन है। मेरा विश्वास कीजिये, जब आपके पास इस तरह का प्रसारण होता है, तो आप बहुत सारा पैसा कमाते हैं।'

लेकिन वेब जगत और सामाजिक मीडिया, जो सूचना प्रसारित करने में इतने तेज़ होते हैं, से मुकाबला करने के लिए 'आपको स्मार्ट, तेज़ होना पड़ेगा, और अपने दर्शकों को जानना शुरू करना होगा... आपके मामले में, एक विमोहित दर्शक।' लेकिन यहाँ कई सारी चुनौतियाँ हैं, जिनमें सबसे बड़ी चुनौती है मनुष्य की ध्यान अवधि में कमी। 'यह देखना रोचक है कि हमारी ध्यान अवधि कितनी छोटी है। ऐसा अनुमान है कि अमेरिकियों की ध्यान अवधि 12 सेकंड से गिरकर 8 सेकंड की हो गई है; अगर मैं 8 सेकंड में आपका ध्यान खींच सकता हूँ तो मैंने आपको अपने से जोड़ लिया है। इसलिए सामाजिक मीडिया पर कुछ विज्ञापनदाता 3,4 या 5 सेकंड के वीडियो बना रहे हैं। वैसे, एक गोल्डफिश की ध्यान अवधि 10 सेकंड की होती है!'

लेकिन इतनी कम ध्यान अवधि से भी, बहुत से लोग हमारा ध्यान आकर्षित करना चाह रहे हैं। 'कोई ना कोई हर वक्त आप तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है... हाल ही में, एम्स्टर्डम एयरपोर्ट की बाथरूम में, मैंने खुद को एक विज्ञापन का सामना करते हुए देखा!'

हुस्नी ने कहा कि आंकड़ों का एक संग्रह था जिसके अनुसार 'यह देखने के लिए आपको लगातार चार साल लगेगे कि यूट्यूब पर एक दिन में क्या अपलोड किया गया है। तो चलिए अगले चार सालों के लिए यूट्यूब की रंगीन पार्टी करते हैं!' उसी तरह, नेटफ्लिक्स पर, एक मिनट में 87,000 घंटों के वीडियो देखे जाते हैं। इसमें फेसबुक, स्नेपचैट और भी कई अन्य एप शामिल हैं, और परिदृश्य चौंका देने वाला है। 'सामाजिक मीडिया पर कोई लाल बत्ती नहीं होती... केवल हरी बत्ती होती है और सूचनाएं बस आती रहती हैं...'

लेकिन इन सभी इलेक्ट्रॉनिक सूचनाओं के बीच, प्रिंट की पकड़ मजबूत है। 'अमेरिकी



रशीदा भगत

राजकुमारी’ (मेघन मार्कल) के हाल ही में हुए शाही विवाह का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा, प्रिंट पत्रिकाएँ एक दूसरे से अधिक सफल होने के लिए चिंतित थी। टाइम पत्रिका ने शुक्रवार से लेकर बुधवार तक अपनी प्रकाशन समय-सारणी बदल दी थी क्योंकि वह इस खबर के साथ न्यूज़स्टैंड पर प्रथम रहना चाहता था। पत्रिकाओं ने अपनी कवर कीमतें बढ़ा दी थी। ‘सभी इस रोचक कार्यक्रम का हिस्सा बनना चाहते थे, और इस अमेरिकी राजकुमारी की खबर पहले कवर करना चाहते थे।’

उन्होंने संपादकों से जोर देकर कभी यह ना भूलने के लिए कहा कि ‘प्रिंट... चाहे किताबें हो या पत्रिकाएँ... और दर्शकों के मध्य एक रिश्ता होता है... आप एक रिश्ते के व्यवसाय में हैं, और प्रिंट और डिजिटल में वैसा ही अंतर होता है जैसा किसी के साथ एक रात गुजारने

में या एक प्रेम संबंध और जीवनभर शादी के बंधन में बंधे रहने में है।’

प्रिंट हमेशा प्रासंगिक रहेगा, हुस्नी ने कहा, लेकिन एक चेतावनी के साथ; ‘‘अब अच्छी सामग्री पर्याप्त नहीं है। आपको एक अनुभव प्रदान करना होगा।’’ अगर पत्रिकाएँ ऐसा करती हैं, तो अभी भी उनके ग्राहक होंगे। इन दिनों अमेरीका में एक पत्रिका की औसतन कीमत 13 युएस डॉलर है, और लोग मूल्यवान सूचना और एक अनुभव के लिए इसका भुगतान करने के लिए तैयार हैं।

इस बात की भविष्यवाणी करते हुए कि प्रिंट और डिजिटल मीडिया लम्बे समय तक सह-अस्तित्व में रहेंगे, उन्होंने कहा कि अधिकांश डिजिटल प्रकाशनों के लिए, विज्ञापन बहुत कम मात्रा में आते हैं। ‘‘संपूर्ण डिजिटल डॉलर का 85 प्रतिशत हिस्सा गूगल और फेसबुक के पास चला जाता है। बाकि बचे पूरे डिजिटल मीडिया को शेष 15 प्रतिशत के लिए संघर्ष करना पड़ता है।’’

हुस्नी ने संपादकों को चेतावनी भी दी: ‘‘यह मत सोचिये कि डिजिटल शरण स्थान है या किसी खराब प्रिंट उत्पाद का समाधान है। एक खराब उत्पाद, चाहे प्रिंट हो या डिजिटल, बाजार में नहीं टिकेगा।’’

उनकी समझदारीपूर्ण सलाह का मकसद प्रिंट और डिजिटल माध्यमों का एक वाजिब मिश्रण पेश करना था। ‘‘अगर मैं फ्लाइट में दी इकोनॉमिस्ट या वॉर एंड पीस पढ़ रहा हूँ, तो मैं इसे अपने हाथ में रखना चाहूँगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि लोग इसकी कागज़ी प्रति देखें और कहें: ‘वाह यह बंदा स्मार्ट है।’ लेकिन अगर मैं प्लेबॉय पढ़ना चाहता हूँ, तो मैं इसे अपने आईपैड पर पढ़ना चाहूँगा!’’

आकर्षक और प्रासंगिक बने रहने के लिए उनकी आखरी सलाह: ‘‘कहानियाँ कहने में माहिर बनिएँ... स्वच्छ पानी से वंचित बच्चों की कहानी इस तरह एक दमदार अंदाज़ में सुनाइए कि लोग अपनी कुर्सियाँ छोड़ दें, अपने वाइन के गिलास को एक तरफ कर दें और कार्यवाही करें... ’’

हर माह अधिकांश क्षेत्रीय पत्रिकाओं की समीक्षा करते हैं और अधिकतर रोटेरियनों की तरह मेरा भी मानना है, कि पिछले कुछ वर्षों में पत्रिकाओं के स्तर-मान में उल्लेखनीय ढंग से सुधार आया है।

रो ई अध्यक्ष **इयन रायसली**

अन्य क्लबों द्वारा ऐसे आदर्श क्लबों को दोहराया जा सकता है, ह्यूको ने कहा।

रो ई संचार समिति के अध्यक्ष और सम्मेलन के सह-संयोजक, ब्रेड होवार्ड, ने कहा कि दुनियाभर में रोटरी जो भी करती है, क्षेत्रीय पत्रिकाएँ उसकी ‘‘प्राथमिक आवाज़’’ हैं। इसके लिए एक ब्रांड की अत्यावश्यकता है और संचार विभाग ने हमारा ब्रांड अभ्यास शुरू किया था और ‘‘हमारे ब्रांड के मूल तत्वों की बुनियादी समझ के लिए बाजार में भी गए थे।’’ इसका परिणाम ‘‘कार्यवाही करने वाले लोग’’ अभियान था, जो हमारा मूल सार है और ‘‘जो वास्तव में हमारा मूलरूप है।’’ लेकिन रोटेरियनों और गैर रोटेरियनों दोनों को यह बताने के लिए कि ‘‘हम क्या हैं और क्या करते हैं,’’ रो ई बहुत अधिक क्षेत्रीय पत्रिकाओं पर निर्भर करती है।

क्षेत्रीय पत्रिकाएँ ‘‘एक असाधारण तंत्र’’ हैं जिनके पास अभिनव सामग्रियाँ जुटाने का अवसर होता है। और चूंकि एक रोटरी पत्रिका के लिए नाम-लेखन अनिवार्य है, तो इसके गुणवत्ता स्तरों को उच्च स्तर पर बनाए रखना होगा।

मुख्य संचार अधिकारी, डेविड एलेग्जेंडर ने सेमीनार के ध्यान केन्द्रित करने वाले मुख्य प्राथमिक बिन्दुओं को संबोधित किया: गुणवत्ता और सन्देश में सुधार करें, संचार के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का निर्माण करें, अपने पाठकों को करीब रखने के लिए साधनों का निर्धारण करें और उनका उपयोग करें, एक साथ मिलकर कार्य करें और एक ऐसा संचार उपकरण, जिसकी रोटेरियनों को आवश्यकता है और उनके लिए जिसके मान्यते हैं, प्रदान करने की दिशा में आगे बढ़ते रहे।

रूपरेखा : एन कृष्णमूर्ती



Our Esteemed Guest

Rtn Barry Rassin & Ann Esther
RI President 2018-19



Rotary Institute 2018
Chennai | 5-7th October
Zone 4, 5 & 6A

Convener's Message



RID Basker Chockalingam
Ann Malathi

Dear Rotary Leaders,

Rotary Zone Institutes give opportunity to Rotary leaders, past, present and future, to meet and greet each other, exchange ideas and debate on how to take Rotary forward. **Malathi & I** deem it a privilege and pleasure, to invite you and your spouse, to Rotary Institute 2018, to be held during October 5-7, 2018, at **Hotel Leela Palace, Chennai**. With a set of wonderful speakers and world class entertainment, this will be truly an Institute with a difference. We will have the rare opportunity of having with us the Rotary senior leadership, who will make the event a memorable one for us. The dynamic Institute Chairman PDG ISAK Nazar and his wonderful team are making every effort, to ensure that, we all have a grand Rotary Institute 2018 — **Passion To Serve** — at Chennai.

With warm regards,

RID Basker Chockalingam, RI Director (2017-19)

Chairman's Message



Ann Afzalunnisa
PDG ISAK Nazar

Dear Rotary Leaders,

Greetings from Team — Rotary Institute 2018.

It's a great opportunity given by Director / Convener Rtn C Basker to have our **Rotary Institute 2018** at Chennai, at the grand venue — **Hotel Leela Palace, Chennai** — on 5th, 6th and 7th October 2018. Please be ready to witness one of the most memorable Rotary Institute at Chennai. We are all set to deliver an outstanding and memorable Institute. With a galaxy of eminent speakers, a new experience in entertainment and all that a successful Rotary Institute can be remembered for, awaits you. On behalf of Rotary Institute 2018 Team, I welcome you to **Passion to Serve, Rotary Institute 2018**. Please register immediately.

PDG ISAK Nazar

Chairman — Rotary Institute 2018



Please send this form duly filled by post / courier to:

Rtn PDG ISAK Nazar, Chairman, Rotary Institute 2018

Manna Foods, 129, Z Block, 6th Avenue, Anna Nagar, Chennai – 600 040, Phone: 044 2683991, Mobile: 94449 76846
e-mail: rotaryinstitute.chennai2018@gmail.com, nazarisak@gmail.com

REGISTRATION DATA SHEET



Name: Rtn. Call / Badge Name:.....

Classification:

Address:

City: Pin Country

Mobile: e-Mail:

(Note: Include country and area code for Telephone / Fax Number)

☐ PDG ☐ IPDG ☐ DG ☐ DGE ☐ DGN ☐ DRFC ☐ DMC ☐ DRC

Home Club: RI District:

Name of Spouse: Call Name:

Food Preference			Collar size				
	Rotarian	Spouse					
Veg	☐	☐	☐ 38	☐ 40	☐ 42	☐ 44	☐ 46
Non Veg	☐	☐					

REGISTRATION			Couple	Single	Amount
Institute Registration	Couple	Single			
Upto 30th June 2018	INR 25000	INR 15000			
After 30th June 2018	INR 26000	INR 17000			
GETS (Couple)	2,3,4 October 2018	INR 60000			
DGs Training Seminar	4th October 2018	INR 5000 per Person			
DGN Training Seminar	4th October 2018	INR 5000 per Person			
Dist Trainers Seminar	4th October 2018	INR 5000 per Person			
COL Seminar	4th October 2018	INR 5000 per Person			
TRF Dinner	4th October 2018	INR 5000 per Couple INR 3000 per Single			
TRF Seminar	5th October 2018	INR 5000 per Couple INR 3000 per Single			

HOTEL ACCOMODATION

The Leela Palace	Double Executive	INR 10000 Per Nite			
	Single Executive	INR 9000 Per Nite			
Ramada Plaza	Double Deluxe	INR 8000 Per Nite			
	Single Deluxe	INR 7000 Per Nite			
The Savera Hotel	Double Deluxe	INR 7000 Per Nite			
	Single Deluxe	INR 6000 Per Nite			
Total					

*Kindly tick whichever is applicable.

*Please note that the Accomodation is purely on first come first serve basis.

The cheque and draft shall be in favour of "Rotary Institute 2018" payable at Chennai.	Online payment details: Account Name: Rotary Institute 2018 Bank: Karur Vysya Bank Branch: Saidapet, Chennai - 15 Account No.: 1651155000067299 IFSC Code: KVBL0001651
---	---

The Institute registration covers the following:

- Inaugural plenary on Friday, Oct 5, 2018 followed by dinner.
- Lunch and dinner on Saturday, Oct 6, 2018.
- Lunch on Sunday, Oct 7, 2018.

The other events such as GETS (Couple), DG Seminar, Membership Seminar, DGN Seminar, COL, TRF Seminar, Foundation Dinner have additional registration as mentioned above.

Date:

Signature:



स्कूल छोड़ देने वाली लड़कियों के लिए दूसरा मौका

रशीदा भगत

मीरा पंजवानी, 'सेकेंड चान्स'
परियोजना की छात्राओं के साथ।



दि

ल को छू लेने वाली एक परियोजना के अंतर्गत, अंकलेश्वर का रोटरी क्लब, रोई मंडल 3060, ऐसी लड़कियों और युवा महिलाओं की पहचान करने के एक अभियान पर है जिन्होंने विभिन्न कारणों से स्कूल छोड़ दिया था, और वह यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि वे सभी उनकी 10वीं कक्षा की पढ़ाई पूर्ण करें और सार्वजनिक परीक्षा में शामिल हो।

इस परियोजना, जो पीडीजी अशोक पंजवानी के दिमाग की उपज है, को उनकी पत्नी और क्लब की पूर्व अध्यक्ष मीरा पंजवानी के नेतृत्व में लागू किया जा रहा है। “वित्तीय कारणों सहित विभिन्न कारणों से, किशोर लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं और कक्षा

10वीं तक की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाती,” मीरा कहती है। लेकिन उनमें से कई लोगों ने लम्बे समय से कम-से-कम उनकी स्कूली शिक्षा को पूर्ण करने का सपना देखा है। इसलिए “सेकेंड चान्स” (दूसरा मौका), जैसा कि इस परियोजना का नाम है, उन्हें ऐसा करने का अवसर प्रदान करता है।

अब इसके तीसरे वर्ष में यह परियोजना एक मजबूत स्थिति में आ रही है, वह आगे कहती है। उन लड़कियों/महिलाओं की पहचान कैसे की जाती है के बारे में पूछे जाने पर वह कहती है, “अंकलेश्वर के आसपास के गाँवों में इन लड़कियों का पता लगाने के लिए हमने NGO ‘प्रथम’ के कर्मचारियों को नियुक्त किया है, और फिर हम प्रथम के शिक्षकों

को इन लड़कियों को प्रशिक्षित करने और इन्हें कक्षा 10वीं की सार्वजनिक परीक्षा हेतु तैयार करने के लिए वेतन देते हैं। स्कूल छोड़ देने वाले जिन विद्यार्थियों को उन्होंने प्रशिक्षित किया है उनकी उम्र 15-30 वर्ष है।”

पहले वर्ष, उन्हें 106 स्कूल छोड़ देने वाली महिलाएं/लड़कियाँ मिली और उन्हें गाँवों के छह अलग-अलग केन्द्रों पर प्रशिक्षित किया गया जिसके लिए क्लब ने किराया भरा था। उनके पहले प्रयास में 106 में से 80 लड़कियाँ पास हो गईं और फिर 30 अन्य लड़कियाँ सफल हुईं। अगले वर्ष 56 विद्यार्थी थे जिनमें से 48 लड़कियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की थी, और तीन लड़कियाँ परीक्षा में शामिल नहीं हुई थी।

“लेकिन जब छह अलग-अलग प्रशिक्षण केन्द्रों के लिए किराया भरने का यह प्रयोग बहुत ही महंगा





पढ़ने लगा, तो हमने अपनी स्वयं की जगह की व्यवस्था करने का फैसला किया और अब हमने महिला सशक्तिकरण केंद्र के बगल में एक और हॉल खरीदा है जिसे वर्तमान में हम अपने स्वयं के परिसर में चला रहे हैं। क्लब के रोटेरियनों, ONGC और झागड़िया उद्योग संघ, जिसके अध्यक्ष पीडीजी पंजवानी हैं, के द्वारा दिए गए धन से इसके लिए ₹27 लाख इकट्ठा किये गए।

यह परियोजना स्वयं भी क्लब द्वारा इकट्ठा की गई राशी और एक वैश्विक अनुदान की मदद से लागू की जा रही है। “यह काफी महंगी है... हम इस परियोजना के तीसरे वर्ष में हैं और हम पहले ही ₹36 लाख खर्च कर चुके हैं, लेकिन हमें लगा कि हमें इसे जारी रखना चाहिए क्योंकि हम इन लड़कियों और युवा महिलाओं को एक नयी उम्मीद, गरिमा और भविष्य दे रहे हैं,” मीरा कहती है।

स्कूल छोड़ देने के कारणों के बारे में पूछे जाने पर वह कहती है इसके कारणों में माता-पिता भी शामिल हैं जिन्हें “घर के कार्य करने में लड़कियों की आवश्यकता होती है, और कई बार माँ, जो दूसरों के घरों में कार्य करती है, उन्हें अपने साथ अपना स्वयं का बोझ कम करने हेतु ले जाती है।” इससे भी बदतर, बहुत से माता-पिता “उनकी जल्दी शादी करने के लिए लड़कियों का स्कूल छुड़वा देते हैं और हमारे पास ऐसी लड़कियाँ हैं जिन्होंने कक्षा 5, 7 या 9 के बाद स्कूल छोड़ दिया था। कुछ माता-पिता अभी भी उनकी लड़कियों को प्रशिक्षण के लिए भेजने हेतु अनिच्छुक थे लेकिन चूंकि लड़कियों को दिलचस्पी थी इसलिए हमने उन्हें प्रशिक्षण केंद्र लाने के लिए ऑटो का किराया भी दिया,” मीरा आगे कहती है।

इस प्रयोग का परिणाम लाभप्रद रहा। बहुत सी लड़कियों ने आगे की पढ़ाई के लिए रुचि दिखाई और अब उन्हें कक्षा 11 और 12 की पढ़ाई हेतु प्रशिक्षित किया जा रहा है और पांच लड़कियाँ कंप्यूटर कक्षाओं के लिए गई हैं।

वह आगे कहती है कि इन लड़कियों के चेहरे पर उत्साह, मुस्कराहट और खुशी के अलावा, इनका कभी हार ना मानने वाला स्वभाव अधिक प्रोत्साहक है। “और जो लड़कियाँ फेल हो गई, उन्होंने कहा कोई बात नहीं, हम फिर से कोशिश करेंगे!” ■



पीडीजी अशोक पंजवानी, पीआरआईडी मनोज देसाई की उपस्थिति में प्रमाण पत्र देते हुए।

टाटा टेक्नोलॉजीज़ ने टीआरएफ के साथ रु1 करोड़ के MoU पर हस्ताक्षर किए

जयश्री जयरामन



वाएं से : मंडल 3131 के डीजी अभय गाडगिल, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, टाटा टेक्नोलॉजीज़ कारपोरेट सस्टेनबिलिटी हेड अनुभव कपूर, DCSRC राकेश भार्गव, RISAO के टीआरएफ प्रबंधक संजय परमार और RFI CSR सब कमेटी के उपाध्यक्ष विनोद बंसाल।

टाटा टेक्नोलॉजीज़ क्षेत्र के स्कूलों में ई-लर्निंग कार्यक्रम उपलब्ध कराने के लिए मंडल 3131, विशेष रूप से रोटरी क्लब पुणे नॉर्थ के साथ साझेदारी करती रही है। अब कंपनी रोटरी के साथ अपनी साझेदारी के दायरे को बढ़ाना चाहती है और संपूर्ण भारत में बुनियादी शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में इसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना चाहती है। इस पृष्ठभूमि के साथ, 1 मई, 2018 को टाटा टेक्नोलॉजीज़ के साथ डीजी अभय गाडगिल, पीडीजी विनय कुलकर्णी और डीसीएसआरसी राकेश भार्गव ने साझेदारी के लिए विचार-विमर्श शुरू किया।

आरआईएसएओ और टाटा टेक्नोलॉजीज़ के सीएसआर टीम के बीच कई दौरा की चर्चाओं के बाद, संपूर्ण भारत में परियोजनाओं को लागू करने के लिए 8

टाटा टेक्नोलॉजीज़ रोटरी के साथ अपनी साझेदारी के दायरे को बढ़ाना चाहती है और संपूर्ण भारत में बुनियादी शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में इसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना चाहती है।

जून को ₹1 करोड़ के एक समग्र एमओयू पर हस्ताक्षर किया गया। टाटा टेक्नोलॉजीज़ के सीएसआर टीम और टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और जीएचसीएल लिमिटेड के सीएसआर प्रतिनिधि के साथ मंडलों 3011, 3012 और 3131 के प्रतिनिधियों के समक्ष समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। यह सीएसआर फंड शिक्षा के क्षेत्र में फाउंडेशन के चार वैश्विक अनुदानों को सहयोग करेगा।

टाटा टेक्नोलॉजीज़ और आरआईएसएओ की सीएसआर टीम बुनियादी साक्षरता और शिक्षा के क्षेत्र में इस परियोजना को लागू करने के लिए मंडलों और क्लबों की पहचान के लिए इस चर्चा को और आगे जारी रखेगी।

लेखिका सीएसआर और WinS,
रोटरी फाउंडेशन - RISAO की प्रबंधक है।

रोटरी क्लब आगरा ग्रैंड ने वंचित मरीजों के लिए कैथ लैब दान किया

टीम रोटरी न्यूज

स्वास्थ्य देखभाल की बढ़ती लागतों को पूरा करने में सामान्य लोगों द्वारा सामना किए जाने वाले कठिनाईयों और आघातों को महसूस करते हुए, विशेष रूप से हृदय से संबंधित बीमारियों में, रोटरी क्लब आगरा ग्रैंड, मंडल 3110 के रोटेरियन ने उत्तर प्रदेश के एक छोटे से शहर फिरोजाबाद में कार्डियक कैथेटराइजेशन लैब स्थापित करने का निर्णय लिया।

ऐसा करने के पीछे विचार यह था कि आसपास के ग्रामीण इलाकों के लोगों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा निदान और स्वास्थ्य देखभाल का लाभ प्रदान किया जाए क्योंकि कानपुर शहर से लगभग 225 किमी दूर स्थित-सेवार्थ संस्थान सेठ बिमल कुमार जैन ट्रॉम और फिजियोथेरेपी धर्मार्थ समिति केंद्र - एक विशाल ग्रामीण आबादी की स्वास्थ्य देखभाल की जरूरतों को पूरा करने में निरंतर तत्पर रहती है।

इस क्लब के रोटेरियन के अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप, केंद्र को 63,750 डॉलर (₹ 2.43 करोड़) की लागत वाली वैश्विक अनुदान परियोजना का लाभार्थी बनने का अवसर प्राप्त हुआ और

इस अनुदान के माध्यम से इस ट्रॉम केंद्र को पूरी तरह से सुसज्जित अत्याधुनिक कैथ लैब दान किया गया। इस क्लब के सदस्य और परियोजना के प्रमुख पीडीजी शरत चंद्र ने कहा कि परियोजना के लिए धन मदनलाल गोयल द्वारा शु.रू.में दिए गए मुक्तहस्त दान के माध्यम से एकत्र किए गए थे, जिनके परिवारिक उद्यम आरडीएस प्रोजेक्ट लिमिटेड ने 175,000 डॉलर का योगदान सीएसआर में दिया था।

“उस समय, वह एक रोटेरियन नहीं थे, लेकिन अब वह हमारे क्लब के एक सदस्य बन चुके हैं, जिसके बाद हमने उनसे उदार दान के लिए संपर्क किया था और उन्होंने हमें निराश नहीं किया। इसके बाद, रोटरी क्लब आगरा ग्रैंड के अन्य सदस्यों ने इस परियोजना के लिए दान दिया और इसके परिणामस्वरूप टीआरएफ के विश्व कोष से उसके बराबर योगदान प्राप्त हुआ,” पीडीजी चंद्र ने कहा।

उन्होंने कहा कि क्लब ने इस परियोजना को कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों, विशेष रूप से कोरोनरी हृदय रोग के उपचार के केंद्र के रूप में निष्पादित करने का निर्णय लिया है, क्योंकि इस बीमारी ने

दुनिया भर में और विशेष रूप से भारत में महामारी का रूप धारण कर लिया है। यह रोग अक्सर धूम्रपान, मधुमेह, उच्च रक्तचाप,

उदर के मोटे होने, मनोवैज्ञानिक तनाव, अस्वास्थ्यकर आहार आदि के कारण होता है, और उपचार आम लोगों के सीमित साधनों से



बाहर होता है। चूंकि एक कैथ लैब कोरोनरी एंजियोग्राफी समेत हृदय रोग के कारणों का पता लगाते हुए ऐसी बीमारियों का व्यापक निदान कर सकता है, इसलिए यह उपकरण स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

टीआरएफ के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने कैथ लैब का उद्घाटन किया, “और हमें अस्पताल प्रबंधन द्वारा आश्वासन दिया गया है कि निदान सुविधाओं और उपचार उन लोगों को बहुत कम लागत पर उपलब्ध कराया जाएगा जो निजी अस्पतालों की अधिक लागतों को सहन करने में सक्षम नहीं हैं। उन्होंने हमें यह भी बताया है कि उन मरीजों का उपचार करने से इंकार



बाएँ से : पी के जिंदल अस्पताल के अध्यक्ष, पीडीजी शरत चंद्र, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, GHCL के एम डी आर एस जालान, RISAO से जयश्री जयरामन, संजय परमार और भावना वर्मा।

नहीं किया जाएगा जो मामूली शुल्क भी देने में समर्थ नहीं हैं,” उन्होंने आगे कहा।

परियोजना का नेतृत्व करने वाले चंद्र ने कहा कि ट्रस्टी गुप्ता ने जोर दिया कि कैथ लैब के कार्य को शुरू करने के लिए औपचारिक उद्घाटन की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, इसलिए औपचारिक उद्घाटन से कुछ दिन पहले ही केंद्र में हृदय के देखभाल की सेवाएं शुरू की गई थीं।

परियोजना के सफल निष्पादन के लिए उन्होंने टीआरएफ और अपने क्लब - रोटरी क्लब आगरा ग्रैंड - के सदस्यों को धन्यवाद दिया। गुप्ता ने अत्यधिक सस्ती वाली लागत पर गरीबों और वंचित लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए अस्पताल की सराहना की।

गुजरात हैवी केमिकल्स लिमिटेड (GHCL) के प्रबंध निदेशक आरएस जालान ने इस केंद्र के कुछ अन्य उपकरणों के लिए अपने सीएसआर फंड से ₹ 2 करोड़ दान किया, वे भी पीडीजी राजीव टंडन, डीजीएन दिनेश चंद शुक्ला और रोटैरियन मनमोहन सालुजा शिव राज भार्गव, रवि प्रकाश अग्रवाल और लक्ष्मी कांत बंसल की उपस्थित बैठक में शामिल हुए।■

चेन्नई में DG

के विश्वनाथन



जयश्री



बाएँ से : रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट कार्यालय में पॉल हैरिस की मूर्ति के साथ डीजी गण प्रवीण गोयल (3080), बाबु पराम (3232), सुभाष जैन (3012), राजीव शर्मा (3030) और शशि शर्मा (3141)।

ईयों की बैठक



रशीदा भगत

बाएँ : चेन्नई में (बाएँ से बैठे) पीआरआईडी गण अशोक महाजन, बाई पी दास, आरआईडी सी भास्कर, पी आरआईडी पी टी प्रभाकर, डीजी विष्णु मोंडे और आरआईडीई भरत पांड्या के साथ नए डीजी गण।

ऊपर : आई पीडीजी विवेक कुमार, डीजी गण राजीव शर्मा और पिकी पटेल के साथ सेल्फी लेते हुए। पीडीजी टी एन सुब्रमणियन भी चित्र में शामिल हैं।



जयश्री

RNT की कार्यकारी समिति के सदस्य शशि शर्मा, ए वी पाथी, (कोषाध्यक्ष) राजीव शर्मा (चेयर), सुभाष जैन और पिकी पटेल, आरआईडी सी भास्कर के साथ।

90 दशक के सुखद अहसास वाले अतीत की स्मृति

वी मुत्तुकुमारण

जैसा कि मद्रास के रोटरी क्लब ने अपने 90वें वर्ष में प्रवेश किया है, सदस्य अतीत के लिये लालायित हो गए हैं और सुखद अहसास वाले अतीत की स्मृति की गलियों में घूमने हुए उन घटनाओं को याद करते हैं कि किन लोगों ने अपनी निःस्वार्थ सेवाओं के बल पर क्लब के निर्माण में योगदान दिया है।



बाएं से : रोटेरियन गण अरुलमोळी वर्मन, कपिल चिटाले, एस गुणशेखर, रवि कटारी, एस सी शंकर, डीजी आर श्रीनिवासन, नंदिता कृष्णन, वी के चंद्रकुमार, क्लब अध्यक्ष पी एन मोहन, एन के गोपीनाथ, विजय भारती, निखिल राज, विवेक हरिनारायणन, पीडीजी एस कृष्णस्वामी और क्रिस्टोफर देवप्रकाशम।

क्लब की 90वीं जयंती मनाने के लिए आयोजित एक विशेष समारोह में रोस्ट्री क्लब मद्रास और उसके नेताओं द्वारा सरकार, एनजीओ और अस्पतालों के साथ साझेदारी के माध्यम से संसार के इस हिस्से से पोलियो को खत्म करने में क्लब के समर्थन का प्रचार किया जाया।

उन्हें मंडल 3232 में उनके कार्यों के लिए शुभकामनाएँ देते हुये डीजी आर श्रीनिवासन ने कहा कि “आरसीएम द्वारा प्रदान की जाने वाली विपत्ति

में सहायता सेवा बार-बार स्मरण करने लायक है, क्योंकि मैं पहले ही देख चुका हूँ कि एसएल चिटले और उनकी समर्पित टीम ने 80 के दशक में पोलियो को जड़-मूल से समाप्त करने की लड़ाई को जीतने के लिए प्रयोगशालाओं और स्वास्थ्य एजेंसियों के साथ कैसे मिलकर काम किया था। किसी भी डीजी के लिए, आरसीएम के साथ काम करना और समन्वय करना बड़ी खुशी बात है जिसका नेतृत्व बड़ा सोचता हैं और बड़ी परियोजनाओं को निष्पादित करता हैं।”

उनकी यात्राओं के दौरान, सदस्यों द्वारा टीआरएफ में योगदान देने में वृद्धि हुई थी, जो एक सकारात्मक संकेत है, और उन्होंने भारत के तीसरे सबसे पुराने क्लब को “दोस्ती का किला और सेवा का मंदिर” कहते हुए प्रशंसा के पुल बाँध दिए।

यह क्लब के लिए अत्यंत ही सम्मानजनक है कि इसके भूतपूर्व अध्यक्ष एन के गोपीनाथ और एसएन श्रीकांत टीआरएफ की पोलियोप्लस कमेटी से पोलियो मुक्त दुनिया के लिए अंतर्राष्ट्रीय सेवा पुरस्कार प्राप्त करने के लिए चार भारतीयों (सात वैश्विक



रोटेरियन) में शामिल थे। उन्हें टेरेंटो में आयोजित रोटरी सम्मेलन में पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

समृद्ध इतिहास

अपने संबोधन में, पूर्व क्लब अध्यक्ष गोपीनाथ ने कहा क्लब की पहली बैठक 10 मई, 1929 को कोनेमारा होटल में हुई थी और सभी 30 चार्टर सदस्य गैर-भारतीय (27 ब्रिटिश, दो स्विस और एक अमेरिकी) थे। क्लब को 19 जुलाई, 1929 को चार्टर्ड किया गया था। मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के चेयरमैन सी जी आर्मस्ट्रॉंग क्लब के पहले अध्यक्ष थे और उद्योगपति राजा सर एम अमुथिया चेन्नै क्लब में शामिल होने वाले पहले भारतीय थे। हालाँकि, यह मद्रास प्रेसीडेंसी में जस्टिस पार्टी से गृह मंत्री सर मोहम्मद उस्मान थे, जो 1935-36 में अध्यक्ष बनने वाले पहले भारतीय थे।

यूरोप, एशिया और सुदूर पूर्व में क्लब स्थापित करने के लिए एक जनादेश के साथ कनाडा के कैलीगरी के रोटरी कमिश्नर जेम्स व्हीलर डेविडसन के आगमन के समय से भारत में रोटरी के विकास की खोज की। इस कठिन कार्य को पूरा करने के लिए डेविडसन को मात्र 8,000 डॉलर का बजट दिया गया था। “हालाँकि, उन्होंने कार्य के जुनून के साथ यूरोप, मध्य-पूर्व, एशिया और सुदूर पूर्व में दो वर्षों (1929-30) में 23 रोटरी क्लब स्थापित करने के लिए अपनी जेब से 250,000 डॉलर खर्च किया।” उन्हें अक्सर रोटरी का मार्को पोलो कह कर संबोधित किया जाता है, डेविडसन की अग्रणी भूमिका को भारत में रोटेरियन द्वारा मनाया जाना चाहिए, क्योंकि कई बाधाओं के बावजूद - “उन्होंने अनेक बार मद्रास ग्रीष्मकालीन गमी का सामना किया” और उस समय

किसी भी डीजी के लिए, आरसीएम के साथ काम करना और समन्वय करना बड़ी खुशी बात है जिसका नेतृत्व बड़ा सोचता है और बड़ी परियोजनाओं को निष्पादित करता है।

डीजी आर श्रीनिवासन



रोटरी क्लब मद्रास के निर्वाचित अध्यक्ष डॉ विजय भारती, अध्यक्ष पी एन मोहन (दाएँ) और (बाएँ) निखिल राज की उपस्थिति में डीजी आर श्रीनिवासन को एक चेक प्रस्तुत करती हुई।

बहुत कम फैलोशिप प्राप्त होता था, उन्होंने याद करते हुए कहा कि दक्षिण भारत में इस तरह के एक संगठन के विचार को फैलाने वाले वह पहले रोटेरियन थे।

यह डेविडसन थे जिन्होंने वर्ष 1932 में मध्य एशिया क्षेत्र में आरआई के मानद आयुक्त के रूप में यूपीएसआई के उपाध्यक्ष के रूप में सर फ्रेडरिक ई जेम्स की अनुशंसा की, जिसके परिणामस्वरूप कलकत्ता में प्रथम रोटरी सम्मेलन का आयोजन किया जा सका। सर जेम्स (उन्हें 1941 में नाइट की उपाधि से विभूषित किया गया था), आरसीएम के चार्टर सदस्य, 1933-34 की अवधि में भारत के पहले आरआई निदेशक थे। वह 1936-37 में मंडल 89 के पहले गवर्नर भी थे, जिसके दौरान मद्रास में पहला मंडल सम्मेलन आयोजित किया गया था और उन्होंने 1938-39 तक दूसरा कार्यकाल भी पूरा किया।

अध्यक्ष पी एन मोहन ने अपने संबोधन में, कहा, “हम एक ऐतिहासिक वर्ष में हैं क्योंकि क्लब सेवा कार्य के अपने 90वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।” क्लब को एक असाधारण इतिहास प्राप्त हुआ है। उन्होंने पुष्टि करते हुए कहा कि क्लब को दुनिया में ‘सबसे बड़ी दवा जागरूकता कार्यक्रम’ संचालित करने के लिए गिनीज प्रमाण-पत्र प्राप्त होगा और युवा सेवा

अध्यक्ष एम शोषा साई को इस उपलब्धि के लिए धन्यवाद दिया।

इस रोटरी वर्ष (2017-18) में 82,000 एकत्र किया गया है और उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि वह 30 जून तक शेष राशि 18,000 को एकत्र करके लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होंगे। उन्होंने सदस्यों से पोलियो फंड में उदारतापूर्वक योगदान देने का आग्रह किया।

फ्टीआरएफ अध्यक्ष पॉल नेटजेल् ने अगले तीन वर्षों में 1.5 बिलियन एकत्र करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने सदस्यों को सलाह दी, “हम स्कूल इनटू स्माइल्स और मेडिकल सेंटर जैसे कई वैश्विक अनुदान परियोजनाएं फाइल करने जा रहे हैं, इसलिए कृपया रोटरी को आगे बढ़ाने के लिए योगदान दें।”

इससे पहले, आरसीएम के अध्यक्ष-नामांकित डॉ विजया भारती ने टीआरएफ के लिए डीजी श्रीनिवासन को 10,000 डॉलर का चेक प्रस्तुत किया। मोहन ने डीजी श्रीनिवासन, पीडीजी और अनुभवी रोटेरियन की उपस्थिति में क्लब के 90वें वर्ष की सेवा के उपलक्ष्य में केक काट कर उत्सव मनाया।

चित्र: वी मुत्तुकुमारण

कृषि में सामाजिक और लैंगिक निष्पक्षता सुनिश्चित करें: एम एस स्वामीनाथन

टीम रोटरी न्यूज़



प्रोफेसर एम एस स्वामीनाथन अपनी स्वीकृति भाषण देते हुए। उनके बाईं ओर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व सचिव डॉ टी रामसामी हैं।

प्रतिष्ठित कृषि वैज्ञानिक प्रोफेसर एम एस स्वामीनाथन, एम एस स्वामीनाथन अनुसंधान संस्थान, चेन्नई, के संस्थापक, को 'मानवजाति के लिए उनके अद्वितीय योगदान' के लिए चेन्नई में संस्थान में आयोजित हुए एक विशेष सम्मेलन में, ITM यूनिवर्सिटी, ग्वालियर, द्वारा डॉक्टर ऑफ़ लेटर्स (D Lit) की डिग्री प्रदान की गई। प्रोफेसर स्वामीनाथन को डिग्री प्रदान करते हुए, डॉ कमल कान्त द्विवेदी, ITM यूनिवर्सिटी, ग्वालियर के कुलपति, ने संस्कृत का एक कथन सुनाया जिसका अनुवाद

है: "निस्वार्थ सेवाभाव से बढ़कर कोई और सेवा नहीं है जो दूसरों को खुशी देती हो। यह प्रोफेसर स्वामीनाथन के जीवन और उनके कार्यों का उचित वर्णन है।" यूनिवर्सिटी द्वारा उन्हें और संस्थान को प्रदान किये गए सम्मान के लिए धन्यवाद करते हुए, इन कृषि वैज्ञानिक, जो रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट के एक सम्मानित सदस्य भी हैं, ने कहा संवहनीय विकास लक्ष्य 2 (शून्य भूख) केवल संवहनीय कृषि के माध्यम से ही हासिल किया जा सकता है, और उन्होंने ITM यूनिवर्सिटी को 1,000

कृषि स्नातक देने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह जरूरी है कि कृषि में उच्च शिक्षा में अर्थशास्त्र और नैतिकता के ज्ञान के साथ-साथ सामाजिक और लैंगिक समानता के आयाम भी शामिल हों।

नैतिक पहलू के महत्व पर जोर देते हुए, विशेषरूप से नई खोजों को पेटेंट करने के संबंध में, उन्होंने कहा कि निष्पक्षता और समानता सुनिश्चित करने के लिए संस्थानों का समझना जरूरी है। उन्होंने स्विस् सरकार का उदाहरण दिया जिसने गोल्डन राइस किस्म के लिए पेटेंट खरीदे और उसे सभी विकासशील

देशों को या तो मुफ्त में या बहुत ही कम कीमत पर उपलब्ध करवाए। यह अनुकरण किये जाने वाला आदर्श है, उन्होंने जोर देकर कहा।

प्रोफेसर स्वामीनाथन ने कहा, "जैव विविधता संरक्षण संवहनीय कृषि में एक महत्वपूर्ण कदम है" और उन्होंने उदाहरण दिया कि कैसे आज चावल की उपलब्ध हजारों किस्मों के लिए किसानों की मेहनत जिम्मेदार है, जिन्होंने वास्तव में इनका आविष्कार किया। "चावल की पहली कृषक महिलाएं थी," वैज्ञानिक ने कहा, यह देखते हुए कि अलॉग, अरुणाचल प्रदेश का एक नगर, के एक मंदिर में एक महिला की तस्वीर है, जिसे स्थानीय लोग चावल की खेती की शुरुआत करने वाली मानते हैं।

डॉ टी रामास्वामी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व सचिव, ने प्रोफेसर स्वामीनाथन को बधाई देते हुए, वास्तविकता और अनुसंधान एवं विकास के मध्य अलगाव पर प्रकाश डालते हुए कृषि अनुसंधान को पुनः परिभाषित करने की मांग की। उन्होंने लोक-केन्द्रित विज्ञान, या ऐसा "विज्ञान जो लोगों की जिंदगियों में मूल्य जोड़े, के विकास की आवश्यकता" पर बात की। प्रोफेसर स्वामीनाथन के सभी कार्यों का आधार इसी सिद्धांत पर केन्द्रित है, उन्होंने कहा। ■



रोटेरियनों ने एक गाँव को हरा-भरा कर, प्रवासन को उलट दिया

किरण जेहरा

अब वो दिन नहीं रहे जब महाराष्ट्र में पुणे के पास पिंगोरी गाँव के किसान, 6 से 8 माह की खेती करने के बाद, ₹1300 प्रतिमाह से भी कम आमदनी के लिए पूरी तरह से ज्वार और बाजरा की फसल पर निर्भर रहते थे। अन्य कोई विकल्प ना होने के कारण अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए उन्हें शहर जाकर छोटी-मोटी नौकरी करनी पड़ती थी। “मुझे बहुत तकलीफ होती है जब मैं दूसरे किसानों को उनके खेतों को छोड़कर जाते हुए देखता हूँ,” गणेश कहते हैं जो उस गाँव के 44 किसानों में से एक हैं। वह पिंगोरी में 1.5 एकड़ की कृषिभूमि के स्वामी हैं। रोटरी (रोटरी क्लब पुणे हिलसाइड, मंडल 3131) के हस्तक्षेप के कुछ ही महीनों के भीतर उनकी आय बढ़कर ₹7,000 हो गई। “यह मेरे गाँव में आराम से रहने के लिए पर्याप्त है,” वह कहते हैं। जिस बात की उन्हें प्रसन्नता हो रही है वह यह है कि अपर्याप्त मानसून और पानी की कमी के कारण केवल बाजरे की खेती करने के बजाए अब वह अपनी भूमि पर चार से अधिक प्रकार की फसले उगा सकते हैं।

युवा पुणे और मुंबई जैसे बड़े शहरों में चले गए और “हम कुछ बूढ़े लोग ही थे जिन्होंने गाँव में ही रहने का फैसला किया था जब रोटरी क्लब पुणे हिलसाइड के रोटेरियन बोराते मैडम और रोटेरियन बाबा शिंदे हमारे पास आए थे,” गणेश कहते हैं। शुरुआत में वे सूखे कुओं को बहाल करने और भण्डारण तालाबों को स्थापित करने हेतु अपना समय और पैसा निवेश करने को लेकर संशयात्मक थे, “लेकिन फिर, हमने देखा कि हमारे गाँव को बेहतर बनाने के लिए वे अपने प्रयासों में कितने गंभीर थे। रोटेरियनों ने दौरा किया, इंजीनियर आए और बाबा शिंदे तो हमारे समर्थन के लिए सरकार को भी ले आए। इसलिए, हमने इस योजना में अपना पैसा और ऊर्जा निवेश करने का निश्चय किया।”

रोटेरियन मीना बोराते, पेशे से एक डॉक्टर, जिन्होंने मंडल 3131 में 16 जल और स्वच्छता परियोजनाओं के लिए वित्तीय प्रबंध किया, कहती है, “मैंने जिन गाँवों का दौरा किया वहाँ के सरपंचों का रवैया चौंका देने वाला था। ‘इससे मुझे कैसे फायदा होगा?’ उन्होंने खुलेआम पूछा। ऐसा इसलिए

क्योंकि उन्हें संदेह था कि रोटेरियन उनके गाँव से पैसे लेने के लिए परियोजनाएं करते हैं। लेकिन पिंगोरी में, हालाँकि वे हिचकिचा रहे थे फिर भी गाँव वालों ने आगे आकर हमारे लिए उनकी मदद करना संभव बनाया।”

बाबा शिंदे ने देखा कि दो अंतःस्त्रवण तालाब मिट्टी जमा होने के कारण उथले हो गए थे, और एक नहर जो गाँव से घूमते हुए बहती थी, वह लकड़ियों से अवरुद्ध हो गई थी और महीन मिट्टी से अंतःस्त्रवण प्रवाह रुक गया था। तालाबों की सफाई करके उन्हें गहरा और कीचड़ से मुक्त करने हेतु अधिक धन आवंटित करवाने के लिए उन्होंने सरकारी अधिकारियों के साथ काम किया। जहाँ एक अंतःस्त्रवण तालाब को दागदूँसे हलवाई गणपति ट्रस्ट, पुणे में स्थित एक गैर सरकारी संगठन, की सहायता से कीचड़ मुक्त किया गया, वहीं गाँव वालों ने खुद बंजर भूमि की सफाई कर दी और तालाब द्वारा पानी को रोके रखने हेतु एक अस्थायी बांध बनाने के लिए कंकर-पत्थर बिछा दिए “इस आशा में कि बारिश होगी,” गणेश कहते हैं।



खवण को बढ़ाने के लिए भूमि के विभिन्न हिस्सों में निरंतर समोच्च गड्ढे खोदे गए। पंप स्थापित किये गए, पाइप लगाए गए और खेतों तक टपक सिंचाई के पाइप बिछाए गए। संरक्षित जल पर टिप्पणी करते हुए गणेश कहते हैं कि धीरे-धीरे की जाने वाली पौधों की सिंचाई की इस पद्धति से एक लम्बे समय के बाद पानी की खपत में लगभग 60 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। पानी को केवल पौधों के क्षेत्र तक भेजा जाता है इसलिए इससे खरपतवार भी कम पैदा होती है।

खेती में नवप्रवर्तन

ऐसे मामलों में, इजराइल हमेशा से मानक उदाहरण रहा है। “इजराइल की भूमि का प्राकृतिक रूप से खेती के योग्य ना होने के बावजूद भी, वे दुनिया में ताज़ी उपज के सबसे बड़े निर्यातक हैं। हम चकित थे कि ऐसा कैसे संभव है और फिर हमें एहसास हुआ कि हम भी उचित कृषि तकनीक अपनाकर ऐसा कर सकते हैं,” वह आगे कहते हैं। बाबा शिंदे की मदद से, किसानों ने मृदा पोषक प्रबंधन, थर्मल जाल का उपयोग, पौधों की शाखन और वायरिंग, फसल पैटर्न और उनका आवर्तन सीखा।

“किसी समय बंजर पड़ी यह भूमि, आज 3,500 कस्टर्ड सेव के पेड़ों द्वारा फल प्रदान करती है,” शिंदे कहते हैं। खेतों में पंप के माध्यम से पानी की आपूर्ति का विभाजन नहीं किया गया है। “इसके बजाए, टपक सिंचाई की पाइप लाइन तालाबों से सीधे संबंधित खेतों तक जाती है। इस तरह से कृषि और पीने के पानी के जल स्रोत पृथक रहते हैं,” वह आगे कहते हैं। प्रत्येक किसान अपने खेत में भिन्डी या ग्यारफली जैसी अलग-अलग फसल उगाता है। इसके परिणामस्वरूप

प्रति पैदावार में सब्जियों की 22 से 24 किस्मों का उत्पादन होता है।

जैविक खेती उत्पादन

हालाँकि जो सब्जियाँ और दालें उगाई जाती थी वे जैविक थी, फिर भी किसानों को न्यूनतम कीमत प्राप्त होती थी। “बिचौलिए हमें एक सब्जी के लिए ₹2 प्रति कि. ग्रा. के हिसाब से भुगतान करते थे जिसे वे अंततः ₹40 प्रति किलोग्राम के हिसाब से बेचते थे और हमारी आमदनी अपरिवर्तित बनी रहती थी,” वह कहते हैं। मगर चीज़ें तब बदल गई जब किसानों ने पुणे की एक बड़ी आवास सोसाइटी के रहवासियों को अपने खेतों पर एक दिन बिताने हेतु आमंत्रित करने का निश्चय किया। खेतों पर उनके दौर के बाद, “हमसे एक WhatsApp ग्रुप बनाने और उसपर जो भी सब्जियाँ हमारे पास हैं उनके बारे में अपडेट करने के लिए कहा गया और इस तरह उन्होंने WhatsApp के माध्यम से ऑर्डर भेजना शुरू कर दिया।”

धीरे-धीरे यह बात फैलती गई और किसानों ने थोक में वितरण करना शुरू कर दिया, और ₹2 प्रति किलोग्राम के बजाए, अब किसानों को सब्जियों के लिए पूरी कीमत मिलती है। उन्होंने अपने उत्पादन की दुलाई के लिए डीजल की लागत को साझा किया। दूसरी पैदावार पूरी होने के बाद, किसान आर्थिक रूप से लाभान्वित हुए और उन्होंने पशुधन में निवेश करने का निश्चय किया और गाँव का प्रत्येक परिवार बारी-बारी से पशुओं की देखभाल करता है। जब उच्च पैदावार वाले टमाटरों की कटाई की गई, तो गाँव की महिलाओं ने केचप बनाने का प्रशिक्षण लेना शुरू किया। अब महिलाओं को हाईवे पर छह किलोमीटर की यात्रा करके पानी के टैंकों से पानी लाने नहीं जाना पड़ता, क्योंकि अब उनके पास पर्याप्त पेयजल है। गाँव के स्कूल के पास अब अपना खुद का पानी का टैंक है और बच्चों के पास साफ शौचालय और पीनी योग्य पानी की सुविधा है। जल संरक्षण करने के लिए गाँव की सराहना की गई और मुख्यमंत्री ने भी वहाँ का दौरा किया।

लेकिन उत्सव के लिए उनके पास मौजूद सबसे बड़ा कारण यह है कि “हमारे युवा घर वापस आ रहे हैं क्योंकि अब उनके पास यहाँ अच्छी आमदनी है। यह सब कुछ रोटरी के बिना कभी नहीं हो पाता,” गणेश कहते हैं।

रूपरेखा : एस कृष्णप्रतीश

मीना ने रोटरी क्लब मस्कटीन, यूएस, के सहयोग से एक वैश्विक अनुदान, मंडल 3131 के छह रोटरी क्लबों और TRF की सहायता से ₹60 लाख इकट्ठा किये। दो भण्डारण तालाबों में विशेष बहुलक कागज़ बिछाए गए और सुरक्षा के लिए दीवारों का निर्माण किया गया। बड़े तालाब की भण्डारण क्षमता 37.5 मिलियन लीटर है जबकि छोटे तालाब में 35 मिलियन लीटर पानी संचित किया जा सकता है। जल अंतः

ड्रिप सिंचाई के लिए लगाएँ गये पाइप के पास बैठा एक किसान।



रोटरी कलकत्ता ने समुदायिक पुरस्कार पेश किया

टीम रोटरी न्यूज़

एक रंगारंग कार्यक्रम में भारत में सबसे पुराने रोटरी क्लब, रोटरी क्लब कलकत्ता, मंडल 3291 ने 100 से अधिक लाभार्थियों को अपना वार्षिक एंडोवमेंट अवॉर्ड्स देकर सम्मानित किया जिनमें आम तौर पर विकलांग, जेनेरिक बीमारियों से पीड़ित, आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण या एनजीओ शामिल है, जो रोटेरियन के साथ शोषित-वंचित लोगों के उत्थान के लिए काम कर रहे हैं। प्रत्येक प्राप्तकर्ता को पुरस्कार प्रदान किए जाने पर रोटेरियन ने जोरदार तालियाँ बजा कर उनकी हौसला अफजाई की।

अपनने शुरू आती टिप्पणियों के दौरान, रोटरी क्लब कलकत्ता के अध्यक्ष सौमेन रे ने वर्ष 1990 में भूतपूर्व अध्यक्ष गोबिंद लाल सरोगी द्वारा दिए गए ₹1 लाख के दान से मामूली निधि के निर्माण के लिए एंडोवमेंट पुरस्कारों की उत्पत्ति शुरू करने के महत्व को रेखांकित किया। वर्तमान समय 2018 में यह राशि ₹2.01 करोड़ हो चुकी है और रे ने सभी रोटेरियन से उदारतापूर्वक योगदान देने की अपील की ताकि अगले वर्ष क्लब के शताब्दी में ₹2.5 करोड़ के लक्ष्य को पार किया जा सके। कलकत्ता उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति रोनोजित कुमार मित्र, जो इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे, ने आवेदकों की स्क्रिनिंग और चयन प्रक्रिया पर मवास्तविक तथ्य अधिकारी के रूप में सविस्तार



रोटरी क्लब कलकत्ता के अध्यक्ष सौमेन रे और टेक्नो इंडिया ग्रुप के एम डी सत्यम रॉयचौधरी, एक बच्ची को पुरस्कार देते हुए।

से प्रकाश डाला। उन्होंने इस अवसर पर दृष्टिहीन लोगों के लिए एक नए एंडोवमेंट बनाने के लिए ₹2 लाख दान दिया।

क्लब के कल्याण ट्रस्ट के अध्यक्ष आईपीपी नीलिमा जोशी ने एंडोवमेंट योजनाओं के माध्यम से मनिराशा की आशाफ को बढ़ाकर मफर्क लाने के ट्रस्ट के दृष्टिकोण के बारे में समझाया। इस नेक काम के लिए सभी दाताओं का धन्यवाद करते हुए, उन्होंने कहा, “पुरस्कार समारोह अतीत को संरक्षित करने, वर्तमान का सम्मान करने और हमारे समुदाय के लिए बेहतर कल

के लिए भविष्य को आकार देने का प्रयास है।”

मुख्य अतिथि मित्रा और विशिष्ट अतिथि सत्यम रॉयचौधरी, एमडी, टेक्नो इंडिया ग्रुप ने लाभार्थियों को प्रमाण पत्र के साथ पुरस्कार प्रदान किया। डीजी ब्रोजो गोपाल कुंडू ने गणमान्य व्यक्तियों में शामिल होते हुए लाभार्थियों को पुरस्कारों प्रदान किया।

“विजेताओं के चेहरों पर पुरस्कार जीतने की खुशी, संतुष्टि और उपलब्धि की भावना की एक चमक, स्पष्ट दिखाई दे रही थी, जिन्होंने जीवन के लिए बहादुर से लड़ाई लड़ी और बेहतर

जीवन के लिए प्रयास किया। क्लब के कोषाध्यक्ष के अमित घोष ने कहा, वितरित पुरस्कार राशि की कुल राशि लगभग 15 लाख थी।”

रॉयचौधरी ने क्लब को अपनी विभिन्न सामाजिक परियोजनाओं में समर्थन का आश्वासन दिया, और ₹5 लाख का मसिस्टर निवेदिता छात्रवृत्ति नामक एक नया एंडोवमेंट शुरू किया।

अपने समापन संबोधन में, डीजी कुंडू ने कल्याण ट्रस्ट की एंडोवमेंट प्रक्रिया की सराहना की और कहा कि सवीत्कृष्ट कार्यक्रम मसमुदाय की सेवा का प्रतीक बन गई है। ■

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

रोटरी इंटरनेशनल दक्षिण एशिया कार्यालय, पुल्मैन/नोवोटेल कमर्शियल टॉवर,
प्रथम तल, एसेट न. 2, आतिथ्य मंडल, एरोसिटी (आईजीआई हवाई अड्डे के निकट), नई दिल्ली 110037

- सभी क्लब और मंडल अधिकारियों से निवेदन है कि *My Rotary* के माध्यम से अपनी ईमेल आईडी अपडेट कर लें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं उन्हें प्राप्त हो रही हैं।
- आवेदनों, फॉर्म और दस्तावेजों को एक्सेस करने, क्लब, अधिकारी, या सदस्य डेटा को अपडेट करने जैसे क्लब और मंडल के कार्यों को पूरा करने; रिपोर्ट्स का संचालन करने; बकायों का भुगतान करने; योगदान संबंधी जानकारी देखने; किसी क्लब को अधिकृत करने; आदि के लिए क्लब और मंडल अधिकारी कृपया <https://my.rotary.org/en/manage/club-district-administration/club-administration> लिंक पर जाकर साइन इन करें।

● सदस्यता विवरण

Membership Minute सूचनापत्र ईमेल के माध्यम से आता है, और संसाधनों, साधनों और सदस्यता वृद्धि के विचारों पर जानकारी प्रदान करता है। यह निम्न चीजें भी प्रस्तुत करता है:

- रोटरी सदस्यता पर नवीन शोध।
- योग्य, समर्पित रोटरी क्लब सदस्यों को कहाँ ढूँढ़ें और कैसे उनकी भर्ती करें के बारे में सुझाव।
- नए सदस्य अभिविन्यास कार्यक्रमों को बनाने या बढ़ाने के लिए सुझाव।
- सदस्यों को व्यस्त और रोके रखने के लिए सुझाव और सलाह।

आप इस सूचनापत्र “ऑनलाइन” के लिए इस लिंक के माध्यम से नाम लेखन करना चाहेंगे: <https://my.rotary.org/en/newsfeatures/newsletters>

● रोटरी संस्थान (भारत) समय सीमाओं की सूचना

हमने देखा है कि क्लबों/मंडलों ने अंतरिम रिपोर्ट/अंतिम रिपोर्ट ऑनलाइन जमा कर दी है, लेकिन सहायक दस्तावेजों की भौतिक प्रतियाँ जमा नहीं की हैं। रिपोर्टों की समीक्षा और स्वीकृत किये जाने के लिए, क्लबों/मंडलों को संस्थान को सहायक दस्तावेजों के साथ रिपोर्ट को ऑनलाइन जमा करना चाहिए।

रोटरी संस्थान (भारत) से दिए गए सभी अनुदान के लिए 31 मई तक, 31 मार्च तक की सभी गतिविधियों के लिए अंतरिम/प्रगति रिपोर्ट प्रदान करें। जिन्होंने 31 मार्च तक जमाना किया हो उनसे अनुरोध है कि वे तुरंत ऐसा करें। फिर परियोजना के पूर्ण होने के दो माह के भीतर अंतिम रिपोर्ट जमा कर सकते हैं, जो भी पहले हो।

सूचना प्रलेखीकरण	अंतरिम रिपोर्ट	अंतिम रिपोर्ट
ऑनलाइन रिपोर्ट जमा करें	हाँ	हाँ
सभी मूल कागज़ी प्रतियों की आवश्यकता		
मूल उपयोग प्रमाणपत्र एवं रसीद/भुगतान विवरण	हाँ	हाँ
मूल/प्रमाणित सत्य प्रति में बैंक विवरण	हाँ	हाँ
वास्तविक बिल/इनवॉइस/रसीदें	लागू नहीं	हाँ
उपक्रम (यदि बिलों की प्रति जमा की गई है)	लागू नहीं	हाँ
लाभार्थी सूचना	लागू नहीं	हाँ
धन-वापसी, अगर कोई हो तो	लागू नहीं	हाँ

● सामुदायिक आंकलन सफलता की ओर ले जाते हैं

जुलाई की 1 तारीख से, किसी मानवीय परियोजना या व्यावसायिक प्रशिक्षण दल का समर्थन करने हेतु वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करने वाले क्लबों और मंडलों को अब पहले एक सामुदायिक मूल्यांकन करना होगा और परिणामों को उनके अनुदान आवेदन में शामिल करना होगा।

बेरहामपुर में रोटरी दिवस पर रेत की आँख

टीम रोटरी न्यूज़



विश्व पोलियो दिवस पर 'सबसे बड़े मानव पैर की छवि' के कीर्तिमान के बाद, रोटरी क्लब बेरहामपुर, मंडल 3262, ने 23 फरवरी को संस्थान की 113वीं वर्षगांठ के मौके पर रोटरी दिवस उत्सव के हिस्से के रूप में 'आँख की सबसे बड़ी रेत कृति' बनाकर एक बार फिर इंडिया बुक ऑफ़ रिकार्ड्स में अपना नाम दर्ज किया।

परियोजना समन्वयक रोटेरियन विजय बगारिया ने कहा, "हम हमेशा बड़े काम करके विभिन्न तरीकों से रोटरी की छवि को चमकाने का प्रयास करते हैं। इस बार, विचार दुनिया को रोटरी की आँखों से देखने का था और हमने आँख की सबसे बड़ी रेत कृति बनाने का फैसला किया।"

प्रारंभिक कार्य

लेकिन इतनी विशाल संरचना को बनाने के लिए, क्लब को 120-150 टन की बड़ी मात्रा में रेत इकट्ठा करना पड़ी ताकि 90-100 फीट लंबी छवि बन सके। क्लब ने फिर रेत कलाकार सुबोल मोहराना को चुना जो अपने तीन सदस्यीय दल के साथ विशाल मानव आँख को बनाने के लिए राजी हुए। रेत एवं अन्य वस्तुओं को जमा करने की पूरी प्रक्रिया 20 फरवरी से आयोजन स्थल पर ट्रकों की आवाजाही के साथ शुरू हुई। इसके बाद, रेत पर पानी के सिंचाव की प्रक्रिया की गई ताकि रेत पूरी तरह ढालने के लिए गीली हो जाए। रेत के ढेर लगाने एवं उसे पानी देने के लिए "हमने मजदूर काम पर लगाए। 22

फरवरी को, सुबोल और उनके दल ने कलाकृति बनाना शुरू किया। रेत की कृति बनाने में पूरी रात लग गई," बगारिया ने कहा।

उसके पुतली की जगह रोटरी के लोगो वाली मानव आँख की रेत की वह कलाकृति, जो 100 x 20 फीट की थी और जिसका वजन लगभग 100 टन था, में एक सारगर्भित संदेश था कि: रोटरी की आँखों से दुनिया को देखिये।

विश्व शांति को बढ़ावा देने वाली रेत कलाकृति के निकट ही, पौधारोपण एवं रक्तदान पर बनी दो अन्य संरचनाओं ने विश्व रोटरी दिवस को मनाने के लिए तैयार की गई उस आलीशान संरचना को पूरा किया। बेरहामपुर के विधायक रमेश चंद्र चौपटनायक, पीडीजी नारायण

मिश्रा, क्लब के सदस्यों एवं मीडिया बिरादरी ने इस कार्यक्रम को संजोए रखे जाने वाला एक भव्य अवसर बना दिया था। लोगों की उमड़ती भीड़ ने रेत की उस नक्काशी को देखा और परियोजना क्लब के लिए एक बड़ी जन संपर्क सफलता साबित हुई।

इस अवसर पर बोलते हुए, क्लब के अध्यक्ष तापस पाणिग्रही ने एक शांतिपूर्ण दुनिया के लिए रोटरी के योगदानों और उनके क्लब की विभिन्न गतिविधियों पर लम्बा भाषण दिया। उस विशाल आँख को जगमगा देने के साथ ही, दूर बैठे लोग भी बीच में रोटरी के लोगो वाली उस संरचना को रात में देख सकें, जिससे क्लब की छवि में बढ़ोत्तरी हुई। ■



महिलाओं की आजीविका में सुधार

किरण जेहरा



हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर द्वारा प्लास्टिक और थर्मोकॉल प्लेटों और कटलरी पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा करने से पहले, मंडी के रोस्टी क्लब, मंडल 3070, ने मंडी के पास घरवासरा गांव में ग्रामीण महिलाओं को बेहतर आजीविका अर्जित करने के लिए मदद करने के उद्देश्य से बायोडिग्रेडेबल प्लेटों के उपयोग पर जागरूकता फैलाने में अग्रणी भूमिका निभाई थी। 20 महिलाओं के आरसीसी के माध्यम से, क्लब ने हाल ही में गाँव में एक पत्ता-प्लेट निर्माण इकाई स्थापित किया।

क्लब ने इस क्षेत्र में चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया, वॉटर फिल्टर वितरित किया, स्वच्छता अभियानों का आयोजन किया और क्षेत्र के बच्चों को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित किया। क्लब के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र मोहन कहते हैं कि गाँव में महिलाएं पहले भी पत्तल या पत्ते की प्लेट बना रही थीं। लेकिन प्लेटों का शेल्फ जीवन तीन दिनों से भी कम था और इसका फिनिश भी खुरदरा होता है, जिसके परिणामस्वरूप समय, सामग्री और धन की बर्बादी हुई और उन सभी को भी कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि वे शायद ही कोई

लाभ अर्जित कर रही थी क्योंकि उनकी प्लेटें बिक नहीं रही थीं। “इसलिए, उन्होंने समस्या के समाधान के लिए हमसे संपर्क किया और हमने अपना अनुसन्धान कार्य शुरू किया।”

मैं कोलकाता में पत्ती निर्माण मशीन के परिणामों से संतुष्ट नहीं था, इसके कारण, “मुझे राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान द्वारा विकसित मशीन की जाँच करने के लिए हैदराबाद जाना पड़ा,“ वे कहते हैं। वहाँ से वापस आने पर उन्होंने एक परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत किया किया और मंडल अनुदान के आने का इंतजार किया। “रोस्टी फाउंडेशन ने परियोजना को स्वीकृति प्रदान की और राशि प्राप्त होते ही हमने मशीन खरीदने के लिए आदेश दिया और अप्रैल में काम करना शुरू कर दिया।” इस परियोजना की पूर्ण लागत ₹1,50,000 है।

इकाई में काम करने वाली 20 महिलाओं के लिए शुरू में मशीन के परिचालन के तरीकों को समझने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। विमला, एक प्लेट निर्माता कहती हैं, “मैं कभी स्कूल नहीं गई थी, इसलिए यह समझ में नहीं आ रहा था कि मशीन को कैसे चलाया जाए। लेकिन पद्मा दीदी ने मेरी मदद

की,” और आज औसतन तीन महिलाएं आठ घंटे में 1,000 प्लेटें बनाती हैं। आरसीसी की सचिव पद्मा बड़े ही आत्मविश्वास से कहती हैं, “अब हम अपने बच्चों को स्कूल भेज सकते हैं, और इससे अधिक हमें क्या चाहिए। यदि जरूरत पड़ी हो तो हम कड़ी मेहनत करेंगे।” इस मशीन की एक विशेषता उन्हें पसंद है, वह कि, “अब हमें पत्तियों को सिलाई करने की जरूरत नहीं है जिसका मतलब है कि सुई चुभने का दर्द अब अधिक नहीं झेलना पड़ेगा।”

इकाई 12 इंच की पत्ते की प्लेटें और 6 इंच के ड्रू (पत्ते का कटेरा) बनाती है। पहले 12 घंटे कार्य करने के बावजूद 900 प्लेट बनाए और रूपये 1 की दर से प्रति प्लेट बेचने की तुलना में वे अब 8 घंटे में 1,000 प्लेटें बना सकती हैं, जिन्हें ₹4,000 में बेचा जाता है। इन प्लेटों के उत्पादन की लागत ₹2,000 है। इससे उनकी आय दोगुनी हो गई है। इन प्लेटों और कटेरों को विवाह और मंदिर में तय्यारों के आयोजन के दौरान उपयोग के लिए स्थानीय रूप से बेचा जाता है। मोहन कहते हैं कि हिमाचल में सक्ति रूप से थर्मोकॉल और प्लास्टिक प्लेटों पर प्रतिबंध लगाए जाने के साथ प्लेटों के लिए आने वाला आदेश भी दोगुना हो गया है।

उनका कहना है, “हमारे पास इस वर्ष के लिए पर्याप्त आदेश हैं और अगर हम अधिक का निर्माण करते हैं तो हम जाँच करेंगे कि क्या हम इन प्लेटों को जर्मनी और अमेरिका में निर्यात करने में निवेश कर सकते हैं।” और फार्मसी विभाग, बनरस्थली विश्वविद्यालय, राजस्थान का उद्धरण देते हुए कहते हैं कि बायोडिग्रेडेबल प्लेटों के इस्तेमाल से स्वास्थ्य पर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। “प्लेटों का निर्माण गोंद या योगशील सामग्रियों के बिना किया जाता है, और वे 28 दिनों में मिट्टी में विघटित हो जाते हैं। चूँकि पर्यावरणीय उत्पाद राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो गए हैं, इसलिए ये प्लेटें अच्छा व्यवसाय कर रही हैं।” ■

रोटेरियनों ने जालंधर में 3 हैप्पी स्कूल तैयार किये

वी मुत्तुकुमारण

जालंधर के एक स्कूल में, रोटेरी क्लब जालंधर वेस्ट, मंडल 3070, के पीडीजी डॉ. सुरिंदर पाल सिंह ग्रोवर के नेतृत्व में रोटेरियनों के एक दल को, बच्चों को जूट की चटाई पर बैठे हुए और लिखने के लिए अपनी नाजुक कमर को झुकाते देख धक्का लगा। कुछ लड़कियों ने अपर्याप्त शौचालय सुविधा होने के कारण स्कूल छोड़ दिया। और शिक्षकों को उतनी ही बुनियादी

सुविधाओं के साथ काम चलाना पड़ता था जितनी उन्हें मिलती थी।

इसी वजह से ग्रोवर और उनके दल ने ऐसे तीन दयनीय स्कूलों - सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गाँधी शिविर; एसबीटी मॉडल स्कूल, सोढल नगर; और हिंदी पुत्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्कूल, खन्ना - का पूरी तरह से पुनर्निर्माण करके उन्हें बदलने के लिए एक परियोजना शुरू की।

स्कूलों की खराब स्थिति और कार्य की अधिकता को देखते हुए, क्लब को रोटेरी क्लब नॉर्फोक सनराइज, मंडल 7090, कनाडा, जिसने परियोजना के लिए 10,000 डॉलर का योगदान दिया, को इसके लिए राजी करने के बाद वैश्विक अनुदान मिला। “हमारे क्लब ने कई सिविल कार्यों की शुरुआत करने और तीन स्कूलों में नयी सुविधाओं को स्थापित करने के लिए लगभग



बाएँ से: रोटेरियन पूजा कपूर, पीडीजी एस पी एस ग्रोवर, पूर्व अध्यक्ष कुलदीप सिंह, जोगिदार सिंह, क्लब अध्यक्ष दलजीत सिंह विरडी, बच्चों और अध्यापकों के साथ हिन्दी पुत्री स्कूल में।

11,875 डॉलर इकट्ठा किये थे। TRF के 18,500 डॉलर के योगदान के अलावा, हमारे गृह मंडल और मंडल 7090 प्रत्येक ने 4,000 डॉलर का योगदान दिया,” ग्रोवर ने कहा।

नवीनीकरण पैकेज

तीनों स्कूलों में से प्रत्येक में स्वच्छता और स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए चार लिंग-पृथक शौचालय खण्डों का निर्माण किया गया। चूँकि विद्यार्थियों को स्कूल में फर्श पर बैठना पड़ता था, इसलिए स्कूल को स्टील की 200 बेंचे दी गई। “तीनों स्कूलों के आंगन, खुली जगह और तत्काल मरम्मत की आवश्यकताओं वाली कुछ कक्षाओं में नया एवं चिकना फर्श तैयार किया गया। खिड़कियों और दरवाजों सहित सभी आंतरिक और बाहरी दीवारों को नए रंग से रंगा गया। चाहरदीवारी का पुनर्निर्माण किया गया,” पीडीजी

प्रशिक्षकों ने हमें कक्षा में बर्ताव और बच्चों के मनोभाव को समझने से जुड़े मुद्दों के बारे में शिक्षित कर पूर्ण रूप से प्रभावित किया।

रेशमा कौर, एक शिक्षिका

ग्रोवर कहते हैं, जो इस परियोजना के प्रमुख भी है। कुमुद कुमारी शर्मा, गाँधी शिविर स्कूल की प्रधानाचार्य, ने क्लब को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने कहा कि यह बदलाव शिक्षकों और प्रबंधन के मनोबल को बढ़ाने वाला था। उन्होंने स्कूल के

नवीनीकरण और पढ़ाई हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने के लिए रोटेरियनों और टीआरएफ को धन्यवाद दिया। हैप्पी स्कूल परियोजनाओं से लगभग 3,000 बच्चे लाभान्वित हुए।

अनुदान परियोजना के हिस्से के रूप में, रोटेरियनों ने प्रोफेसर जे. के. गुलाटी, प्रधानाध्यापक, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी कॉलेज, के नेतृत्व में एक चार-सदस्यीय संकाय द्वारा 50 शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम की सुविधा भी प्रदान की।

गुलाटी और उनके प्रशिक्षकों ने हमें कक्षा में बर्ताव और बच्चों के मनोभाव को समझने से जुड़े मुद्दों के बारे में शिक्षित कर पूर्ण रूप से प्रभावित किया और यह हमें लम्बे समय में लाभान्वित करेगा, क्लब के साथ मध्यस्थता करने वाली एक शिक्षिका, रेशमा कौर कहती है।■

कटवा में पानी और स्वच्छता

टीम रोटरी न्यूज

रोटरी क्लब कटवा, मंडल 3240 के रोटेरियन ने सार्वजनिक स्थानों पर कूलिंग सिस्टम के साथ पेयजल सुविधा स्थापित किया है ताकि राह चलते लोग अपनी प्यास बुझा सकें। पीडीजी समीर कुमार चौधरी जिन्होंने औपचारिक रूप से एक वॉटर हट अर्थात प्याऊ का उद्घाटन किया, ने अपनी खुशी



आर्य बंगा स्कूल में हैंडवाश स्टेशन।



क्लब द्वारा निर्मित वॉटर हट के आगे खड़े रोटेरियनगण।

व्यक्त किया कि परियोजना से बाजार आने वाले हजारों लोगों और बच्चों को लाभ प्राप्त होगा।

एक और परियोजना के अंतर्गत, क्लब ने पेयजल सुविधाएँ उपलब्ध कराई, और पूर्वी बर्धमान मंडल में आर्य बंगा एफ पी स्कूल में हैंडवाश स्टेशन और

शौचालय ब्लॉक का निर्माण किया। क्लब के अध्यक्ष समित बनजी कहते हैं, “हमारे प्रयासों से स्कूल में पढ़ रहे 250 छात्रों को लाभान्वित होंगे,” उन्होंने कहा कि मंडल के सभी 56 क्लबों ने परियोजना को पूरा करने के लिए अपना सहयोग दिया है।■



मोमबत्तियों से सौर लैंप की ओर आया एक जनजातीय गाँव

किरण जेहरा

रोटरी बेंगलोर डाउनटाउन ने रोटरी क्लब बेंगलोर कोरामंगला (मंडल 3190) के सहयोग से ऊटी से 60 कि. मी. दूर, एक कोटा गाँव, इम्बेट के 39 जनजातीय घरों में सौर लैंप स्थापित किये। इस गाँव से सबसे नजदीकी स्कूल 5 कि. मी. दूर है। बच्चे अपने संबंधित सरकारी स्कूलों में जाने के लिए बस में चढ़ने से पहले एक निश्चित दूरी तक पैदल जाते हैं। “लेकिन यह समस्या उतनी बड़ी नहीं थी जितनी

बड़ी समस्या हमारे घरों में बिजली ना होने की थी। बच्चे सूर्यास्त से ठीक पहले घर लौटते थे और कभी गृह कार्य पूर्ण नहीं कर पाते थे। लेकिन रोटरी के कारण अब हमारे पास रोशनी है, कोटा समुदाय की प्रमुख,” सरस्वती नीजी कहती है।

नीलगिरी की पहाड़ियों के मूल निवासी, कोटा समुदाय के 3,500 लोग बढ़िया कुम्हार, संगीतकार और संगीत वाद्ययंत्र निर्माता हैं; वे जनजातियों में

सबसे अग्रणी सोच रखने वाली जनजाति है, जिन्होंने उनके बच्चों को मुख्यधारा नौकरियों में भेजने और प्राथमिक शिक्षा देने का साहस किया। सरस्वती समझाती हैं कि अन्य समाजों के विपरीत, एक कोटा महिला को अधिक सम्मान दिया जाता है और अपना जीवन साथी चुनने, पुनर्विवाह करने, तलाक लेने में उनकी मर्जी पूछी जाती है और वह गाँव के आर्थिक विकास में बड़ी भूमिका निभाती है। “कुछ साल

रोटरी क्लब बेंगलोर डाउन टाउन के अध्यक्ष रघु आलम और रोटरी क्लब बेंगलोर कोरामंगला की अध्यक्ष जेनेट एग्नेस वारन, कोटा महिलाओं के साथ।



पहले तक हम अनभिज्ञ थे कि हम मुफ्त शिक्षा का लाभ ले सकते हैं। अब कोटा का प्रत्येक बच्चा स्कूल जाता है। लड़के और लड़कियाँ दोनों जाते हैं,” वह आगे कहती है।

रोटरी क्लब डाउनटाउन सौर लैंप परियोजना निष्पादित करने हेतु बेंगलुरु के पास एक गाँव की तलाश में था। जब हम कुछ गाँवों में पहुँचे, तो सरपंचों ने कहा, “हमें पैसे दे दीजिए, हम खुद सौर लैंप स्थापित कर लेंगे।” एक गाँव के लिए कई महीनों की तलाश के बाद, जेनेट येग्रेस वारन, रोटरी क्लब बेंगलोर कोरामंगला की अध्यक्ष को इम्बेट गाँव मिला “घने जंगलों के बीच बसे इस गाँव तक पहुँचने के लिए मुश्किल से कोई सड़क मार्ग है। हम इन लोगों को 70-100 वर्ग फीट के लकड़ी और मिट्टी से बने घरों में रहते देखकर हक्के-बक्के रह गए, जहाँ सिर्फ एक पलंग, एक अलमारी और कुछ बर्तन थे,” रोटरी क्लब बेंगलोर डाउनटाउन के अध्यक्ष, रघु आलम कहते हैं।



क्लब अध्यक्ष रघु आलम (दाएं) एक ग्रामीण को सौर प्रकाश प्रणाली प्रदान करते हुए।

गाँव वालों ने कोई पैसे नहीं मांगे
थे ना ही उन्होंने हमारी सहानुभूति
प्राप्त करने के लिए हमें गरीबी
की कहानियाँ सुनाई थी।

रघु आलम

अध्यक्ष
रोटरी क्लब बेंगलोर डाउनटाउन

दोनों ही अध्यक्ष सुखद रूप से आश्चर्यचकित थे क्योंकि “गाँव वालों ने कोई पैसे नहीं मांगे थे ना ही उन्होंने हमारी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए हमें गरीबी की कहानियाँ सुनाई थी। गाँव में वाकई में कोई बिजली नहीं थी लेकिन फिर भी हर घर में एक मिक्सी और एक ग्राइंडर देखना अजीब था,” आलम कहते हैं, इसपर समुदाय के मुखिया ने चट से कहा, कि सरकार ने हमें बिजली देने का वादा किया था अगर हम उनके लिए मतदान करें तो और उन्होंने हमें ये सब पहले ही दे दिया था।

गाँव का घने जंगल के बीच बसा होने के कारण उसे बिजली से वंचित कर दिया गया। “हम इस गाँव को बिजली प्रदान करने के लिए सरकारी अधिकारियों और राजनेताओं से मिल रहे हैं। और अचानक से ये रोटेरियन हमारे गाँव में आए और एक दिन में ही सौर लैंप स्थापित कर दिए,” वह कहती है।

सौर लैंप को खम्बे या स्तंभ की आवश्यकता नहीं होती और बस न्यूनतम तारों की जरूरत होती है। पैनल को घर की छत पर स्थापित किया गया और इसे एक बैटरी से जोड़ा गया जिससे एक छोटा LED लैंप और एक मोबाइल चार्जर चलता है। लैंप की स्थापना वाले दिन फूलों, “शालों और मालाओं से हमारा भव्य स्वागत किया गया। गाँव वालों ने हमें ठेठ शाकाहारी कोटा भोजन खिलाया। वह एक लाजवाब अनुभव था, आलम कहते हैं।

सरस्वती को अब राहत मिली है कि बच्चों को परीक्षाओं के दिनों में शहर के नजदीक रहने वाले दोस्तों और शिक्षकों के घर जाकर नहीं रहना पड़ेगा। “हमारी पूरी जिंदगी हमने तेल के दिए और मोमबतियाँ जलाई, अपने दैनिक कार्य शाम 7 बजे के पहले ही खत्म कर लिए, जंगली जानवरों को दूर रखने के लिए संघर्ष किए... लेकिन सौर लैंपों ने सब बदल दिया। यह अँधेरे का डर नहीं था, बल्कि चिंता थी कि हमारे बच्चों को भी हमारी तरह ही संघर्ष करना पड़ेगा और यही बात हमें डराती थी।”

“जब हम गाँव से जा रहे थे,” आलम कहते हैं, “उन्होंने हमसे आश्वासन माँगा कि अब बिजली नहीं जाएगी और उनके बच्चों के लिए स्कूल यूनिफार्म प्रदान करने की विनती भी की।” क्लब इन ग्रामीणों के लिए कंक्रीट के घर बनाने की योजना बना रहा है और इसने एक साझेदार क्लब की तलाश भी शुरू कर दी है। ■

Apply yourself

Would you like to contribute further to Rotary by serving on a committee? Each of Rotary's committees, made up of Rotarians and Rotaractors from around the world, works with the organisation's leadership to ensure efficiency and promote the goals and priorities laid out in the strategic plan.

The following committees are searching for qualified candidates for openings in 2019–20. All committees correspond via email, teleconference, or webinars as needed, and some also involve at least one mandatory in-person meeting per year. Most committee business is conducted in English.

To be considered for committee membership or to recommend someone for an appointment, visit **on. rotary.org/application2018**.

Applicants must be registered on *MyRotary* at **rotary.org/myrotary** and should make sure that their My Rotary profile includes current contact information.

Candidates may apply for only one committee.

The application deadline is August 11.

Committee	Function	Prerequisites	Commitment
Audit	Advises the Board of Directors on financial reports, internal and external auditing, and the system of internal control	Independence, appropriate business experience, and demonstrated financial literacy in accounting, auditing, banking, insurance, investment, risk management, executive management, or audit governance	One six-year term; two meetings per year in Evanston and two teleconference/webinar meetings per year
Communications	Advises the Board on communication with key audiences	Professional background and experience in a communications-related field	One three-year term; multiple conference calls; annual meeting in Evanston
Finance	Advises the Board on Rotary's finances, including budgets, investment policy and sustainability measures	Professional background in a finance-related field; nonprofit experience preferred. Candidates should have experience in financial matters at the club and district levels	One three-year term; two meetings per year in Evanston
Global Networking Groups	Oversees action groups, fellowships and vocational service including operations, programme enhancements and proposals	Strong candidates; have led action groups, fellowships, or club- or district-level vocational service initiatives, and are familiar with their policies	One three-year term; annual meeting in Evanston and two teleconference meetings per year
Joint Committee on Partnerships	Advises the Board and Trustees on partnership and sponsorship matters	Knowledge of Rotary grant-making and international service portfolios; extensive experience in cultivating and developing partnerships with corporations, the NGO sector and government; experience in cause marketing, sponsorship, and resource-generating relationships, as well as international strategic partnerships; and clear understanding of the capacity and club-based projects of Rotary	One three-year term; two meetings per year in Evanston



Committee	Function	Prerequisites	Commitment
Leadership Development and Training	Advises the Board on Rotary's leadership training programme for Rotarians, clubs and districts with a special emphasis on training for district governors	Must have significant training or education experience with a preference for leadership development	One three-year term; annual meeting in Evanston
Membership	Advises the Board on matters related to membership development, retention and engagement	Rotarians or Rotaractors with significant knowledge of and commitment to membership attraction and engagement activities; candidates from clubs that have diversified their membership preferred	One three-year term; two meetings per year in Evanston
Operations Review	Monitors the effectiveness, efficiency, and implementation of operations and all internal systems; advises the Executive Committee on compensation matters; and performs other oversight functions as requested by the Board	Experience in management, leadership development or financial management, and a thorough knowledge of Rotary's operations. Appointments will be limited to past RI directors	One six-year term; typically meets in Evanston twice a year
Rotaract and Interact	Advises the Board on Interact and Rotaract; develops the Rotaract Preconvention Meeting programme	Rotarians: Experience working with youth; direct experience as a mentor or Rotaract/Interact adviser or district chair. Youth programme alumni are strong candidates. Rotaractors: Leadership at the club, district or international level. Strong candidates; have served as a district Rotaract representative, organised projects, or attended a Rotaract Preconvention. Age restrictions may apply.	One three-year term; annual meeting in Evanston One one-year term; one meeting in Evanston
Strategic Planning	Reviews Rotary's strategic plan and associated measures; advises leadership on other matters of long-term significance	10+ years of experience in strategy development, monitoring and implementation, and strong understanding of RI and Foundation programmes and services	One four-year term; up to four meetings in Evanston
Youth Exchange	Advises the Board on matters related to the Rotary Youth Exchange programme and develops the programme for the Youth Exchange Officers Preconvention	Experience in administering exchanges at district or multi-district level; must be from a district that has met certification requirements	Multiple tel-conference/webinar meetings per year

आपके गवर्नरों से मिलिए

रशीदा भगत, जयश्री

कुछ अलग करना, उनका मंत्र है

स्तुति अग्रवाल,

मैकेनिकल इंजीनियर, रोटरी क्लब अलाहाबाद, मंडल 3120

वह स्वीकार करती है कि वह चीजों को अलग ढंग से करना पसंद करती है। उत्तर प्रदेश जैसी जगह में एक महिला रोटेरियन के लिए रोटेरियनों के पद से ऊपर उठना कोई मजाक नहीं है। जब मैंने उनसे यह पूछा तो वह हँसती है और कहती है, “बेशक एक महिला के लिए उत्तरप्रदेश एक चुनौतीपूर्ण स्थान है और मैंने बचपन से ही इसका अनुभव किया है, लेकिन रोटरी मेरे प्रति बहुत अच्छी रही है और पिछले कुछ वर्षों में, मेरे क्लब में, मुझे हमेशा मेरे वरिष्ठ जनों से समर्थन मिला है... उनमें से अधिकतर से,” स्तुति अग्रवाल कहती है, जो मंडल 3120 से पहली महिला गवर्नर है।

वह हमेशा घिसे पिटे तौर तरीकों या भेड़चाल चलने से दूर रही; “जब हमारे क्षेत्र से कोई भी महिला एक डिग्री के रूप में इंजीनियरिंग का चुनाव

नहीं करना चाहती थी, मैंने इसे ही चुना, और इंजीनियरिंग में भी, मैंने ऐसी शाखा - मैकेनिकल इंजीनियरिंग - का चयन किया जिसे उस समय कोई भी महिला नहीं चुन रही थी,” वह मुस्कुराती है।

वह 1996 में रोटरी से जुड़ी, क्योंकि कनाडा, जहाँ तब उनका परिवार रहता था, में शुरुआती दिनों से ही वह एक ऐसे सेवा संगठन से जुड़ी थी जो प्रवासी महिलाओं के अधिकारों के लिए कार्य करता था। “मुझे दूसरे लोगों के कल्याण के लिए कार्य करना अच्छा लगा और जब मैं वापस लौटी, तो मैंने अपने परिवार को रोटरी के साथ गहराई से जुड़ा पाया। मेरे पिता, मेरे चचेरे भाई/बहन और चाचा ससुर सभी रोटेरियन थे और उन्होंने कहा कि तुम हमेशा से ही सुविधाओं से वंचित लोगों के लिए कार्य करना चाहती हो तो तुम रोटरी से क्यों नहीं जुड़ती। इसलिए मैं रोटरी क्लब अलाहाबाद से जुड़ी।”

हालाँकि उनके क्लब के वरिष्ठों ने उनका समर्थन किया, फिर भी डीजी बनने की यात्रा निश्चित रूप से कठिन थी, वह स्वीकार करती है। “मुझसे पहले महिलाओं ने डीजी के पद के लिए चुनाव लड़ा, लेकिन कभी सफल नहीं हुई। हालाँकि वह कभी चुनाव लड़ने के पक्ष में नहीं थी और उनका नाम नामांकन समिति द्वारा दिया गया था, शिकायतें भी आई पर मेरे चुनाव को चुनौती नहीं दी गई थी।”

गवर्नर के रूप में उनके वर्ष में उनकी प्रमुख प्राथमिकता मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित करना... “मेरे पति एक शिशु-चिकित्सक हैं और इस अभियान के लिए मेरी अत्यंत गहन संवेदना है...” और अधिक महिलाओं को रोटरी में शामिल करना है।

वह शीघ्रता से आगे कहती है: “मेरे प्रयास और चुनौती महिला सदस्यों को रोटरी में शामिल करके केवल महिलाओं की सदस्यता में वृद्धि करने की ही नहीं होगी, बल्कि इस बात को सुनिश्चित करने की भी होगी कि वे काम करें और पूरी तरह से सम्मिलित हो एवं हमारी सेवा परियोजनाओं में भाग लें। मैं यह सुनिश्चित करना चाहती हूँ।”

तो भारत भर के रोटरी क्लब जिस तड़क-भड़क में लिप्त हैं, और जिसकी आलोचना की गई है, उसके बारे में वह क्या सोचती है?

एक बड़ी सी मुस्कुराहट के साथ स्तुति ने चट से जवाब दिया: “यही कारण है कि मैं अधिक महिलाओं को शामिल करना चाहती हूँ! महिलाएं पैसे को लेकर सतर्क होती हैं और इसलिए अवांछित खर्चों पर कड़ी कार्यवाही करेंगी।”





राजीव शर्मा

फार्मास्युटिकल्स, रोटरी क्लब भुसावल तापती वैली, मंडल 3030

रोटेरियनों का रोटरी से पुनः परिचय

उन्हें इस बात का मलाल है कि बहुत से रोटेरियन रोटरी के मूल आदर्शों को भूल रहे हैं, और जो रोटरी में नए हैं वे रोटरी के वास्तविक सार में “अच्छी तरह प्रशिक्षित नहीं हैं। इसलिए नए रोटेरियनों को शिक्षित करना और उन पुराने रोटेरियनों का पुनर्विन्यास करना जो रोटरी के मूल आदर्शों को भूल चुके हैं, एक गवर्नर के रूप में मेरे वर्ष में मेरी प्राथमिकता होगी,” राजीव शर्मा कहते हैं।

तो उनके वर्ष के दौरान रोटेरियनों को प्रशिक्षित और शिक्षित करना उनके लिए अहम् होगा। “यह बहुत जरूरी है क्योंकि मैं यह मानता हूँ कि भगवान को छोड़कर, आप केवल उस व्यक्ति से प्यार कर सकते हैं जिसे आप सच में अच्छी तरह से जानते हैं। इसलिए एक रोटेरियन का रोटरी को अच्छी तरह से जानना आवश्यक है ताकि वह उसे पूर्णरूप से प्रेम कर सकें।” उनकी अगली प्राथमिकता महिला सदस्यों पर ध्यान केन्द्रित करने की होगी “सौभाग्य से, हमारे मंडल में महिला सदस्यों की संख्या लगभग 12 प्रतिशत तक है जो अपेक्षाकृत अच्छी है, लेकिन मैं इसे और सुधारने का प्रयास करूँगा,” शर्मा कहते हैं, जो 1994 में रोटरी से जुड़े, क्योंकि उनके पिता एक रोटेरियन थे “जिन्होंने इस शानदार संगठन से मेरा परिचय करवाया।”

उन्होंने आगे कहा कि मंडल 3030 “आम तौर पर मातृ-स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित करता है, हमारे मंडल में तीन मैमोग्राफी बसें हैं जिन्हें वैश्विक अनुदान के माध्यम से अर्जित किया गया है और कार्यपरक साक्षरता एक अन्य क्षेत्र है जिसपर हम ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। मैं विशेष रूप से लोगों को इस बात के लिए शिक्षित करना चाहता हूँ कि बैंक अकाउंट कैसे खोलें और उसका संचालन कैसे करें आदि, क्योंकि महाराष्ट्र में हमें वाकई इस चीज़ की आवश्यकता है,” वह कहते हैं।

लेकिन उनका पूरा ध्यान मातृ स्वास्थ्य पर होगा, और महिलाओं के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए सेनेटरी नैपकिन का वितरण उनके वर्ष के दौरान बड़े पैमाने पर किया जाएगा। इस मंडल ने, 93 क्लबों और लगभग 5,500 सदस्यों के साथ संस्थान को देने में अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन किया; “हम कुछ वर्ष पहले ही 1 मिलियन डॉलर के आंकड़े को छू चुके हैं और मुझे यकीन है कि हम उस लक्ष्य को दोहराएंगे। लेकिन हम स्थायी निधि पर अधिक ध्यान केन्द्रित करेंगे हालाँकि वार्षिक निधि पर भी हमारा ध्यान होगा,” शर्मा ने आगे कहा।



विष्णु एस मोंडे

ऑटोमोबाइल डीलर, रोटरी क्लब तुलजापुर, मंडल 3132

वह महिला सदस्यता में वृद्धि करना चाहते हैं

एक रोटारेक्टर से रोटेरियन बने विष्णु मोंडे अभी तक अपने रोटारेक्टर के दिनों को अपने दिल के करीब रखते हैं। “मैं 1988 में डचड में इंजीनियर की नौकरी करने हेतु सोलापुर आया था और जब तक मुझे एक रोटारेक्टर बैठक के लिए आमंत्रित नहीं किया गया था तब तक मेरा कोई दोस्त नहीं था,” उस बैठक ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि वह खुद एक रोटारेक्टर के रूप में अपना नाम लिखाने के लिए राजी हो गए। वह जल्दी से आगे कहते हैं कि 1994 से एक रोटेरियन के रूप में उनके दिन समान रूप से दिलचस्प और मूल्यवान रहे क्योंकि “पीछे मुड़कर देखने पर मुझे खुशी मिलती है कि रोटरी के माध्यम से मैं कई लोगों की कुछ मदद कर सका।” मोंडे महिलाओं के लिए बैठक के समय और जगह को सुविधापूर्ण बनाकर मंडल में उनकी सदस्यता में सुधार लाना चाहते हैं। “मैंने क्लबों को बैठकें जल्दी करने और स्थानों को पहुँच के भीतर रखने का सुझाव दिया है ताकि महिलाओं को सहूलियत हो।” वह अपने दल को कामकाजी महिलाओं को रोटरी से जुड़ने हेतु मनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं क्योंकि उन्हें रोटरी एक दिलचस्प मंच लगेगा। वह सदस्यता वृद्धि में मंडल द्वारा दो वर्ष पहले प्राप्त प्रथम स्थान दोबारा हासिल करना चाहते हैं। “अवरोधन एक बड़ी चुनौती है और मैं इसे तत्परता से संबोधित करने के लिए कार्यक्रमों की योजना बना रहा हूँ,” डीजी कहते हैं। TRF के लिए 300,000 डॉलर इकट्ठा करना उनका लक्ष्य है; ऐसा करने के लिए वह रोटेरियनों के जोड़ो को ₹1.25 लाख का योगदान करके, जोड़ी कमाल की खिताब हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करने की योजना बना रहे हैं और वह क्लब अध्यक्षों से उनके सभी सदस्यों को संस्थान के लिए योगदान करने हेतु प्रेरित करने का आग्रह करते हैं।

अकलकोट और उस्मानाबाद में विशाल चिकित्सा शिविरों का आयोजन उनकी सेवा परियोजनाओं की सूची में शीर्ष पर है। “हम उदगीर और उधमपुर में विशाल स्वास्थ्य शिविरों और अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा मिशन में भाग लेने के लिए जाने जाते हैं। अब हम अपने लोगों तक भी वह सहायता पहुँचाना चाहते हैं,” मोंडे कहते हैं। 100,000 स्कूली बच्चों के लिए एक विशाल दन्त शिविर का आयोजन, रोटरी की पोलियो उन्मूलन पहल और झुकन्या बचाओफ को बढ़ावा देने के लिए रैलियों का आयोजन उनके एजेंडे के कुछ कार्यक्रम हैं।



निखिलेश त्रिवेदी

मेडिकल पेशेवर, रोटरी क्लब बालाघाट टाइगर्स, मंडल 3261

वह रोटरी को “किफायती” बनाना चाहते हैं

इन डीजी ने हाल ही में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय द्वारा दिए गए प्रबल सन्देश को गंभीरता से लिया है कि रोटरी में तड़क-भड़क से दूर रहें। “मैं आम रोटेरियनों के लिए रोटरी को दिलचस्प बनाना चाहता हूँ और उनकी पूर्ण भागीदारी प्राप्त करना चाहता हूँ। रोई द्वारा हाल ही में दिया गया सन्देश कि मंडल के बाहर समारोहों का आयोजन ना करें, उसी दिन से मेरी सोच और धारणा रही है जिस दिन मैं निर्वाचित हुआ।” यदि कोई समारोह एक आकर्षक स्थान पर आयोजित होने के कारण बहुत खर्चीला होता है तो उनका मानना है कि इससे कई रोटेरियन भाग लेने से वंचित रह जाते हैं। इसलिए “रोटरी को रोटेरियनों के लिए वहनयोग्य बनाना ही मेरी प्रथम प्राथमिकता होगी,” निखिलेश त्रिवेदी कहते हैं।

वह 1998 में रोटरी से जुड़े; वह एक GSE दल के सदस्य के रूप में 1987 में ऑस्ट्रेलिया गए थे और “मुझे लगा कि मुझपर रोटरी की कृतज्ञता का कर्ज था और साथ ही रोटरी ऑस्ट्रेलिया में किये गए कार्यों को देखकर मैं प्रभावित था।” उनके लौटने पर वह रोटरी से जुड़ने के अवसरों की तलाश में थे “लेकिन दुर्भाग्यवश मैं ऐसी जगहों पर पहुंचा जहाँ या तो कोई रोटरी नहीं थी या वह बहुत ही क्षेत्रीय थी। उस समय मैं कर्नाटक में था, इसलिए संगठन से नहीं जुड़ा।”

मगर जिस अवसर की उन्हें तलाश थी वह उन्हें तब मिला जब मध्यप्रदेश में जबलपुर के समीप, उनके गृहनगर बालाघाट में एक क्लब अधिकृत किया गया। वह ना केवल उससे जुड़े बल्कि उसके चार्टर सचिव भी बने। अपने वर्ष में एक गवर्नर के रूप में त्रिवेदी का ध्यान तड़क-भड़क को खत्म करने के अलावा, महिला सदस्यता में वृद्धि करने पर भी होगा। “मेरा मंडल इस क्षेत्र में काफी पीछे है और हमारे क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिशत भारत में महिलाओं के प्रतिशत की तुलना में बहुत कम है, जो खुद ही 20 प्रतिशत के विश्व औसत से काफी कम है।” जब महिला सदस्यों की बात आती है तो उन्होंने खुद से वादा किया है कि 20 प्रतिशत के लक्ष्य या कम से कम इसके नजदीक पहुँचने के लिए कड़ी मेहनत करना है।

तीसरा, मैं टिकाऊ सेवा परियोजनाएं करना चाहता हूँ; हाल ही में रोटरी समाचार ने हमारे द्वारा की गई कैथ लैब को प्रस्तुत किया था।



निरमल प्रकाश

कलर लैब, रोटरी क्लब अडूर, मंडल 2982

सदस्यता वृद्धि पर उनका फोकस

मैं 2002 में दोस्त बनाने और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए रोटरी से जुड़ा। बाद में रोटेरियनों द्वारा दुनियाभर में समुदायों में लाए जा रहे बड़े परिवर्तनों, विशेषरूप से पोलियो उन्मूलन में, को देखकर मैं अभिभूत हो गया,” निरमल प्रकाश कहते हैं। वह मंडल में 68 क्लबों के 3,000 रोटेरियनों के एक दल का नेतृत्व करते हैं और सदस्यता को 20 प्रतिशत से बढ़ाने और अवरोधन को 90 प्रतिशत तक प्रभावित करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। दो वर्ष पहले सदस्यता अध्यक्ष के रूप में उनके द्वारा किया गया कार्य, जिसने उन्हें रोई पुरस्कार भी दिलाया, क्लब में गुणवान सदस्यों को शामिल करने हेतु क्लब अध्यक्षों की मदद करने के लिए वह 10 क्रियाशील सदस्यों की खोज करने की योजना बना रहे हैं।

वह 300,000 डॉलर के लक्ष्य के साथ दृढ़ता से अपने मंडल के योगदान को दोगुना करने की योजना बना रहे हैं। “मैं प्रत्येक सदस्य से 100 डॉलर का योगदान करने का आग्रह करता हूँ, और मेरा लक्ष्य आसानी से पूरा हो सकता है।” इसके अलावा मैं इक्वै और मुख्य दानकर्ताओं को भी प्रोत्साहित करने को लेकर आश्वस्त हूँ, प्रकाश कहते हैं।

उनके एजेंडे में सभी क्लबों का क्लब सेंट्रल में पंजीकरण करना और अध्यक्षीय उद्घरण के लिए आवेदन करना, सभी रोटेरियनों द्वारा चूँ ठीकी पंजीकरण करना शामिल है। वह प्रत्येक क्लबों को दो स्कूलों में थळपड कार्यक्रम लागू करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं और उन्होंने वर्ष के दौरान वैश्विक अनुदान परियोजनाओं के अंतर्गत रोधक बांधों एवं शौचालय खंडों के निर्माण और ग्रामीणों की आजीविका में वृद्धि करने के लिए मवेशियों के दान की रूपरेखा तैयार कर ली है।■





Rotary

Rotary at a glance

Rotarians	:	12,37,694
Clubs	:	35,887
Districts	:	539
Rotaractors	:	2,56,519*
Clubs	:	11,153*
Interactors	:	5,26,723*
Clubs	:	22,901*
RCC members:		2,27,493*
RCC	:	9,891*

* As on June 1, 2018

Membership Summary

As on June 1, 2018

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
5	2981	112	4,662	220	61	226	170
5	2982	69	3,080	138	65	112	45
5	3000	127	5,346	460	296	664	195
4	3011	78	3,429	679	58	110	25
4	3012	87	3,446	674	70	129	56
5	3020	92	4,235	208	117	466	351
4	3030	92	5,067	632	83	313	164
4	3040	98	2,230	244	61	124	137
4	3053	75	2,836	471	18	56	95
4	3054	130	6,431	1,031	94	318	469
4	3060	101	4,355	519	62	123	136
4	3070	103	3,092	302	68	158	55
4	3080	78	3,371	226	73	216	108
4	3090	80	2,189	83	32	37	122
4	3100*	73	1,715	74	11	72	146
6	3110	115	4,031	316	51	49	104
6	3120	78	3,329	380	38	61	51
4	3131	131	5,620	1,174	113	284	90
4	3132	105	4,143	433	66	206	142
4	3141	92	5,507	1,201	120	255	82
4	3142	83	3,188	500	71	195	65
5	3150	99	3,694	371	93	229	109
5	3160	70	2,459	132	27	48	81
5	3170	127	5,667	408	61	310	161
5	3181	74	3,235	255	35	179	104
5	3182	83	3,428	264	36	274	94
5	3190	129	5,213	640	155	359	51
5	3201	140	5,279	326	101	131	47
5	3202	128	4,919	246	105	436	46
5	3211	138	4,580	280	13	89	124
5	3212	98	4,009	306	113	278	140
5	3231	71	2,981	132	56	201	239
5	3232	106	4,290	618	149	317	80
6	3240	88	3,071	355	65	148	154
6	3250	98	3,815	666	51	209	183
6	3261	70	2,585	338	16	102	42
6	3262	95	3,376	395	47	71	75
6	3291	145	3,808	709	82	131	592
India Total		3,758	1,47,711	16,406	2,833	7,686	5,130
5	3220	70	1,969	251	84	201	75
6	3271	81	1,444	245	53	16	13
6	3272	164	3,281	470	44	37	37
6	3281	205	5,911	856	234	91	186
6	3282	141	4,012	408	132	48	41
6	3292	115	4,498	682	122	117	108
S Asia Total		4,534	1,68,826	19,318	3,502	8,196	5,590

*Non-districted.

Source: RI South Asia Office



भरतनाट्यम

शरीर, मन एवं आत्मा का मिलन

सीता रत्नाकर

थं

जावुर के भव्य बृहदेश्वर मंदिर के 1000 वर्ष पूर्ण होने पर इसका उत्सव मनाने के लिए मंदिर के केन्द्रीय प्रांगण में एक हजार नर्तकों को भरतनाट्यम करते देखना नृत्य का एक ऐसा असाधारण दृश्य है जिसकी छाप सदा के लिए मेरे मन में अंकित हो गई। कितना देदीप्यमान दृश्य था वह! वाकई मैं अविस्मरणीय, जीवन में एक बार होने वाला अनुभव! दुनियाभर के बहु-राष्ट्रीय, बहु-भाषीय और बहु-धार्मिक नर्तकों के संगम को बिना किसी अभ्यास के एकदम उचित तालमेल के साथ नृत्य करते देखना इन्द्रियों के लिए एक दावत के समान था। इस विशाल नृत्य समारोह की कल्पना और इसका समायोजन मशहूर भरतनाट्यम व्यख्याता डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम द्वारा किया गया था और एक

उच्च शक्ति द्वारा इसका आयोजन किया गया था। इस मनमोहक प्रस्तुति को देखने और समस्त भारत के टेलीविज़न दर्शकों के लिए इसका सीधा प्रसारण निदेशित करने के लिए मैं सौभाग्यशाली थी।

बृहदेश्वर मंदिर वास्तुकला का एक चमत्कार है जो इतिहास के एक हजार से भी अधिक वर्षों का साक्षी रहा है। सदियों पहले इन प्रभामंडलों और अहातों में मंदिर की पूजा अनुष्ठान के रूप में भरतनाट्यम किया जाता था। यहीं पर मंदिर की दीवारों पर नर्तकों और संगीतज्ञों के नाम अंकित किये गए थे। इसी शहर में राजा ललित कलाओं को प्रोत्साहित और संरक्षित करते थे; यहीं वह उचित परिस्थितियाँ थी जहाँ पर तंजोर चतुष्क ने नृत्य के लिए एक संगीत गोष्ठी प्रारूप को व्यवस्थित रूप से तैयार किया था और अनेक अमर गीतों

की रचना की थी जिन पर आज भी प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं।

25 सितंबर, 2010, वह ऐतिहासिक दिन था जब इस मनोहर मंदिर में एक हजार समर्पित नर्तकों ने नृत्य द्वारा की गई गहन भावोत्तेजक आराधना से मंदिर को प्रकाशमान कर दिया था। कला एवं वास्तुशिल्प, परंपराओं एवं तकनीक का यह उत्तम सह-अस्तित्व आज की दुनिया में भरतनाट्यम की प्रासंगिकता का बेहतर वर्णन कर सकता है।

तमिलनाडू में उत्पन्न हुआ भरतनाट्यम शायद भारत की सबसे प्राचीन शास्त्रीय संगीत परंपरा है जिसका अस्तित्व उपलब्ध साहित्यों के मुताबिक 2,000 वर्षों से भी अधिक पुराना है। चूंकि नृत्य विधाएं दक्षिण भारत के मंदिर नृत्यों से विकसित हुई हैं, इसलिए यह ऐसी शास्त्रीय कला बनी हुई

है जो आज भी कलात्मक अभिव्यक्तियों को आध्यात्मिकता से जोड़ती है। भरतनाट्यम देवदासी टी बालासरस्वती इस उत्कृष्ट नृत्य शैली को इन शब्दों में वर्णित करती है: “भरतनाट्यम वह कला है जो शरीर...नर्तकी को समर्पित करती है, जो उसकी पहचान को ताल एवं संगीत में घोल देती है, उसके शरीर को आत्मा की अनुभूती एवं अभिव्यक्ति का एक जरिया बनाती है, कम से कम नृत्य की अवधि के दौरान।”

भरतनाट्यम को पूर्व में सादिर नाम से जाना जाता था, और नया नाम उसे 20वीं सदी में मिला। इसे यह नाम संत भरत के नाम पर मिला जिन्होंने दो सहस्राब्दी पहले कलाओं पर नाट्य शास्त्र पुस्तक लिखी थी। एक अन्य विवेचन है कि यह एक संक्षिप्त रूप है, जिसमें भावम के लिए *भृ*, रागम के लिए *र* और तालम के लिए *त* प्रयोग किया गया है जो मिलकर *नाट्यम* या नृत्य बनाते हैं।

भरतनाट्यम की आंतरिक खूबसूरती दर्शकों को एक भाव विरेचक अनुभूती प्रदान करने में है जो भाषा एवं तकनीक के ज्ञान के परे होती है। पूर्व में, यह दक्षिण भारत के कुछ विशेष परिवारों द्वारा ही किया जाता था और यह कला देवदासियां कहलाए जाने वाली कर्मकांडी नर्तकियों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे सौंपी जाती थी। परंपरागत रूप से, यह एकल नृत्य हुआ करता था जिसे अधिकतर महिलाओं द्वारा ही किया जाता था।

एक नर्तकी के साथ प्रदर्शन का संचालन करने वाला एक गुरु या *नडूवनर*, स्वर देने वाला एक गायक, *मृदंगम* या *थविल* पर ताल के लिए एक तालवादक, और राग के लिए *नादस्वरम* या बांसुरी जैसे सुषिर वाद्य एवं वीणा या वायलिन जैसे तार वाले वाद्य यंत्र होते थे। यह तकनीक हाथ, पैर, चेहरे और शारीरिक गतिविधियों के विस्तृत भंडार पर आधारित होती है जिन्हें नृत्यांशों के साथ किया जाता है। नृत्य तीन तत्वों का मिश्रण होता है, जो है, शुद्ध नाच या *नृत्त*, हाव-भाव एवं ताल का संयोजन या नृत्य और नाटकीय तत्व या नाट्य। चेहरे के भाव जिन्हें *अभिनय* कहा जाता है नौ सार्वभौमिक भावनाओं पर आधारित होते हैं जो नवरस कहलाते हैं - *शृंगार* (प्रेम), *हास्य*, *करुण* (शोक), *रौद्र* (गुस्सा), *वीर* (उत्साह), *भयानक* (भय), *भीभत्स* (घृणा), *अद्भुत* (आश्चर्य) और *शान्तम* (शांति)।



शनमुगा सुंदर द्वारा भरतनाट्यम

अभिनय की जड़े नाट्यशास्त्र लेखों में मिलती है जो रस को नर्तक एवं दर्शक दोनों के लिए सर्वोच्च सौंदर्य अनुभव के रूप में परिभाषित करते हैं।

प्रख्यात भरतनाट्यम नर्तकी अलारमेल वल्ली नृत्य के उनके जून को साझा करती है - “मेरे लिए, भरतनाट्यम की महानता जीवन के शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक आयामों को साथ लाने की इसकी निहित क्षमता में है। एक नर्तकी एक ही समय में एक मूर्तिकार होती है, जो सुन्दर और शक्तिशाली दोनों रूपों में रिक्त स्थान को मूर्त रूप देती और उसकी संरचना करती है। वह एक चित्रकार होती है, जो खींची गई रेखाओं में हल्के और विविध रंग भरकर, उसको जीवन प्रदान करती है। वह एक कवि होती है जो अपनी हरकतों, हाव-भाव एवं अभिव्यक्तियों से अपनी कविता लिखती है। अंततः वह एक साधक होती है, जिसका नृत्य एक श्रेष्ठ, परिवर्तनकारी अनुभव - अपनी स्वयं की हस्ती द्वारा एक आनंदमय प्रार्थना - बन जाता है।”

भरतनाट्यम आज एक ऊर्जस्वी, जीवंत विद्यमान परंपरा है जिसने संगीत, साहित्य, मूर्तिकला और रंगमंच को सम्मिलित कर लिया है जिससे कलाकार को रचनात्मक अन्वेषणों के लिए अनंत अवसर मिलते हैं। भरतनाट्यम के रंगपटल की खूबसूरती को समझने एवं उसकी सराहना करने के लिए, चलिए नृत्य प्रदर्शन के मार्ग या रास्ते से



रागिणी देवी

गुजरते हैं। प्रसिद्ध नर्तकी टी बालासरस्वती आदरपूर्वक इन शब्दों में इसे समझाती है - “भरतनाट्यम की प्रस्तुति एक विशाल मंदिर की तरह संरचित की गई है। हम अलारिप्पू के बाहरी गोपुरम् (हॉल) से प्रवेश करते हैं, जातिस्वरम् द्वारा अर्ध मंडपम् (हॉल का आधा रास्ता) को पार करते हैं, फिर सबदम् के मंडपम् को पार करके वर्णम् की पवित्र सीमा में प्रवेश करते हैं।

“यही वह जगह है, वह स्थान है जो नर्तकी को नृत्य की ताल, मुद्रा और संगीत में मग्न होने के लिए व्यापक दायरा प्रदान करता है। वर्णम् वह शाश्वतता है जो नर्तकी को उसकी स्वयं की रचनात्मकता के साथ-साथ कला की परंपरा को पूरी गुंजाईश प्रदान करके, आत्म संतुष्टि में हर्षित होने के लिए एक सर्वदा-विस्तारशील अवसर प्रदान करता है।” पादम् एक भावोत्तेजक नृत्य विधा है जिसमें भावनाएं तीव्र अभिव्यक्तियों के माध्यम से चित्रित की जाती हैं और उसके बाद तिल्लाना के माध्यम से विशुद्ध आनंद प्रस्फुटित होता है। नर्तक पारंपरिक मार्ग को एक ऐसी भक्तिमय कविता पर भाव प्रकट करके पूर्ण करते हैं जो उसकी सादगी में प्रगाढ़ होती है और कलाकार, दर्शकों एवं ब्रम्हाण्ड के लिए ईश्वरीय कृपा का आह्वान करती है।

शिव सभी हरकतों, आवाजों एवं सुन्दरता के मूल स्रोत एवं मूर्त रूप हैं और उन्हें लौकिक नर्तक नटराज, नृत्य के देवता, के रूप में पूजा जाता है। भारतीय देवगाथाओं के अनुसार, शिव और उनकी पत्नी पार्वती अभिन्न विपरीत एवं अनुपूरक पुरुष एवं स्त्री ताकतों, यिन और यैंग, का प्रतीक हैं। माना जाता है कि दोनों ने एक महान नृत्य युगल में हिस्सा लिया था जिसे देखने स्वर्ग के सभी लोग आए थे जहाँ पार्वती ने शिव के साथ कदम से कदम एवं मुद्रा से मुद्रा मिलाकर नृत्य किया था। जब शिव ने आखिर में एक पैर ज़मीन पर और एक पैर अपने सिर के ऊपर उठाकर ऊर्ध्व ताण्डवम् किया, तो पार्वती ने इसे करने से मना कर दिया क्योंकि वह शरमा गई थी और उन्हें लगा कि ऐसा करना अशोभनीय होगा। उनके सम्मोहित कर देने वाले नृत्य के 108 करणया मुद्राएँ चिदंबरम्

स्थित थिल्लई नटराज मंदिर की उत्कृष्ट पथरों की नक्काशियों में दर्शाई गई हैं।

दूरदर्शन भारत की पूर्व उप महानिदेशक और नर्तकी कमालिनी दत्त साझा करती हैं कि कैसे भरतनाट्यम ने उनकी ज़िंदगी को प्रभावित किया। “मैं 18 साल की थी - एक ऐसी उम्र की जब एक व्यक्ति उसके रास्ते में आने वाली हर चीज़ पर सवाल करता है। मैं क्या सीख रही थी - भरतनाट्यम, दर्शनशास्त्र, भक्ति, शिव की सर्वविद्यमानता या आत्मबोध का मार्ग? मुझे अहसास हुआ कि मैं भूत, वर्तमान और भविष्य को जोड़ने का साधन हूँ।”

कुछ सदियों पहले लिखा गया थेवरम् उनके मन, शरीर और आत्मा के माध्यम से जीवित हो उठा। मुझे अहसास हुआ, हमारी मौखिक परंपराएं, विशेषरूप से कला का प्रदर्शन, इस मामले में - भरतनाट्यम, महान तमिल संस्कृति का अभिन्न अंग है। मैंने सर्वोच्च सौंदर्य संवेदनशीलता और एक ऐसे समावेशी समाज के मूल्यों की बारीकियों को आत्मसात किया जिनकी कल्पना संत कवियों ने की थी।

लेकिन जब वह 19 साल की थी, वह लगभग प्राणघातक रूप से दुर्घटनाग्रस्त हुई जिसने

एक कठोर जीवन, एक अत्यंत

दक्षतापूर्ण काम और संधिवात गठिया

जैसी एक स्थायी बीमारी का सामना

करने में नृत्य ने मेरी मदद की।

कमालिनी दत्त

दूरदर्शन की पूर्व उप निदेशक जेनरल

धीरे-धीरे उनके नृत्य को समापन पर ला दिया। “मुझे दूरदर्शन में नौकरी मिल गई जिसने कुछ हद तक उनकी ज़िंदगी की दिशा बदल दी लेकिन नृत्य ने मुझे कभी नहीं छोड़ा, एक सेकंड के लिए भी नहीं। वह रचनात्मक विचारों में रूपांतरित हो गया जिसने मुझे टीवी प्रस्तुतियों को एक कलाकृति के रूप में परिवर्तित करने के लिए सक्षम बनाया। एक कठोर जीवन, एक अत्यंत दक्षतापूर्ण काम और संधिवात गठिया जैसी एक स्थायी बीमारी का सामना करने में नृत्य ने मेरी मदद की। इसने मेरा हाथ तब भी थामा जब मैंने एक पुरुष-प्रधान कार्यक्षेत्र में चुनौतियों का सामना किया। मेरी आंतरिक यात्रा में, भरतनाट्यम मेरा सबसे अच्छा मित्र है। इसने यह सीखने में मेरी मदद की कि शरीर एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है लेकिन अन्तर्भाग को छूने के लिए, आपको परे जाना पड़ता है।”

19वीं सदी तक भरतनाट्यम विशेष रूप से हिन्दू मंदिरों और महलों तक ही सीमित था और तंजावुर राजाओं के समय में अपने सौंदर्य की ऊँचाइयों तक पहुँचा। 20वीं सदी के प्रारंभ में देवदासी प्रथा पर प्रतिबन्ध लगने के बाद, यह शहरों में चला गया और इसने पूरे भारत और विदेशों में भी तेजी से प्रसिद्धि अर्जित की।

रुक्मणी देवी अरुंडेल एक पथ प्रदर्शक थी जिन्होंने 1936 में मद्रास में कलाक्षेत्र की स्थापना की, जो पहली नृत्य अकादमी थी जहाँ भरतनाट्यम सिखाया जाता था। मृणालिनी साराभाई भी एक अग्रदूत है जिन्होंने अहमदाबाद स्थित उनके दर्पण अकैडमी ऑफ़ परफॉर्मिंग आर्ट्स के माध्यम से

**भरतनाट्यम की आंतरिक
खूबसूरती दर्शकों को एक
भाव विरेचक अनुभूती
प्रदान करने में है जो
भाषा एवं तकनीक के
ज्ञान के परे होती है।**



टी बालसरस्वती

भरतनाट्यम को लोकप्रिय बनाया। एस्थर शरमन, एक अमेरिकी नर्तकी, जो 1930 में शास्त्रीय नृत्य सीखने के लिए भारत आई शायद पहली गैर-देवदासी नर्तकी है जिन्होंने इस कला को पुनर्जीवित किया और भारत एवं यूरोप में नृत्य प्रदर्शन किया। वह रागिनी देवी कहलानी लगी और उन्होंने न्यू यॉर्क में एक डांस स्टूडियो शुरू किया जहाँ भारतीय भरतनाट्यम सिखाया जाता था।

टी बालासरस्वती पहली भारतीय शास्त्रीय नर्तकी थी जिन्होंने भारत के बाहर भरतनाट्यम किया था और वह विश्व मानचित्र पर भारतीय शास्त्रीय नृत्य को प्रस्तुत करने के लिए विख्यात है। इन अद्भुत नर्तकियों के अग्रगामी प्रयासों के कारण

ही आज शास्त्रीय नृत्य उसकी वर्तमान कीर्ति का आनंद ले रहा है। भरतनाट्यम एक बहु-आयामी नृत्य शैली के रूप में विकसित हुआ है जिसमें एकल एवं सामूहिक प्रस्तुतियाँ दोनों शामिल हैं जिसने धार्मिक, सामाजिक एवं भाषा के बंधनों को तोड़कर प्रगति की है। नर्तक इसकी ओर खिंचे चले आते हैं क्योंकि यह उन्हें प्रबुद्ध एवं विकसित वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करने के लिए नए काम की रचना करने हेतु बौद्धिक एवं कलात्मक रूप से ललकारता है। आज, भरतनाट्यम पूरी दुनिया में महिला एवं पुरुष नर्तकों द्वारा सबसे व्यापक रूप से की जाने वाली नृत्य शैली बना हुआ है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी फाउंडेशन के क्षेत्रीय अनुदान अधिकारी चंद्रा पालमर ने जयपुर और अहमदाबाद में आरआई मंडल 3054 की विभिन्न परियोजनाओं का दौरा किया जिन्हें टीआरएफ अनुदान के माध्यम से निष्पादित किया जा रहा है। अपनी चार दिवसीय यात्रा के दौरान उन्होंने आगामी सामुदायिक आकलन योजना समेत वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन की स्वीकृति के लिए आवश्यक विभिन्न चरणों के बारे में रोटैरियन को समझाया।

उनके साथ डीआरएफसी रमेश अग्रवाल एक परियोजना का दौरा करने गए, जहाँ टीआरएफ ने विकलांग बच्चों के लिए एक स्कूल कक्षाओं के लिए अतिरिक्त उपकरण देकर सहायता उपलब्ध कराया था। उन्होंने एक और परियोजना का दौरा किया, जिसे एकेएस सदस्य सुरेश पोद्दार द्वारा प्रदत्त निधि से निष्पादित किया गया है। उन्होंने नोट किया कि कैसे रोटरी ने जैतपुरा, ढोडसर, भोजवाला आदि गाँवों में 11 ग्रामीण स्कूलों का कार्या-कल्प कर दिया है।

बाद में उन्होंने प्रसिद्ध जयपुर फुट परियोजना का दौरा किया, जहाँ टीआरएफ ने कृत्रिम अंगों के लिए विभिन्न वैश्विक अनुदान उपलब्ध कराया है, इसके साथ ही उन्होंने लाभार्थियों से बातचीत की। उन्हें कृत्रिम अंगों के निर्माण और फिटिंग की प्रक्रिया के बारे में बताया गया।

टीआरएफ अनुदान अधिकारी ने मंडल 3054 का दौरा किया

टीम रोटरी न्यूज़



बाएँ से : सुरेश पोद्दार, टीआरएफ क्षेत्रीय अधिकारी चंद्रा पालमर, किरण पोद्दार और DRFC रमेश अग्रवाल, एक स्कूल की प्रधान अध्यापक के साथ।

अहमदाबाद में, उन्होंने अनुदान प्रबंधन पर एक सेमिनार को संबोधित किया और बाद में टीआरएफ की कुछ परियोजनाओं का दौरा किया, जिसमें गांधीनगर में एसएमवीएस अस्पताल में निष्पादित की जा रही परियोजना भी शामिल

है, जहाँ रोटरी क्लब विजापुर की सहायता से टीआरएफ एक महत्वपूर्ण किडनी देखभाल इकाई स्थापित करने जा रहा है। इसके अलावे, उन्होंने हिम्मतमनगर के पास कुछ शौचालय परियोजनाओं का भी दौरा किया। ■

सम्मेलन

जर्मनी जिसके बारे में आप नहीं जानते हैं

जब लोग जर्मनी यात्रा करने के बारे में सोचते हैं, तो कुछ धारणाएं मस्तिष्क में उमर-घुमर सकती हैं: जैसे म्यूनिख में ओकबॉर्बेफेस्ट, नाटकीय अल्पाइन प्राकृतिक दृश्य, मध्यकालीन शहरों के साथ रोमांटिक सड़कें। लेकिन जो लोग 1 से 5 जून तक हैम्बर्ग में 2019 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में भाग लेंगे, वे जर्मनी के एक और पहलु का साक्षात्कार करेंगे जो समान रूप से आकर्षक है।

यूरोप के दूसरे सबसे बड़े बंदरगाह के लिए मशहूर, हैम्बर्ग अपने विश्वव्यापी महानगरीय दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। यह शहर पर्याप्त नहरों और पुलों से लैस है, जो इसे एम्स्टर्डम का प्रतिद्वंद्वी बनाता है; शहर के बीचों-बीच स्थित दो झीलें लोगों को अपनी ओर



आकर्षित करती प्रतीत होती है; और निकट स्थित उत्तरी सागर और बाल्टिक समुद्र तटों तक पहुंचना बहुत ही आसान है जो मीलों तक फैला हुआ है।

आपके हैम्बर्ग में किसी भी लेखक/होसेन पहने पोल्का नर्तकियों के साथ संयोग से मिलने की संभावना नहीं है, लेकिन आप एक विश्व स्तरीय संगीत कार्यक्रम मॉल में जा सकते हैं; आप मेनू में वीनर सचनित्जेल

नहीं मिल सकता है, लेकिन समुद्री भोजन ताजा और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है; और जब आप एल्बे पर चलने वाले विशाल जहाजों को देखेंगे तो राइन नदी के तट पर स्थित महलों के विचार को भुल जायेंगे।

बेशक, जर्मनी की कुछ रूढ़िवादिता सच्चाई हैं, यहां तक कि हैम्बर्ग में भी: सार्वजनिक परिवहन प्रणाली, उदाहरण के लिए, कुशल, साफ और नेविगेट करने में आसान है। सम्मेलन में जाने वालों को इसका उपयोग करना आसान होगा, क्योंकि उन्हें सभी प्रकार के श्रेणियों में सफर करने वाल एक ट्रांजिट पास पंजीकरण के साथ उपलब्ध कराया जाएगा।



riconvention.org पर हैम्बर्ग में 2019 रोटरी सम्मेलन में शामिल होने के लिए पंजीकरण कराएं।

कलकत्ता साउथ सिटी ने रजत जयंती मनाया

टीम रोटरी न्यूज़

कलकत्ता साउथ सिटी, मंडल 3291 के रोटरी क्लब ने हाल ही में पीआरआईपी के आर रविंद्रन और वानाथी रविंद्रन की उपस्थिति में अपनी रजत जयंती मनाया।

इस अवसर पर पीआरआईपी रविंद्रन द्वारा क्लब के 25 वर्षों की सफल यात्रा का वर्णन करने वाले एक कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया गया। क्लब की विभिन्न मानवीय सेवा परियोजनाओं को सफलतापूर्वक निष्पादित करने पर बधाई देते हुए, उन्होंने सदस्यों को “अगले 25 वर्षों में भी इससे भी व्यापक प्रभाव डालने वाले परियोजनाओं को निष्पादित

करने की चुनौती दी ताकि अधिक से अधिक संख्या में लोग रोटरी से जुड़ सकें।”

इस ऐतिहासिक लक्ष्य को प्राप्त करने को यादगार बनाने के लिए, क्लब ने वंचित परिवारों के 25 बच्चों को गोद लिया है, और उनके लिए हॉस्टल फीस समेत अपनी पूरी शिक्षा को प्रायोजित किया है। अन्य परियोजनाओं में वैश्विक अनुदान के अधीन सरोज गुप्ता कैंसर सेंटर और रिसर्च इंस्टीट्यूट को ₹8 करोड़ की रेडियो-थेरेपी मशीन प्रदान करना और बहरामपुर मुर्शिदाबाद में रक्त बैंक स्थापित करना शामिल है। ■



PRIP के आर रविंद्रन रोटरी क्लब कलकत्ता साउथ सिटी की रजत जयंती समारोह को सम्बोधित करते हुए। वानाथी रविंद्रन और अस्पताल के सचिव अंजना गुप्ता भी चित्र में मौजूद हैं।



सौंदर्य स्पर्द्धा से प्राप्त निधि स्तन कैंसर के उपचार को समर्पित

टीम रोटरी न्यूज़

मिथिला के रोटरी क्लब, मंडल 3250, ने उत्तरी बिहार के एक शहर मिथिला में एक सौंदर्य स्पर्द्धा की मेजबानी की। क्लब के अध्यक्ष डॉ रंजना आर मिश्रा ने कहा, ‘मिस और मिस्टर ब्रांड मिथिलंचल’ कार्यक्रम का उद्देश्य मिथिला की कला, संस्कृति और परंपरा को भी जन-सामान्य के समक्ष प्रदर्शित करना है। ग्रेंड फाइनल तक मंडल में 45 दिनों तक अन्य क्लबों के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया था

जिसमें ब्वालीफाइंग राउंड का विभिन्न चरणों को शामिल किया गया था।

चंद्रशेखर सिंह, मंडल मजिस्ट्रेट और मंडल गवर्नर विवेक कुमार ग्रेंड फाइनल में मुख्य अतिथि थे।

डीजी विवेक कुमार ने कहा कि इस कार्यक्रम ने महिलाओं के आत्म-सम्मान को बढ़ाने और उन्हें अपने सीमित दायरे से बाहर आने तथा अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने का अवसर भी दिया। ■

कार्यस्थल में तंदरुस्ती

शीला नम्बियार

अच्छा स्वास्थ्य केवल बीमारी का ना होना ही नहीं है।

जब आप एक कामकाजी व्यक्ति होते हैं तो आप अक्सर कुछ समय के लिए निराश महसूस करते हैं। मगर तंदरुस्ती सुपर मॉडल, एथलीट या बॉडी बिल्डर के लिए ही समयबद्ध या आरक्षित नहीं है; एक योगी जिसने मानवता त्याग दी है, या एक पतनशील आत्मकामी जो अपनी तंदरुस्ती और रूप रंग को लेकर मनोग्रहीत है और अधिकांश समय जिम में बिताता है। यह सभी के लिए जरूरी है, विशेषरूप से अधिक काम करने वाले कॉर्पोरेट या पेशेवरों के लिए।

एक कामकाजी व्यक्ति के लिए तंदरुस्ती केवल कसरत करना और जिम जाना ही नहीं है। इसमें एक फिटनेस रूटीन की योजना बनाने और उसे निष्पादित करने से लेकर, उचित भोजन खाने, आत्मविश्वास और कार्यक्षमता में वृद्धि करने और सबसे अधिक महत्वपूर्ण, तनाव, अवसाद और चिंता से निपटने तक सबकुछ शामिल होना चाहिए। मोटापा, मधुमेह, उच्चरक्तचाप एवं हृद-धमनी रोग जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों का फिटनेस, भोजन एवं जीवनशैली में परिवर्तन द्वारा निवारण करना उन सभी के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए जो उत्पादक और सफल होना चाहते हैं।

जब आप कॉर्पोरेट सीढ़ी चढ़ रहे होते हैं तो समय शायद सबसे दुर्लभ वस्तु होती है। शायद आपको ऐसा लगे कि कसरत करने में एक घंटा खर्च करना आपके काम का समय खराब कर सकता है जिसे आप हिसाब-किताब करने, ग्राहकों/मरीजों के साथ सौदा करने या सौदा पूरा करने में लगा सकते हैं। हालाँकि उन सभी महत्वपूर्ण चीजों में कारगर होने के लिए यह जरूरी है कि आप शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करें। विचारों की स्पष्टता, निपुणता,

उत्पादकता, सकारात्मकता, तनाव से निपटने की क्षमता बड़ा काम करने और कैरियर के विकास हेतु महत्वपूर्ण है।

आहार - स्वस्थ भोजन एक सामुदायिक और सामाजिक मुद्दा है। कुछ कंपनियाँ अपने कर्मचारियों को परिसर में स्थित अल्पाहार-गृह से भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इस स्थिति में स्वस्थ विकल्प उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी कंपनी की है। दोपहर के भोजन में संतुलित आहार लेने के स्थान पर अधिक कैलोरी वाला या अधिक तेल में तला हुआ भोजन करना पसन्द करते हैं।

किसी कैटीन या किसी सार्वजनिक भोजनालय में स्वस्थ विकल्प देना कठिन नहीं है।

अगर ये विकल्प उपलब्ध नहीं हो या किसी की पहुँच में नहीं हो, तो उसे जितना संभव हो घर से सर्वोत्तम भोजन पैक करवाकर ले जाना चाहिए। नाश्ते के लिए फल या नट्स रखना चाहिए, कंपनी के काम से बाहर जाने पर चिकनाईयुक्त पेस्ट्री का चुनाव

करने के बजाए चिकन/ट्यूना मछली, काबुली चने की चटनी/सोयाबीन के पनीर के साथ पूर्णतः गेहूँ से बने सैंडविच का चुनाव करना चाहिए, या फिर शुद्ध सूप का चुनाव करना चाहिए, और लगातार चिप्स, स्वीट टी और कॉफी लेने से परहेज करना चाहिए। इसलिए एक व्यक्ति को स्वस्थ भोजन के मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी होना चाहिए और फिर उसे घर से दूर होने के बाद भी असंख्य विकल्प मिलेंगे।

शारीरिक फिटनेस: जीवन में एक उचित फिटनेस रूटीन को शामिल करने से एकाग्रता, ऊर्जा स्तरों और कार्यक्षमता में वृद्धि करने में मदद मिलती है; यह अनिद्रा, अवसाद, लम्बे समय की थकान, मोटापा और कई अन्य विकारों से लड़ने में मदद करता है जिनसे आज हम पीड़ित हैं।

पश्चिम और भारत में कई बड़े कॉर्पोरेट घरानों में कार्यस्थल पर ही फिटनेस सुविधा उपलब्ध करवाई गई है। विभिन्न संगठनों में किये गए अध्ययनों के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि जो कर्मचारी नियमित रूप से फिटनेस गतिविधियों में भाग लेते हैं



उनकी अनुपस्थिति की दर कम होती है; बेहतर नींद, बेहतर तनाव प्रबंधन, खुश और स्वस्थ कर्मचारियों के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप स्वास्थ्य देखभाल पर खर्च कम हो जाता है और काम की उत्पादकता और गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी हो जाती है। कई भारतीय कंपनियों - इनफोसिस, बैंगलोर जिसने एक 10,000 वर्ग फीट की व्यायामशाला स्थापित की है, हुंडई मोटर इंडिया, दिल्ली की एलजी फैक्ट्री ऐसे कुछ नाम हैं - ने भी अपनी संरचना के अंतर्गत सुविधाजनक स्वास्थ्य केन्द्रों को शामिल किया है।

एक फिटनेस केंद्र तक पहुँच, उन अनुषंगी लाभों में से एक है जो कुछ कॉर्पोरेट उनके कर्मचारियों को प्रदान करते हैं। चूंकि यह सुरक्षात्मक एहतियात के रूप में विस्तारित होता है तो क्या यह मेडिकल इंश्योरेंस या स्वास्थ्य परीक्षण से भी बेहतर नहीं है? कुछ कंपनियों ने इसे ऐसा ही पाया है। विशेषरूप से वे लोग जो अधिक बैठे रहने वाली नौकरियाँ करते हैं, उनके लिए अपक्षयी रोगों, मोटापा, हृद-धमनी रोग, गहरी नस घनास्रता से बचाव तभी संभव है जब कर्मचारी अपनी दिनचर्या में फिटनेस रूटीन को शामिल करते हैं।

हालाँकि अकेले फिटनेस केंद्र तक की पहुँच, कर्मचारियों में अनुपालन की कमी की समस्या का समाधान नहीं कर सकती। एक सर्वसुविधायुक्त जिम, सौना, और पूल या टेनिस कोर्ट की स्थापना केवल फिटनेस के लिए किये गए प्रयासों का हिस्सा है। फिटनेस के उचित विज्ञान का प्रयोग सुनिश्चित करना और अभ्यास करना भी महत्वपूर्ण है।

शुरुआत में कर्मचारियों को नियमित व्यायाम के कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आदेश देना आवश्यक है, और उन्हें ऐसा करने के लिए समय उपलब्ध करवाना चाहिए। एक 16 घंटे की कार्य पारी, जो पहले से ही इतनी थका देने वाली हो, में व्यायाम शामिल करना बिल्कुल अनुकूल नहीं हो सकता। उच्च स्तरीय कर्मचारी, सीईओ और निदेशक जब उनके स्वयं की तंदरुस्ती को लेकर उतने ही जोशीले होते हैं जितना वे उनके कर्मचारियों के लिए होते हैं, तो यह उत्साह ऊपरी स्तर से निचले स्तर तक पूरी कंपनी में फैलता जाता है।

भावनात्मक/मनोवैज्ञानिक तंदरुस्ती: हम सभी जानते हैं कि अपने काम से प्यार करना एक खुशहाल कार्यक्षेत्र की कुंजी है। हालाँकि यह हमेशा मज्जेदार और सुखद नहीं हो सकता।

जब काम का तनाव कम होने लगता है, तो प्रभावी रूप से तनाव को कम करने के तरीके सिखाए जा सकते हैं। नियमित योग कक्षाएं, जल्दी-जल्दी साँस लेने एवं छोड़ने का रूटीन, मांसपेशियों की बढ़ती शिथिलता, सचेत ध्यान, तनाव से मुक्ति पाने के महत्व पर नियमित कार्यशालाओं का आयोजन, कर्मचारियों की मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ रहने में मदद करेंगे।

कर्मचारियों को ऐसी सुविधाएं मुहैया करवाने के आर्थिक लाभ स्पष्ट हैं। एक अस्वस्थ कर्मचारी कंपनी के लिए संपत्ति होने के बजाए उसकी जिम्मेदारी होता है। प्रत्येक कंपनी के लिए इस सच्चाई को समझना और इसे रोकने हेतु कार्य करना फायदेमंद है। कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य बीमा प्रस्तावित करते समय, यह भी विवेकपूर्ण होगा कि आवश्यक रोगनिरोधी उपायों द्वारा उन बिमारियों को रोक सकें। ह ना केवल आर्थिक रूप से लाभप्रद होता है, एक सक्रिय और मजबूत श्रमशक्ति को भी तैयार करता है।

कार्यस्थल पर छोटे-छोटे परिवर्तन कीजिए

- वरिष्ठ स्तर के प्रबंधन से स्वस्थ जीवन हेतु प्रोत्साहन और समर्थन।
- अगर जरूरत पड़े तो, कार्यदिवस के भीतर एक स्वास्थ्य कार्यक्रम में भाग लेने हेतु समय प्रदान करें।
- अगर संभव हो, तो एक सुसज्जित फिटनेस केंद्र तक पहुँच प्रदान करें।

- सप्ताह में दो दिन सामूहिक कक्षाओं का आयोजन करें।
- अल्पाहार गृह में स्वस्थ भोजन प्रदान करें।
- शारीरिक फिटनेस, तंदरुस्ती, भोजन एवं मनोवैज्ञानिक सेहत पर वार्ता आयोजित करें।
- लगातार बैठने से बचें। जब आपकी अधिक बैठे रहने वाली नौकरी हो तो हर 20 मिनट में उठें और थोड़ा चले-फिरे।
- (बैठकर बैठक करने के बजाए) चहलकदमी करते हुए बैठक कीजिये।
- एक साथी कर्मचारी को नियमित रूप से जिम जाने और एक दूसरे को प्रेरित करने के लिए तैयार कीजिये।
- व्यायाम मनोविज्ञान, स्वास्थ्य शिक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा, कैंसर की रोकथाम, पदार्थ दुरुपयोग नियंत्रण, तनाव प्रबंधन आदि पर स्वास्थ्य कार्यशालाएं आयोजित करें।
- कंपनी के भीतर मज्जेदार चुनौतियाँ और प्रोत्साहन, उदाहरण के लिए, कौन कितनी सीढ़ियाँ चढ़ेगा या कौन कितना वजन कम करेगा, कर्मचारियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- नियमित कंपनी गतिविधियाँ जिनमें शारीरिक गतिविधियाँ जैसे खेल, लंबी पैदल यात्रा, टहलना शामिल हो, का आयोजन करें।

अपने स्वास्थ्य और तंदरुस्ती को बेहतर करने का अंतिम निर्णय और इसकी जिम्मेदारी बेशक उस व्यक्ति की होती है। कार्यस्थल पर ऐसी जीवनशैली को प्रोत्साहित करने वाले पेशेवर मार्गदर्शन और एक सहायक वातावरण का होना केवल एक अतिरिक्त लाभ है। अगर आप ऐसी ही किसी कम्पनी में काम करने में भाग्यशाली हैं, तो इसे अधिलाभ समझिये। ब्रिटिश राजनेता एडवर्ड स्टेनली के शब्दों को याद रखिये: जो लोग ऐसा सोचते हैं कि उनके पास शारीरिक व्यायाम करने का समय नहीं है उनके पास आज नहीं तो कल बीमारियों के लिए समय होगा।

लेखिका : एक आब्सट्रिशन और स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं। और फिटनेस और जीवनशैली परामर्शदाता भी हैं। उन्होंने दो किताबें : Get Size wise,

Gain to Lose लिखी हैं।

वेबसाइट - www.drsheelanambiar.com



पुस्तकालय...

स्वतंत्र मन के स्थल

संध्या राव

ज्ञान बंधनमुक्त शक्ति है और पुस्तकालय
ज्ञान के विद्युतगृह है।

मेरे नाना एक डॉक्टर थे और सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद, वह चेन्नई में रोयापेट्टाहाई हाई रोड पर रामकृष्ण मिशन द्वारा चलाए जाने वाले एक क्लीनिक पर स्वेच्छा से अपनी सेवाएं देते थे। मैं चेन्नई में एक बोर्डिंग स्कूल में था, और जब भी मैं अपने नाना-नानी से मिलता था, चाहे सप्ताहांत में या क्रिसमस की छुट्टियों में, उनके साथ क्लीनिक जाता था। जबकि *ताथा* सीधे बरामदे में चले जाते थे जहाँ पर अनेक मरीज व्याकुलता से उनके आने की प्रतीक्षा करते थे, मैं परिसर में स्थित पुस्तकालय की ओर जाता था।

मेरी नन्ही आँखों को, परिसर विशाल और पुस्तकालय गुफा जैसा लगता था। वहाँ पर मेरे पहले दिन, ताथा मेरे साथ गये और उन्होंने मुझे भगवा वस्त्र पहने हुए एक महंत के हवाले कर दिया जो शायद पुस्तकालयाध्यक्ष थे। लेकिन उसके बाद जब भी मैं वहाँ गया, मैं स्वयं ही चला जाता था और जल्द ही मुझे ऐसा लगने लगा की वह जगह - अलमारियाँ, पुस्तकें और पूरा पुस्तकालय - मेरा ही है। वहाँ दूसरे बच्चे नहीं थे, केवल साधू और सामान्य वयस्क थे जो शांतिपूर्वक अलमारियों के मध्य आवाजाही करते थे। लेकिन कोई भी उस बच्चे पर ध्यान नहीं देता था जो

कहीं से भी कोई भी पुस्तक निकाल लेता था, कभी पन्नों को सूँघता और कभी किताबों को पढ़ते हुए एकाएक गिरा देता था।

आप अंदाजा लगा सकते हैं कि उन अलमारियों में किस तरह की किताबें सुशोभित होंगी: अधिकतर दार्शनिक, जो ज्यादातर रामकृष्ण परमहंस, शारदा देवी, स्वामी विवेकानंद और अन्य आदरणीय व्यक्तियों से संबंधित थी, विभिन्न भाषाओं वाले गंभीर लेखों की किताबें, कुछ समझ आ जाती थी, कुछ पर ताजुब होता था। वह एक 11 या 12 वर्षीय बच्चे को पढ़ने के लिए आकर्षित करने वाली किताबें नहीं थी! लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। वह किताबें थी और मैं एक किताबी कीड़ा और मेरी दुनिया में, ये दोनों हमेशा मिलते हैं! फिर भी, जब भी संयोगवश मुझे ऐसी कोई कहानी मिलती थी जिसे मैं समझ सकता था, मुझे हमेशा एक खास रोमांच का अनुभव होता था। और इस तरह से मैं रामकृष्ण, विवेकानंद और अन्य प्रबुद्ध आत्माओं के बारे में पढ़ता था, वे कहानियाँ जिन्हें मैं अब भूल चुका हूँ - लेकिन उस पुस्तकालय को नहीं जहाँ पर वे किताबें रखी हुई थी।

जब हम पश्चिम बंगाल के एक छोटे नगर में बड़े हो रहे थे, मैंने और मेरे दोस्तों ने अपने साहित्यिक और वित्तीय (जो भी थोड़ा बहुत था) स्रोतों को इकट्ठा किया और अपने स्वयं के निजी पुस्तकालय का 'निर्माण' किया। हमें डूई प्रणाली या कोलन प्रणाली के बारे में कुछ नहीं पता था लेकिन हमारे पास किताबों को जमा कर रखने का अपना तरीका था और हम उधार देने के लिए 10 पैसे से 25 पैसे के बीच शुल्क लेते थे। हमारे पुस्तकालय से उधार ली जाने वाली किताबों ने जल्द ही प्रसिद्धि हासिल कर ली थी और हम एक दूसरे से यह देखने के लिए होड़ करते थे कि किसने *फेमस फाइव* या *विंगल्स* या जो कुछ उपलब्ध होता था की सबसे ज्यादा किताबें पढ़ी हैं। हमारा छोटा सा संग्रह उस पुस्तकालय को भरता गया जो हमारे पड़ोस में रहने वाले एक अविवाहित अंकल द्वारा हमें दान में दिए गए एक कमरे में स्थापित किया गया था। संयोग से, उन्होंने उनके पिछले ऑगन में हमारे लिए एक बैडमिंटन कोर्ट भी तैयार किया था। बाद में, वह ना जाने कहा चले गए।

अब, जानकारी की आसान उपलब्धता के कारण, हम जानते हैं कि दुनिया के विभिन्न कोनों में स्थित पुस्तकालयों में इस्तेमाल किये जाने वाला डूई डेसीमल



चेन्नई में प्रतिष्ठित कॉनेमरा पब्लिक लाइब्रेरी।

क्लासिफिकेशन शेल्फ में रखी किसी भी किताब को ढूँढना और, इसके उलट, इसे वापस उसी स्थान पर रखना संभव बनाता है। हो सकता है कि यह विशिष्ट प्रतीत नहीं हो क्योंकि हम इस प्रणाली का सही महत्व नहीं समझते हैं। लेकिन जब आपको यह अहसास होता है कि इस प्रणाली के इस्तेमाल से पूर्व पुस्तकालयों में किताबें विषयों के आधार पर जमाये जाने के बजाय उनकी प्राप्ति के क्रम में जमाई जाती थी और इसके कारण पुस्तकालय अंततः असंगठित हो जाता था, तब आप समझते हैं कि मेलविल डूर्ड द्वारा 1876 में कितना विलक्षण आविष्कार किया गया था।

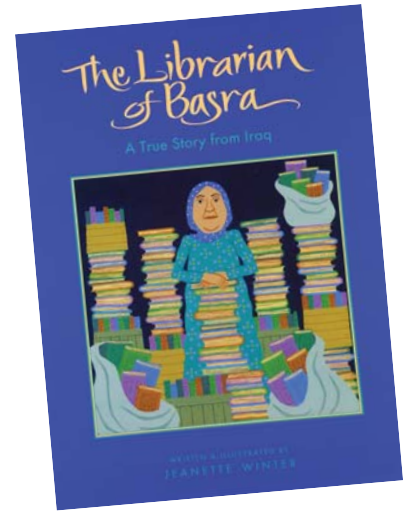
हालाँकि, डूर्ड अकेले पुस्तकालय विज्ञान के भंडारी नहीं थे; एस. आर. रंगनाथन भी थे जिन्होंने कोलन वर्गीकरण प्रणाली का सूत्रपात किया था। इस गणितज्ञ, विश्वविद्यालय के लाइब्रेरियन और पुस्तकालय विज्ञान के प्रोफेसर को मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा 1923 में नियुक्त किया गया था ताकि वह उसकी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के अस्तव्यस्त संग्रह को व्यवस्थित कर सकें। शुरुआत में, वह इस काम से उब गए थे; वह वापस शिक्षण में आने के लिए लालायित थे। तो विश्वविद्यालय ने उन्हें लालच दिया: जाओ जाकर यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में आधुनिक पश्चिमी पुस्तकालय कार्यप्रणालियों को सीखो और तब भी अगर तुम प्रेरित नहीं होते, तो शिक्षण में वापस आ जाना।

रंगनाथन इस प्रलोभन में आ गए और एक बार जब उन्होंने शोध में उनका गणितीय दिमाग लगाना शुरू किया, वह सम्मोहित हो गए। उन्हें डूर्ड प्रणाली में (अन्य चीजों के अलावा) खामियां मिलना शुरू हो

गई और, एक लंबी और दिलचस्प कहानी को संक्षेप में कहे तो, उन्होंने उस प्रणाली को संशोधित किया और पुस्तकों के वर्गीकरण के एक सरल तरीके का आविष्कार किया जिससे पुस्तकों एवं जानकारीयों को पहचानना और उन्हें पुनः प्राप्त करना सरल हो गया। वह एक प्रसन्न मन के साथ भारत लौटे, घर वापसी की लंबी समुद्री यात्रा के दौरान जहाज के पुस्तकालय को ठीक करने में काफी आगे निकल जाने के बाद भी! वह मद्रास विश्वविद्यालय के साथ 20 वर्षों तक रहे और उन्होंने भारत में मुफ्त सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थापना करने के लिए अथक रूप से कार्य किये। रिश्ते निकालने की भारतीयों की प्रवृत्ति को देखते हुए, एस. आर. रंगनाथन को अक्सर भारत में पुस्तकालय विज्ञान का 'पिता' कहा जाता है।

अब भी, भारत में ऐसे बहुत से स्कूल हैं जहाँ पुस्तकालय नहीं हैं। ऐसे पुस्तकालय भी हैं जो किताबों के कवर पर गहरे नीले या हरे या काले रंग का जिल्द चढ़ाते हैं ताकि उपयोगकर्ता को पता ना चले कि किताब का कवर कैसा दिखता है, और ना ही वह पिछले कवर को पढ़ पाता है। मुझे याद है कि चेन्नई की प्रतिष्ठित कोन्नेमारा पब्लिक लाइब्रेरी में कई अलमारियों में ऐसी अप्रतीतिकर सामग्रियां भरी हुईं जिन्हें आप कभी भी देखने के लिए आकर्षित नहीं होंगे। फिर भी यह एक खज़ाना है, जैसा बहुत से किताबी कीड़ों ने इसे पाया है। ऐसा कुछ नहीं है जो आपको यहाँ नहीं मिल सकता; आपको बस धैर्य रखने की आवश्यकता है। 1896 में स्थापित हुए इस पुस्तकालय को भारत में प्रकाशित होने वाली हर एक किताब, अखबार और पत्रिकाओं की एक प्रति मिलती है।

पुस्तकालयों की असली कीमत की व्याख्या जीनेट विंटर द्वारा रचित एक प्रतिष्ठित चित्र पुस्तक *द लाइब्रेरियन ऑफ़ बसरा* द्वारा शानदार ढंग से की गई है। सच्ची कहानी पर आधारित यह पुस्तिका हमें आलिया मोहम्मद बेकर, इराक के बसरा की एक लाइब्रेरियन, की कहानी बताती है जिसने स्थानीय समुदाय की मदद से, युद्ध के दौरान उपद्रवियों के आने से पूर्व ही उसके पुस्तकालय की किताबों को गुप्त रूप से बाहर निकालकर उन्हें नष्ट होने से बचा लिया था। श्रीलंका की जाफना पब्लिक लाइब्रेरी, 97,000 से भी अधिक पुस्तकों और पांडुलिपियों के साथ एशिया के सबसे बड़े पुस्तकालयों में एक, इतना सौभाग्यशाली नहीं था। ज्ञान के विरुद्ध बेशक युद्ध के सबसे हिंसक



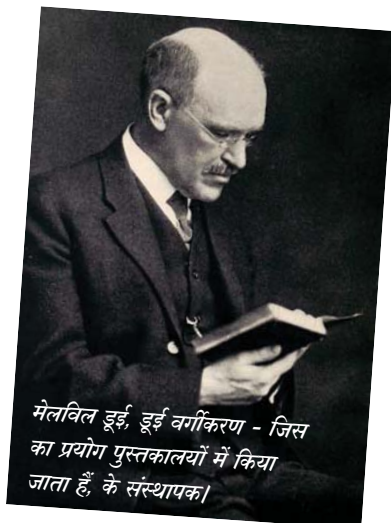
उदाहरण के तहत, इसे 1 जून, 1981 में एक उपद्रवी भीड़ द्वारा जला दिया गया था। तब से लेकर अब तक इसका पुनर्निर्माण किया जा रहा है, परन्तु वे पुरानी पुस्तकें और पन्ने सदा के लिए खो चुके हैं।

पुस्तकालय स्वतंत्र मन के स्थल होते हैं, ये वो स्थान होते हैं जो दिमाग को मुक्त कर देते हैं। पुस्तकालय अनेक सदियों और लोगों के विचारों का घर होते हैं। उनकी ऊर्जा पाठन के बहु स्तरीय अनुभव से उत्पन्न होती है। इसलिए तानाशाह, आक्रमणकारी, और सत्ता के भूखे लोग किताबों और पुस्तकालयों से डरते हैं। और ठीक इसलिए ही हमें किताबों और पुस्तकालयों की आवश्यकता है, हमें उन्हें संरक्षित करना होगा, उन्हें पोषित करना होगा और उनके विकास एवं अस्तित्व को सुनिश्चित करना होगा। ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है उनका इस्तेमाल करना और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करना।

फिर भी, मैं एक चर्चा में शामिल था जिसके दौरान एक शिक्षक, जो और कोई नहीं बल्कि एक स्कूल के उप-प्रधानाचार्य थे, ने कहा कि बच्चों को किताबें नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि वे लापरवाही से उसका प्रयोग करते हैं। सौभाग्यवश एक और व्यक्ति ने यह कहकर जवाब दिया कि एक पुस्तकालय का आंकलन, उसमें मौजूद लापरवाही से उपयोग की गई पुस्तकों की संख्या के आधार पर किया जाना चाहिए। जितनी अधिक किताबें खराब होंगी उतना बेहतर पुस्तकालय होगा। यह सबूत होता है कि बच्चे पढ़ रहे हैं!

स्तंभकार बच्चों की लेखिका

और वरिष्ठ पत्रकार हैं।



मेलविल डूर्ड, डूर्ड वर्गीकरण - जिस का प्रयोग पुस्तकालयों में किया जाता है, के संस्थापक।

Subscribe Now!



for Rotary News Print Version & e- Version

**For the Rotary year
2018 – 2019**

**Annual Subscription
India
Rs.420**

Print version

☐

e- Version

☐

No. of copies

Rotary News (English)

Rotary Samachar (Hindi)

For every new member the pro-rata
is Rs 35 a month.

Please attach the TYPED list of
individual members with their
complete address and PIN Code.
Intimate language preference
(English / Hindi) against each
member's name. Please do not
send the Semi-annual Report for
address list.

**As concerned citizens of the world, those
of you who are alarmed at the degradation
of the environment and slaughter of trees,
kindly opt for our e-Version.**

Rotary Club of RI District

Name of the President/Secretary

Address

.....

.....

City State PIN

STD Code Phone: Off. Res.

Mobile E-mail

Cheque/DD No. Dated for Rs.

Drawn on

in favour of "ROTARY NEWS TRUST" payable at CHENNAI is enclosed.

Date:

President/Secretary

Mail this form to:

Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008.
Tamil Nadu, India. Ph: 044 4214 5666, e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Subscription norms

1. Subscription is for the Rotary year (July to June).
2. **It is mandatory for every Rotarian to subscribe to a Rotary magazine.**
3. The annual subscription for the magazine is Rs 420 per member.
4. Subscription for the full year must be sent in July, in the prescribed form.
5. Those joining after July can pay only for the remaining Rotary year at Rs 35 an issue.
6. Subscription account of the club with *Rotary News* is a running account and does not cease at the end of June every year.
7. Names of all members, with their complete postal address with **PIN CODE** must be typed and sent along with the form and DD/cheques payable at par.
8. Copies of Semi Annual Report **SHOULD NOT** be sent as address list.
9. Language preference (English or Hindi) should be stated alongside member's name.
10. **Members, please ensure that your name is included in the Subscribers' list that your club sends us. Often, names of members who have paid their subscription, are left out from the club list.**
11. Clubs must inform *Rotary News* about reduction in number of members, if any, before or in May. Please help reduce wastage of copies.
12. Clubs are liable to pay for the number of magazines we despatch according to the list available at Rotary News Trust.
13. Unpaid dues of the club will be shown as outstanding against the club. Any payment received subsequently will be adjusted against earlier dues.
14. **Clubs with subscription arrears will be notified to RI and may face possible suspension.**
15. We are in the process of tallying our subscriber list with RI membership from India.
16. If you want to switch to *The Rotarian*, please do so. But inform us **immediately** to avoid receipt of *Rotary News*. Or else your club will have to pay for it.

ओडिशा में शौचालयों को प्रोत्साहन

जी सिंह

अक्षय कुमार और भूमि पेडनेकर अभिनीत बॉलीवुड चलचित्र, *टॉयलेट-एक प्रेम कथा*, खुले में शौच करने के खतरों पर केंद्रित था और इसने लोगों को अपने घरों में शौचालय बनाने और उपयोग करने के लिए संवेदनशील बनाने का भी प्रयास किया।

तट्टक-भड़क भरे शहर के दिखावे से बहुत दूर, ओडिशा के देवगढ़ मंडल में बरकोटे प्रखंड के सुदूर छोटे गाँव में महिलाओं के एक समूह ने अपने घरों के अंदर स्थायी शौचालय बनाने की पहल की। तीन

साल बाद उनके कड़ी मेहनत का फल मिला और आज लगभग सभी घरों में शौचालय हैं। उनकी पहल ने ओडिशा सरकार को राज्य में देवगढ़ को पहला खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) मंडल घोषित करने में भी मदद की है।

आरती बिस्वाल से मिलिए जिन्होंने खुले में शौच करने के विरुद्ध घर-घर जाकर लोगों के बीच जागरूकता उत्पन्न करने के लिए कड़ी मेहनत की। तीन साल पहले बोए गए प्रयास रूपी बीजों के परिणामस्वरूप

अनेक महिलाओं ने उनके इस नेक कार्य का समर्थन किया। हालांकि, वह बताती है कि शुरुआत में यह एक कठिन कार्य था क्योंकि लोगों उनकी बात सुनने तक के लिए तैयार नहीं थे। वह कहती है, 'मैं अभी भी उन दिनों को याद कर सकती हूँ जब मुझे ग्रामीणों के अपशब्दों का सामना करना पड़ा था, जिन्होंने खुले में शौच के नुकसान के बारे में सुनने से इंकार कर दिया। ऐसे माहौल में कुछ महिलाएं उम्मीद की किरण के समान थीं, खासतौर पर नवविवाहिताएं, जो



भजनंदिनी बिश्वास और उनके पति, नए शौचालय के सामने खड़े हैं।



पाँच दशकों तक स्थिति के
जस के तस बने रहने पर गांवों
की महिलाओं ने बुनियादी
आवश्यकता के लिए लड़ने
का फैसला किया और घरों में
शौचालयों के महत्व के बारे
में पुरुषों को विश्वास दिलाने
में सफल रही।

खुले में शौच करने जाने में शर्मिंदगी महसूस करती थी। तब मैंने उन महिलाओं से संपर्क करना शुरू किया जो खुले में शौच करने से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों को सुनने में रूचि लेने लगी।”

एक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के रूप में उन्हें सरकारी अधिकारियों ने बरकोटे के गांवों में खुले में शौच करने के विरुद्ध जागरूकता उत्पन्न करने की जिम्मेदारी सौंपी थी। उनकी पहल को गैर-लाभकारी संगठन जीईईटीए फाउंडेशन के स्वयंसेवकों द्वारा भी समर्थन प्राप्त हुआ।

आरती का कहना है कि अधिक से अधिक महिलाएं शौच करने के लिए बाहर निकलने के खतरों को समझती हैं और वर्ष 2014 में लॉन्च किए गए स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) के तहत सरकार द्वारा दिए जाने वाले ₹12,000 की राशि लेकर सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण करने के लिए परिवार के पुरुष

सदस्यों पर दबाव डालना शुरू कर दिया। शौचालय निर्माण के लिए केंद्र और राज्य के बीच राशि साझा करने का अनुपात 60:40 है।

जल्द ही, महिलाएँ लोक खुले अपमान के खिलाफ अभियान के चैंपियन बन गईं। वर्ष 2014 में, मंडल के 698 गांवों में निवास करने वाले 71,000 परिवारों में से 11 प्रतिशत घरों में शौचालय थे। ढाई सालों में, देवगढ़ नगर निगम (डीएमसी) ने 67,061 शौचालयों का निर्माण किया जिसने ओडिशा के पहले मंडल देवगढ़ को ओडीएफ घोषित करने में मदद किया। राज्य सरकार ने 2 अगस्त, 2017 को औपचारिक रूप से इसकी घोषणा की थी।

बराकोट प्रखंड में एक गृहिणी रीना कुमार साहू (37) कहती हैं कि वह अपने परिवार के साथ दो वर्ष पहले तक खुले में शौच करने के लिए बाहर निकलती थीं, लेकिन शौचालयों के निर्माण ने उनकी जिंदगी को बदल दिया है क्योंकि शौच जाने की इच्छा होने पर वे जब चाहे इसका इस्तेमाल कर सकती हैं। “हम शौच जाने के लिए सुबह जल्दी उठती थी। घूरती आँखों के अलावा, कीड़े-मकोड़ों और सांपों का भी खतरा था जो खेतों में स्वतंत्र रूप से घूमते थे और कभी-कभी हमारे घरों में भी घुसते रहते थे। शौचालयों का निर्माण हमारे लिए बड़ी राहत के समान था क्योंकि हम अब किसी भी समय इसका इस्तेमाल करने में सक्षम थीं,” वह अपने चेहरे पर मुस्कुराहट के साथ कहती हैं।

वरिष्ठ नागरिकों और नवविवाहितों द्वारा शौचालयों के निर्माण का समान रूप से स्वागत किया गया है, जिनका कहना है कि यह कार्य बहुत पहले किया जाना चाहिए था। “मैं सिर्फ 20 वर्ष की थी, जब शादी के बाद मैं यहाँ आई थी। उन दिनों शौचालयों के लिए भी पूछना भी असंभव था। हमें खुले में बाहर जाना पड़ता था, आमतौर पर सुबह के समय में जब पुरुष सदस्य सोते रहते थे। लेकिन एक सांप के काटने या जंगली जानवरों के हमले का खतरा हमेशा हमारे दिमाग में बना रहता था। पाँच दशकों तक स्थिति के जस के तस बने रहने पर गांवों की महिलाओं ने बुनियादी आवश्यकता के लिए लड़ने का फैसला किया और घरों में शौचालयों के महत्व के बारे में पुरुषों को विश्वास दिलाने में सफल रही,” 70 वर्षीय गृहिणी निलोत्मा साहू कहती हैं।

भजनंदिनी विश्वास (22) जिनकी शादी पिछले साल हुई थी, कहती हैं कि उन्होंने यह जानकर गहरा आघात लगा कि गांव में एक भी शौचालय नहीं है, लेकिन अंततः राहत मिली जब उसके ससुराल वालों ने इसे बनाने का निर्णय लिया। “मुझे खुशी है कि मेरे पति और उनके माता-पिता ने मेरी चिंता को समझा और शौचालय बनवाने का निर्णय लिया,” उसने कहा।

वास्तव में, महिलाओं ने अपने गांवों को साफ और स्वास्थ्य जोखिमों से मुक्त बनाने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। राज्य सरकार का लक्ष्य 2019 तक ओडिशा को ओडीएफ बनाना है। ■

घूरती आँखों के अलावा, कीड़े-मकोड़ों और सांपों का भी खतरा था जो खेतों में स्वतंत्र रूप से घूमते थे और कभी-कभी हमारे घरों में भी घुसते रहते थे।



रोटरी क्लब वेदारण्यम - मंडल 2981

के एस ओर्थोपेडीक केंद्र, कराइकल एवं अन्य मेडिकल संगठनों के सहयोग से हड्डियों की बीमारियों की जाँच करने हेतु एक शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 500 से अधिक मरीजों का पता लगाया गया और डॉक्टरों की एक पैनल द्वारा उन्हें निःशुल्क उपचार दिया गया।

रोटरी क्लब करुर - मंडल 3000

रोई निदेशक सी भास्कर द्वारा नेदुनुर के ग्रामीणों को ₹1.50 लाख की लागत वाले एक वाटर फिल्ट्रेशन सिस्टम के साथ ही ₹50,000 की कीमत वाले तीन सौर चलित लैंप प्रदान किये गए, जिसके बाद उनके इलाके में पेय जल की कमी और सड़क पर अपर्याप्त रौशनी से पीड़ित स्थानीय लोगों द्वारा अभिवेदन किया गया। एक अखिल-महिला स्वयं सहायता समूह RO प्रणाली की देख-रेख करेगा।



रोटरी क्लब कुंडली - मंडल 3012

कुंडली के पास अटेरना गाँव के सरकारी स्कूलों में 30 से भी अधिक साइकिलें वितरित की गईं। क्लब ने मनोली के एक सरकारी स्कूल में लिंग-पृथक शौचालय खण्ड का भी उद्घाटन किया, और नांगल के सरकारी कन्या हाई स्कूल में एक सेनेटरी पैड वैंडिंग मशीन स्थापित की गई।

रोटरी क्लब रेवारी मेन - मंडल 3011

शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर एक वाटर फिल्ट्रेशन और कूलिंग इकाई स्थापित की गई। यह सुविधा केंद्र पर रोज़ाना आने वाले 200 मरीजों को लाभान्वित करेगी। परियोजना की लागत ₹40,000 है।



विधियाँ

रोटरी क्लब बीकानेर मिडटाउन - मंडल 3053

ईदगाह बाड़ी के सरकारी हाई स्कूल को चार हरे बोर्ड दिए गए। इस अवसर पर क्लब के अध्यक्ष गुलाब सोनी, सचिव गिरिराज जोशी एवं अन्य सदस्य उपस्थित थे। प्राचार्य मुन्नी देवी ने रोटरी के लिए अपना आभार व्यक्त किया।



रोटरी क्लब पालनपुर सिटी - मंडल 3054

रोटेरियन डॉ प्रकाश शाह द्वारा दिए गए दान की मदद से क्लब ने 250 से भी अधिक जरूरतमंदों को गेहूँ, दाल और चीनी बाँटी। यह क्लब की जारी परियोजना है जिसने समुदाय से ख्याति अर्जित की है।



रोटरी क्लब अम्बरगाँव - मंडल 3060

रेल यात्रियों की प्यास बुझाने के लिए रेलवे स्टेशन के सामने एक प्याऊ स्थापित की गई। उस झोपड़ी में एक वाटर प्यूरीफायर और एक कूलर इकाई है जो इसे स्वच्छ, सुरक्षित और ठंडा पानी प्रदान करने में सक्षम बनाती है। इसका रख-रखाव क्लब द्वारा किया जाएगा।

रोटरी क्लब अमृतसर नॉर्थ - मंडल 3070

सुविधाओं से वंचित महिलाओं की जीविका अर्जित करने में मदद करने के लिए उन्हें सिलाई मशीन दान दी गई। क्लब ने महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कक्षाएं भी आयोजित की।



रोटरी क्लब कर्नाल मिडटाउन - मंडल 3080

निलोखेरी शहर के तपन पुनर्वास सोसाइटी में 10 निःशक्त बच्चों के लिए सामूहिक रूप से श्रवण सहायकों की स्थापना की गई। डीजी टी के रूबी ने इस सोसाइटी में अपने आधिकारिक दौर के दौरान इस नई सुविधा का उद्घाटन किया।



रोटरी क्लब अलाहाबाद नॉर्थ - मंडल 3120

शहर में वात्सल्य सभागार में, रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन, मंडल 3131, के सहयोग से एक LN-4 कृत्रिम हाथ लगाने का शिविर आयोजित किया गया। 300 से अधिक छिन्नांगों को कृत्रिम अंग लगाए गए और इस शिविर ने समुदाय में रोटरी की छवि में वृद्धि की।



रोटरी क्लब पुणे मगरपट्टा सिटी - मंडल 3131

महिला रोटेरियनों और एन्स ने पुरस्कार समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और मस्ती के मिश्रण के साथ महिला दिवस मनाया। शीर्ष सफल महिलाओं - डॉ. माधवी वाजे, एक्सेंचर की सीईओ रूही रंजन, सामाजिक कार्यकर्ता शोभना गावस, शिल्पा वेंकट और संजीवनी बलगुडे - का अभिनन्दन किया गया। इसके बाद नृत्य, संगीत और फेलोशिप के सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।



रोटरी क्लब मुंबई घाटकोपर - मंडल 3141

एक केन्द्रीय उपनगर, कुर्ला के संत घाडगे महाराज स्कूल में ₹4 लाख की लागत से एक सौर छत पैनल स्थापित की गई। यह सौर सुविधा स्कूल को बिजली के बिल का 50 प्रतिशत बचाने में मदद करेगी। क्लब ने स्कूल को खेल और फिटनेस उपकरण भी दान दिए।



रोटरी क्लब निज़ामाबाद - मंडल 3150

गुपनपल्ली गाँव के एक ज़िला परिषद हाई स्कूल को खेल उपकरण दान दिए गए। इससे 140 बच्चे लाभान्वित होंगे। स्कूल में लू लगाने से बचने के लिए एक जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें 90 बच्चों ने हिस्सा लिया।



रोटरी क्लब कोल्लेगल मिडटाउन - मंडल 3181

श्री सालुर कृपा हाई स्कूल, जो ग्रामीण बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देता है, को मेज दान की गई। डीजी सुरेश चैनगप्पा, दमयंती चैनगप्पा, ए जी प्रवीण कुमार और क्लब अध्यक्ष प्रदीप फ़र्नान्डिस समारोह में उपस्थित होने वाले लोगों में शामिल थे।



विधियाँ



रोटरी क्लब पल्लादम रेनबो - मंडल 3202

₹60,000 की लागत से एक चाय-दुकान का निर्माण किया गया और इसे एक निःशक्त महिला को दान किया गया। उपकरणों और किराने के सामान के साथ दुकान का प्रायोजन क्लब अध्यक्ष एस. कविता और एक गैर सरकारी संगठन द्वारा किया गया।



रोटरी क्लब अल्लेप्पी ईस्ट - मंडल 3211

डीजी सुरेश मैथ्यू द्वारा ₹40 लाख की लागत से बने एक रोटरी मेमोग्राम केंद्र का उद्घाटन किया गया। कुट्टनाद, एक ऐसी जगह जहाँ कैंसर के मरीज अधिक संख्या में हैं, के साथ-साथ अल्लेप्पी और उसके आसपास की जगहों की जरूरतमंद महिलाओं के लिए यह केंद्र बहुत मददगार होगा।



रोटरी क्लब कराइकूदी हेरिटेज - मंडल 3212

शहर के अलंगुदियर नगरपालिका प्राथमिक एवं हाई स्कूल में एक सामान्य चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें स्तन-कैंसर की जाँच भी की गई। डॉ. कार्तिकियन द्वारा स्तन कैंसर पर एक जागरूकता वार्ता की गई।



रोटरी क्लब रोउकेला मिडटाउन - मंडल 3261

शहर के उच्च प्राथमिक विद्यालय में एक हाथों की धुलाई के स्टेशन की स्थापना की गई। राष्ट्रीय WinS मान्यता समिति के उपाध्यक्ष, पीडीजी ए बी मोहापात्रा, एवं WinS के अध्यक्ष पीडीजी शशि वार्वडकर द्वारा इस सुविधा का उद्घाटन किया गया।



रोटरी क्लब जोका - मंडल 3291

कोलकाता में कलकत्ता नेत्रहीन स्कूल के 36 दृष्टि-बाधित बच्चों के लिए दो दिवसीय RYLA का आयोजन किया गया। डीजी ब्रोजो गोपाल कुंडू और रामकृष्ण मिशन के स्वामी वेदस्वरूपानंद द्वारा इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। प्रतिभागियों ने खेल और तबले पर अपनी बहुमुखी प्रतिभा प्रदर्शित की। PRID शेखर मेहता विदाई सत्र के मुख्य अतिथि थे।

बी मुत्तुमारण द्वारा संकलित
एल गुनाशेकरण द्वारा रूपांकन

COLOURED STEEL THAT STANDS THE TEST OF TIME.



LATIM

COLOUR COATED STEEL

LATIM's high quality coloured / pre-painted galvanized / galvalume steel coils can be used for various Applications - Roofings, Claddings, Crimping, Warehouse, Cold Storage, Furnitures, False Ceilings, Shutter Doors, Vehicle Bodies, Decorative Container & Trunks, etc.

Ideal for Interior and Exterior Applications.

- Coloured / pre-painted sheet in various profiles available.
- Available in various thickness, sizes and colours.



LA TIM GROUP

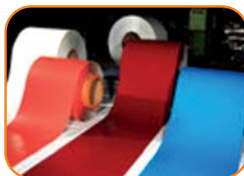
Corporate Office : 401, Navkar Plaza, 4th Floor, Bajaj Road, Vile Parle (West), Mumbai - 400056.

Tel : (022) 26202290, 26203399, 26203434, 26201166

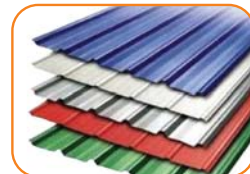
Factory : Industrial Plot No. 270, 271, GIDC, Umbergaon, Valsad. Gujarat - 396171

E-mail : sales@latim sourcing.com ● Web : www.latimprofile.com

Coils



Profiles





बाल कटाने का अर्थशास्त्र

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

इस महीने की शुरुआत में, मुझे पासपोर्ट साइज की नई फोटो खिंचवानी थी। मेरी पत्नी ने कहा मेरे बालों की दशा बहुत खराब है और पहले मैं बाल कटवा लूँ। शादी के 37 साल गुजारने के बाद मैं जानता था कि बहस करना बेकार था और एक सैलून की तलाश में निकल पड़ा। उसे ढूँढ़ने में मुझे एक घंटा लग गया वहाँ ज़्यादा भीड़ नहीं थी - या मैं यूँ कहूँ कि कतार में केवल चार लोग थे, बात एक ही है, 30 मिनट का इंतजार क्योंकि वहाँ सिर्फ दो ही कुर्सियाँ थीं।

फोन पर नज़र डालने के बाद जब मैंने वहाँ बैठे लोगों के सिर के पिछले हिस्से पर नज़र डाली तो मुझे भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्व गवर्नर डॉ डी सुब्बाराव की बात याद आ गई, जो उन्होंने छह साल पहले कही थी, जैसे कि, बाल काटने की कीमत। उन्होंने पूछा, तीस साल पहले की तुलना में आज अधिक रुपये क्यों लगते हैं? लगभग गंजे व्यक्ति भी उतना ही भुगतान क्यों करते हैं, जितना कि सिर पर घने बालों वाले व्यक्ति?

यह पहेली उनकी समझ से परे थी। वहीं दूसरी तरफ, बाल काटने के अर्थशास्त्र ने मुझे हमेशा आकर्षित किया है। डॉ सुब्बाराव ने तो मुद्रास्फीति के संदर्भ में कहा था। लेकिन वहीं बाल काटना, नाई और सैलून उससे भी कहीं अधिक हैं। दरअसल, इसमें अर्थशास्त्र सम्बंधित कई गंभीर प्रश्न छिपे हैं। उदाहरण के लिए, बाल काटने की कीमत कैसे निर्धारित होती है: नाई को इतना काम तो करना ही चाहिए या और कुछ? बाल काटने की कीमत क्यों बढ़ती है, जबकि प्रति सिर औसतन पहले जितने ही बाल कटते हैं और बालों की मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ? इसमें टेक्नोलोजी का क्या योगदान है?

जब बाल काटने की लागत काटने की गुणवत्ता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है तो फिर उनकी जो कीमत है, वह उतनी क्यों है?

जहां 5-सितारा सैलून में, आप साधारण से बाल कटवाने के लिए ₹1,500 का भुगतान करते हैं वहीं पेड़ के नीचे बैठा आदमी आपके शानदार बाल काट सकता है - जिनमें एक-दो से मैंने भी कटवाए हैं - और बहुत बढ़िया महसूस करवा सकता है वो भी सिर्फ ₹15 में। निश्चित ही, कीमत में इस अंतर की वजह हुनर तो नहीं है, बल्कि इसके कारण केवल ऊपरी खर्चे, क्रीम, तैलियाँ और शैंपू से संबंधित हैं। वहीं पेड़ के नीचे बैठा लड़का मुफ्त में सिर की तीन मिनट बढ़िया मालिश भी करता है।

निश्चित ही, कीमत में इस अंतर की वजह हुनर तो नहीं है, बल्कि इसके कारण केवल ऊपरी खर्चे, क्रीम, तैलियाँ और शैंपू से संबंधित हैं। वहीं पेड़ के नीचे बैठा लड़का मुफ्त में सिर की तीन मिनट बढ़िया मालिश भी करता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में मुझे इकोनॉमिक्स के महान प्रोफेसर स्वर्गीय मृणाल दत्ता-चौधरी से पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अन्य चीजों के अलावा, उन्होंने इस्थान का सिद्धांतफपढ़ाया था और तब से हमेशा मुझे ये दिलचस्पी रही है कि व्यवसाय अपना पता खुद कैसे ढूँढ़ निकालते हैं

तो नाइ ये कैसे तय करते हैं कि वे अपनी दुकानों को कहाँ लगाएंगे? कई बाजारों में तो दो-तीन हैं जबकि अन्य बाजारों में एक भी नहीं है। उनके बीच फर्क है तो परिवेश का: ए सी, बगैर ए सी, फैंसी कुर्सी, लकड़ी की कुर्सी, साफ तैलियाँ, गंदे तैलियाँ इत्यादि। लेकिन सभी एक ही दाम वसूल करते हैं। फिर तो बेहतर दुकानों में लंबी लाइन होनी चाहिए लेकिन ऐसा नहीं होता। साफ़ है, ग्राहक नाई के लिए जाते हैं, न कि परिवेश के लिए।

और भी कई रहस्य हैं। उदाहरण के लिए, दंत चिकित्सक या खून जांच प्रयोगशालाओं की तरह नाइयों की दुकानें इतनी ज़्यादा क्यों नहीं हैं? अगर जनसंख्या बढ़ रही है, तो नाई उस अनुपात में क्यों नहीं बढ़ रहे? अगर ऐसा होता तो बाल काटने की कीमत में वृद्धि नहीं होती। क्या वास्तव में नाइयों की कमी है? यदि ऐसा है तो क्यों?

ऐसे कई अन्य प्रश्न हैं जैसे नाई अपने सैलून में कुर्सियों की आदर्श संख्या कैसे निर्धारित करता है? क्या वह केवल सप्ताहांत पर पड़ने वाली भीड़ को ध्यान में रख कर निर्धारित करता है या फिर सप्ताह के बाकी दिनों में सिर्फ सस्ती कटिंग करने के लिए रखता है? सप्ताहांत और सप्ताह के बाकी दिनों में कितने नाइ होने चाहिए? क्या कैंची और कंधी के साथ पारम्परिक तरीके की अपेक्षा मशीन से कटवाना बेहतर है? मशीनीकरण की वजह से प्रति कुर्सी कितना समय बचता है? बाल कटवाने की कीमत सिर की मालिश या शैम्पू की एक चौथाई ही क्यों होती है? बालों की सिर्फ एक ट्रिम की लागत एक कू-कट के बराबर क्यों होती है?

मैं आगे भी जारी रख सकता हूँ लेकिन स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए: बाल कटवाने वाला यह सिर व्याकुल है। ■



Rotary
 District 3012



Subhash Jain
 District Governor 2018-19

With Best Compliments



Assistant Governor Training Seminar

3rd - 4th March 2018, ITC Mugal, Agra



Rtn. Arun Jain - AKS Declarant
 Honored by Gold Pin at PETS-2018

President Elect & Secretary Elect Training Seminar

6th - 8th April 2018, Hayatt Regency, Manesar, Gurugram



District Training Assembly & DTTS

20th May 2018, Radisson Blu, Kaushambi, Gzb.



Grant Management Seminar

10th June 2018, Radisson Blu, Kaushambi, Gzb

